

55836



ACC. No-55836 (a.b)

महाभारत का  
हिन्दी अनुवाद



सकुं तत्क काठ खाय जा और यमलौ  
 क कुं चला जा यगा श्री जी ऋषि के यह वच  
 न सुनकर ॥१५॥१६॥ पायी क ऋषि वो  
 हे पुत्र तैने यह काम हमारी इच्छा के प्र  
 नसार नहीं किया तपस्वियों का यह ध  
 र्म नहीं है हम उस के देस में वसते हैं ॥२॥  
 और वह हमारी रक्षा करता है हमारी  
 और से राजा प रह मेरा दामा हो नीचा  
 हि मे धर्म से रक्षा न करे तो हम लोग सु  
 ख पूर्वक कोई धर्म नहीं कर सते और  
 और धर्मी तमारा जी कोई रक्षा में रह कर  
 बड़े बड़े धर्म करते हैं और उस ध  
 र्म में से कुछ भाग राजा को भी मिल  
 ता है इस कारण से राजा तो सदैव द  
 मा योग्य है ॥३१॥३४॥ और यह पती  
 दत्त तौ विषोष कर के दामा के योग्य  
 इस कारण से है कि वह प्रपन्न दया की  
 तरह प्रजा का पालन और धर्म की र



॥ २०६ ॥ प्रादि पर्व ॥

यह प्रथम मान केवल भूख व्यास  
हेतुः स्वी होकर यह काम किया मेरा  
मौन ब्रत कूं नहीं जानता था ॥ २६ ॥ हे  
पुत्र जिस देवामें राजा नहीं होता व  
हां चौरी प्रादी बड़े बड़े दोष निरन्तर  
हवा करते हैं राजा ही केवल दराउ दे  
कर इन उपाधियों को दूर करता है ज  
बराजा के दराउ देने से स्वस्थता हो जा  
ती है तब सब लोग निर्विघ्न धर्म क  
रते हैं इससे धर्म का होना राजा ही  
के होने से होता है प्रौढ धर्म से स्वर्ग  
वास मिलता है धर्मात्मा राजा होने  
से ये सब होते हैं य सो मे देवता प्रस  
न्न होते हैं ॥ ३१ ॥ २६ ॥ देवता प्रों के  
प्रसन्न होने से वर्षा होती है वर्षा के  
होने से प्रज्वादि उत्पन्न होते हैं प्रौ  
ढ प्रज्वादिके होने से सब जीवों का पा  
लन होता है मनु जीनें कहा है कि जो  
राजा मनुष्यों का पालन करे



॥२१०॥ प्राद्विपर्व ॥

प्रौरधर्म से राज करै वह दृष्टा वेद वा  
ठियों के बराबर है तेने यह बुरा कि  
या जो से राजा को पाप दिये ॥३०॥

३३॥ इति श्री भाषा महा भार्ते प्रादि  
पर्वणी एक चत्वारिंशत्तितमोऽध्या

यः ॥ ४९ ॥ वयाली सवां प्रध्याय ॥

पासीक ऋषिका प्रयने पिष्य को  
राजापरी दत्त के पास भेज कर  
जी ऋषिके पाप का हाल कहवाता

प्रौर राजा का पोकर के उस काय  
त कर नां ॥ सूत जी बोले हे ऋषि

योऽंजी ऋषि प्रयने पिता की उ  
क्त बाणी ते सुन कर बोले महाराज मु  
जसे जो यह कर्म साहस काय बुरा

प्राप का प्रिय प्रथवा प्रप्रिय वन  
पडा है वह प्रबहु ठन ही हो सता  
कों की मै हंसी में भी कभी हू ठन



॥२१९॥ प्रादिपर्व ॥

हीं बोलता हूँ यह तो पाप था ॥१॥ २॥  
यह सुनकर पाप्मी क रूँधि, बोले  
कि मैं जानता हूँ कि तू सत्यवादी, प्रौ  
र उग्र भाव वाला है तेरा कहा ऊँठ  
न हो जा ॥३॥ परन्तु पिता को जो पु  
त्र नवान भी हो गया हो तो भी सम  
जाना उचित है इस से मैंने तेरे वा  
ले क पन, प्रौ र तेरे साथ सको दे स्वक  
र तुझ को समझाया है ॥४॥ ५॥ प्र  
वत्स सम रूप हो कर वन में रह, प्रौ  
र वन फल खा कर, प्रयत्न को ध को  
मार को ध कर ने से तप, प्रौ धर्म दी  
ए होता है, प्रौ र पर जाती ना सहो  
जाती है, प्रौ र दमा रूप रहने  
वाले को दोनों लोकों में कल्याण  
होता है जो मनुष्य जितेन्द्रि हो कर  
दमा पूर्व कर रहे हैं, उन को ब्रह्मा



॥ ३१२ ॥ प्रादि पर्व ॥

जी के पास के लोकों में मिलत है ॥ १ ॥

१० ॥ इसके पीछे श्रीमत् मुनि ने प्र

पने सौम्य सुभाव वाले गौर मुखना

म पिष्य को बुलाकर कहा कि तू ज

न्दी से राजा परीक्षित के पास जा क

र यह सब ब्रतान्त सुनाकर कहिये कि

मुनि ने तो पात किया था परन्तु उनके

क्रोधी पुत्र ने बालस्वभाव से तुमको

प्राप दिया है सो प्रबजो कुछ तुम

योग्य समजो सो करो ॥ ११ ॥ १४ ॥ वह

पिष्य मुनि की प्रासा पाकर वहां से त

त्त राजा परीक्षित के राजमन्दिर में

पहुँचा और द्वारपाल को से प्रपतीव

वर कराई ॥ १५ ॥ राजा ने सुनते ही उ

से भीतर बुला लिया और उस यथावि

धि पूजन कर के जब प्राते का हेतु

कृष्ण नववह पिष्य सब मंत्रियों के

सामने बोला के महाराज प्राप के



॥२९३॥ ७ प्रादि पर्व ॥

देरा में एक जिते न्द्री था त ७ प्रौरव  
डे तपस्वी का मी क नाम कृषि रहते हैं

॥१६॥१७॥ जिनके कंधे पर प्राप मरा

हुवा स र्व रव ७ प्राये थे उन्होंने यह  
कहने कुं ७ प्राप के पास भेजा है कि हम

ने तेरे ७ प्रपराध को क्षमा किया था पर  
न्तु हमारे पुत्र ने क्षमा नहीं करी ॥१८॥

॥१९॥ ७ प्राप को उसने यप्राप दिया है  
कि राजा को सात वीं रात को तक्षक

सरप का है जा ७ प्रौर राजा मर जाय जा

॥२०॥ सो ७ प्राप को मरण निश्चय  
हो जा ७ प्राप रक्षा का यत्न की जिये

॥२१॥ ७ प्रौर मुनी स्वर ने ७ प्राप के पास  
समुज कुं इसी वास्ते भेजा है कि य

ह्मराय झूठा नहीं होगा तम कुच उ  
पाय करे ॥२२॥ राजा इस बात को

सुन कर ७ प्रौर उस मौन धारि मु



॥ २१४ ॥ > प्रादिपर्व ॥

निकी कथा, प्रौर, प्रपने, प्रपराध  
को जानकर, प्रत्यन्त दुःखी हुवा, प्रो  
र, प्रपने मरने का इतना पोंच नहीं  
किया जितना उस, प्रपराध के कर  
ने का पोंच किया ॥ २३ ॥ २६ ॥ इस  
के पीछे राजा ने और मरव को विद्या  
किया, प्रो इमुनीस्वर से कहला भे  
जा के प्राप इसी प्रकार कृपा किया क  
रें ॥ २१ ॥ इस के पीछे राजा ने संविषों  
को बुला कर कहा सलाह करी, प्रो  
र सलाह कर के एक मंदिर करवं भ  
रें सब नवाया कि, प्रौर जीव की  
तो कृपा सा मर्थ है, प्रपर वायु भी  
वहां नहीं जा सकती थी र उस में स्थि  
त हुवा, प्रौर चारों, प्रो उस रस्ता के  
लिये बड़े बड़े रस्त कर रस्ता के करने  
वाले खड़े कर दिये, प्रौर बड़े बड़े व  
ड़े बैद्य, प्रौर नाना प्रकार की वि



॥२८५॥ २ प्रादि पर्व ॥

खदूर करनेवाला, प्रौषधी, प्रौर  
बड़े बड़े मंत्र सिद्ध ब्राह्मणों को रक्षा  
के लिये इकट्ठा किया राजा जो कुछ  
जकाज हो तो वही वैठा हुक्म करता

॥२८॥ ३२॥ जब सत वादिन प्राधा  
तव को प्रयय ऋषि इस हाल को सुन  
यह विचार करते हुये चले कि प्राज  
राजा को तत्काल के विषसे प्रच्छाक  
रके धन प्रादि जो कुछ मुझे इच्छा  
होगी सो लूंगा ॥३३॥ ३५॥ राह में त  
तत्काल ने ब्रह्म ब्राह्मण को स्वस्व धा  
रण कर के उनसे पूछा कि प्रापरे  
सी जल्दी जल्दी कहां को जाते हैं ॥३६॥  
३७॥ कपयय जी वो लै कि प्राज सर्व  
का राजा तत्काल परिदात को काठेगा  
प्रौर मैं उसको उसके विषसे प्र  
च्छाक संगा यह सुन कर तत्काल  
लोकि तत्काल मैं ही हूँ तू प्रयने लो



॥ २१६ ॥ प्रादियर्ब ॥

घरको लौट जा मेरे ठेकी चिकित्सा नहीं  
है ॥ ३८ ॥ ४० ॥ यह सुनकर कपय जी बो  
ले कि मेरे विद्या बल को देखियो तेरे  
काठे को ही तत्काल प्रच्छेद करुंगा ४१  
इति श्री भासा महाभारते प्रादियर्ब  
एतद् द्विचत्वारिंशो वित्तमोऽध्यायः ॥ ४२ ॥  
ते तालीसवोऽध्यायः ॥ तत्तत्कसर्पका  
रा जायरी दित को काठना ॥ सूत जी  
बोले हे कृषियो कपय जी की बात  
सुनकर तत्तत्क बोला कि रे साहीरा  
कमी तेरा मंत्र है ॥ और तू मेरे काठे हूये  
की चिकित्सा कर सका है तो ले मैं इस  
बड़ के पेड़ को काठता हूँ तू प्रपन्न मं  
त्र का बल दिखा ॥ १ ॥ २ ॥ कपय प  
जी ने कहा प्रच्छेद फिर तत्तत्क ने उ  
स बड़ के पेड़ को काठा ॥ और वह ब्रह्म  
विषकी ॥ प्राणी से जल ने लगा जेव  
जल कर राख हो गया तब तत्तत्क बो  
ला कि लो कै लो ॥ अब इस ब्रह्म को जि  
वा ॥ ३ ॥ ४ ॥ यह सुनकर कपय



॥२९१॥ प्रादि पर्व

पजीने उस जले हयें ब्रह्म की रा  
ख कोइ कहु किया, प्रेर फेर, प्रप  
नी विद्या से जिला दिया पहले उस  
राख में, प्रंकुर उत्पन्न हयें फिर  
दोप तो को ब्रह्म, प्रा उपरान्त क  
मे प्रसें जैसा ब्रह्म था वै साही हो जा  
या तत्काल का प्रपजी का यह काम  
देख कर बोला कि, प्राय सामर्थ्य वा  
न है यह काम, प्राय का कुघ्र, प्रदु  
त नहीं है, प्राय मेरे, प्रथवा दुसरे स  
र्व के बिना, प्रको निश्चय, प्रच्छा  
कर सकते हैं परन्तु उस राखी जा की  
प्राय ही है इस कारण से जो, प्रा  
पकी विद्या ने वहां काम न दिया तो  
प्राय का सूर्य सूर्यी यथा राहु जसि  
त के समान, प्रस्त हो जाय, जा इस  
से प्राय को जो कष्ट राखे मां जानों



॥ २१८ ॥ प्रादि पर्व ॥

हो वह मुकु से ही ले कर लौट जाइये  
मैं प्राप को दुर्लभ पदार्थ भी दूंगा ॥  
१ ॥ १५ ॥ यह सुन कर कपय जी वो  
ले कि मैं धन के लिये वहां जाता था  
जो तुम मुकु को दो तो मैं लौट जाऊं  
तत्काल बोला कि जितना तुम धन  
चाहते हो उससे अधिक मैं दूंगा १९  
सुत जी वो ले हे ऋषियो कपय जी  
ध्यान से राजा पर दित को दीला  
पुष्प जान कर तत्काल से धन लेक  
र लौट जाये ॥ १८ ॥ २० ॥ और दत्तक  
वहां से हस्तिनापुर को गया और  
राजा को बड़े बड़े मंत्र और विषहर  
ने वाली प्रौषधि से दत्त सुनक  
र उपाय यो चने लगा थोड़ी देर में  
उपाय यो चकर उसने नागों को  
बुला कर कहा कि तुम लोग तयस्वि



॥२१८॥ प्रादिपर्व ॥

योंका स्त्वधारके राजा को प्राप्ति  
वाँट देकर जल कुपा और फल दो  
नाओं ने वसाही किया ॥२१॥ २५॥  
और राजा ने उदरु वर कर के वह ज  
ल कुपा और फल ले कर प्रयत्न पा  
सर खलिये ॥२६॥ और उन तप  
स्वी स्त्वपनाओं को धन देकर विदा  
किया उपरान्त राजा ने प्रयत्न भा  
ई बन्धु और मन्त्रि नि यों को व  
ला कर कहा दे खो ये त ~~प~~ य  
स्त्रियों के लाये हुये फल के से सुन्द  
र हैं प्राय लोग इनको भोजन क  
रें हम भी एक दो खायेंगे यह सुन क  
र सब लोग उन फलों के खाने को  
बैठे ॥२७॥ २८॥ देव योग और मुनि  
के पास से राजा ने वही फल लिया जि  
समें बैठ कर तत्त्व क प्राप्ता था ॥३०॥



॥३२॥ प्रादिपर्व ॥

जब उस फल को तोड़ा तब उसमें से  
एक लाल रंग का कीड़ा जिसकी प्रां  
रेंगें काली काली थीं सो निकला उस  
को हाथ में लेकर परिदंत बोला कि  
प्रवसूर्य प्रसन्न होने का समय है प्र  
वविषका तो भय हम को है ही नहीं  
यही कीड़ा हम को काठ कर मुनि के  
वचन को सत्य करे ॥३१॥ ३३॥ मंत्रि  
यों ने भी काल से प्रेरित होकर प्रप  
नाय ही सम्मत दिया उपरान्त राजा  
ने भी उस कीड़े को प्रपनी गरदन पर  
रिब कर उस को देख कर हंसने ल  
गा उसी समय तत्काल ने भी प्रपना  
स्विरूप धार कर राजा को लपेट लिया  
प्रौर बड़ा शब्द करके काठ खाया ॥  
३४॥ ३६॥ इति श्री भाषा प्रहं भा  
रते प्रादिपर्वणि त्रिचत्वारिंशत्प  
तमोऽध्यायः ॥४३॥ चत्वारिंशत्प



॥३२६॥ > प्रादिपर्व ॥

> प्रध्याय ॥ राजा परिक्षित के मरने  
पर उसका कर्म होना > और उसके  
पुत्र जन्मे जय के राज्याभिषेक हो  
ने की कथा ॥ सृत जी बोले हैं >  
धियो राजा के सब मंत्री उस विष  
से उठी > प्रणि > और उस तत्काल  
दको सुन कर भयभीत हो कर भागे  
> और प्रत्यंत दुःखी हो कर भग्न हो  
ने लगे > और वह तत्काल जिसके का  
हने से राजा से गिर पड़ा जै से को  
ई बिजुली गिरने से गिर पड़े राजा  
को काठ कर चमकता हुआ > प्राका  
शमान हो कर चला उस को जा  
ते हुये सब मंत्रियों ने ~~सिख~~ दे  
खा ॥६॥ > इसके उपरान्त सब  
ब्राह्मण राजपुरोहित > और मंत्रि  
यों ने मिल कर उस राजा का य



॥२२२॥ > प्राद्विपर्व ॥

रसम्बन्धी कर्म किया ॥५॥ > प्रौ  
र > प्रच्छा पृथु भ महर्त्त देव कर  
स के पुत्र का राज तिलु किया > प्रौर  
उस को नाम जन्मे जय र करवा ॥६॥  
वह राजा पद्य पिबालू था परन्तु > प्र  
पने प्रपिता मह राजा पुं धि स्थिर के  
समान राज्य प्राप्त कर ने ल जा  
मंत्रियों ने उसके तेज को देव कर  
काशी के सुवर्ण वरमा नाम राजा  
से उसकी वपुष् मांताम कन्या ज  
न्मे जय से विवाह करने को मां गी ॥  
८॥ > प्रौर सुवर्ण वर्मा ने भी धर्म  
परीक्षा कर के उस कन्या का विवा  
ह जन्मे जय से कर दिया जन्मे जय  
ने उस को पा कर फिर दूसरी स्त्री की  
तरफ दृष्टि न की ॥९॥ > प्रौर उसके  
साथ इस प्रकार से विहार किया जय  
से पहिले राजा पुष्टवाने उर्वशी के



॥२२३॥ ७ प्रादि पर्व ॥

पाथ किया था ॥२०॥ ७ प्रौर वह पति  
ब्रतावपुष्ट माभी राजा जन्म जय को  
पाकर बिहार के समय प्रीति से रमण  
करने लगती ॥२१॥ इति श्री भाषा महा  
भार्ते ७ प्रादि पर्वणि चतुर्चत्वारिंशति  
तमोऽध्यायः ॥६४॥ यैताली सवा ७  
ध्याय ॥ जरा कारको पथी पर भ्रम  
एकरनां ७ प्रौर एक जहले में नीचे  
को मुह कि घेहुये ७ प्रपने पितरों को  
लटकते हुये देखना ॥ स्मृतजी को  
लेहे ऋषियो इसी ७ प्रवसर में जरा  
कार ऋषि भी उग्रतय करने लग  
फकतय बा पुरवाते थे दिन रात प्र  
थी पर तीर्थ दिकों में घूमा करते थे  
नेहा जव सांज हो जा ~~जब~~ तीर्थ  
ईदिक जाते थे ७ प्रौर ७ प्रैसे ७ प्रैसे  
७ प्राचरणा करते जो ७ प्रमुह ७ प्रन्तः



॥३३४॥ ३ प्रादिपर्व ॥

कर्णो बाले मनुष्य कभी नहीं कर स  
के हैं और निराहार रह कर जरत  
र ने प्रपती देही को बिल्कुल सुखा  
दिया था एक समय वह जरत को रू  
मते हुये एक स्थान में पहुँचे वहाँ देव  
ते का है कि कृष्ण मनुष्य एक गड  
हेला में नीचे को मार करिये एक ब  
सके स्वप्न के प्रासरे लटक रहा था  
॥५॥ ३॥ उनको देख कर उनकी ही  
नता पर दया कर के जरत को उनके पा  
स गया और कहा कि आप लोग को  
नहीं जो इस बटे में इस प्रकार से मर  
के हुये हैं इस स्वप्न के स्वप्न में प्र  
व केवल एक जो बाकी रही है उसे  
भी मूँसा प्रपती विल में सँलिकड़  
लिकड़ कर काटे डालते हैं ॥६॥ १॥  
उसके कट जाने पर प्राय लोग सब  
नीचे गिर पड़ेगे ॥७॥ प्राय प्राय



॥३२५॥ प्रादिमर्व ॥

नी प्रापत्तिकाल कहि ये जे मेरी त  
पस्या के चौथाई तीसरे प्रथवा प्रा  
धे हिर से सेया पूर्ण तपस्या से प्रा  
पको दुःख दूर हो सकें तो मैं देने को त  
यार हूँ ॥८॥११॥ यह सुनकर वे लोग  
बोले के प्रापक हनरी हैं प्रौर हमारी  
प्रापत्ति पर तर सुखा कर हमारी स्तुति  
करना चाहते हैं परंतु तप के फल  
से कुपन ही हो सता ॥१२॥ हमारे  
पास भी तप का फल है परंतु हमारी  
हमारी तो यह गति संतान नष्ट हो  
ने से हुई है ॥१३॥ हम लोग पाप वरक  
विह्वल हमारे प्रब संसार में केवल रा  
क प्रकर गड़बड़ा है ना व म उस का  
नरकीर है वह बड़ा तप स्वी प्रौर वे  
दों का जानने वाला है परंतु उसके  
स्त्री नही प्रौर न कोई पुत्र या भाई



॥३२६॥ प्रादिपर्व ॥

है यह जो स्वसके खंभ भे में जिसके  
प्राप्ति यह मलट के हुये है एक जगह  
ई है वह केवल हमार कुल में वही एक  
पुत्र रहा है और उसको भी चूहा रूपी  
महा काल दिन रात्र भक्षण करता  
चाला जाता है इससे हे महाराज प्राप  
ने जो हम पर दया की है तो जपा कर  
के प्रणाम प्राप को जरतकार मिले तो  
उससे हमारा सब दीन बर्तान कह  
कर उसे रोसा उय दे पा की जिये जा  
जिसमें वह प्रयत्न विवाह है और रो  
सान करने से वह भी कुछ काल में म  
रकर नरक में पहुँचे जा विना संतान  
के तरना दुर्लभ है और प्राप ने हम  
पर रोसी दया करी जय से कोई प्रय  
नों भाई बंधु करत हमारा दुःख पू  
छा इस प्रकार से हम भी जान बूझ  
जाते हैं



॥ २२१ ॥ प्रादिपर्व ॥

तैहें की प्राप कौन है ॥ १६ ॥ रे ३ ॥

॥ इति श्री भाषा महाभा तें प्रादिपर्व  
लि नाम पंच चत्वारिंशोऽध्यायः ॥

६५ ॥ घालीसकां प्रध्यायः ॥ जर

त्कार का पितरों के कहने से विवा  
ह का स्वीकार नां हां करना ॥ सुन

जी बोले है ऋषियो उन लो जों  
की यह बात सुन कर जरत्कार वा

ले के महाराज प्राप का पापी और दंड  
उ देने कैयो ज्य पुत्र मैं ही हूं मेरा ही

नाम जरत्कार है प्राप लौं निश्रय  
मेरे पित्र हैं मेरी च्छा पर लोक के

मिलने की तो थी और विवाह का  
ने की नहीं परन्तु प्रव प्राप के इस दुः

ख कूं देख कर मैं ते सी स्त्री से विवा  
ह करूं जा जिस का नाम मेरा

॥२२८॥ प्रादिपर्व॥

सा होय प्रौर उसका भरण पोषण  
मुजे न कर तां पड़े तेसी स्त्री को पाक  
र मैं प्रवस्य प्रपने ब्रह्म चर्य को छो  
डूँगा प्रौर प्रापकी इच्छा पूरी कर  
ने के लिये उस स्त्री से पुत्र उत्पन्न  
करूँगा ॥१॥१०॥ तेसा कह कर जर  
कार वहां से चल दिये प्रौर भ्रम  
ण कर ने लगे परन्तु कोई कन्या नहीं  
पाई तब दुःखी हो कर वन में चले  
गये प्रौर धार रे धी रे कहा के मैं प्र  
पने पितरों का दुःख दूर करने को प्र  
पनां विवाह पितरों के कहने से कर  
नां चाहता हूँ मुज्जद रिश्वी को कोई  
प्रपनी प्रपनी कन्या जिसका भ  
रण पोषण मुजे न कर तां पड़े प्रौर  
जिसका नाम मैं रासा होय उस



॥१२०॥ ॥ ७ प्राद्विषर्व ॥ मे  
 कूं मैं मांजा हं मुऊ कूं मि दा दो ॥  
 ॥११॥ ॥१२॥ ॥ स्तुतपुत्र बोले हे क  
 धियो जरा कार के रोसा क हने मैं  
 वासुकि नाग के भेजे हुये सर्व  
 वासुकि के पास ७ प्राये ७ और कहने  
 लगे कि महा राज जरा कार विवाह  
 के लिये ७ प्रव क ल्या हूं हते फिरते  
 हैं ॥१३॥ यह सुन कर वासुकी ७ प्र  
 पनी बहन को बस्त्रा दिक पर रा  
 कर जरा कार के पास ले जाया ७ प्रौ  
 र कहा की इस क ल्या को ७ प्रा प नी  
 जि ये जरा कार ने उस को नहीं लि  
 या ७ प्रौ र कहा कि मैं रो सी स्त्री चा  
 हता हूं जि ~~स~~ स का नाम मे  
 र्से होय ७ प्रौ र मुने उस के खाने  
 पहने का ~~ग~~ पाया न कर ना पड़े

॥ २५० ॥ प्रादि पर्व ॥

॥ २० ॥ २३ ॥ इति श्री कृष्ण भाषा महा  
भार्ते प्रादि पर्वणि षट्चत्वारिं  
शोऽध्यायः ॥ ४६ ॥ सैतालीसवा  
प्रध्याय ॥ वासुकि कीवहन का ज  
रत्कार से विवाह होना उसका ज  
र्भधारण करना प्रौर जरत्कार  
को तपस्या कूं चला जाना ॥ सूत ।  
जीवो लेहे के विधौ जरत्कार की  
यह बात सुनकर वासुकि नाज वो  
ला कि मैं प्रपत्नी वहन का पालन  
पोषण करूंगा प्राय इस बात को  
चिन्ता न करे जरत्कार बोला प्र  
च्छा यह तेरी वहन हमारी कोई कि  
सी तरह की प्रवृत्ता करै जीतो फिर  
मैं इस कूं छोड़ दूंगा वासुकि ने क  
हा वहन प्रच्छा प्राय इसके साथ  
विवाह किजिये यह सुनकर जरत्का



॥२३१॥ प्रादि पर्व ॥

रवासुकि के साथ उस के घाया ॥  
१॥४॥ प्रौर बेद विधी से उसका  
पाणी जहण किया ॥५॥ प्रौर वासु  
कि ने उन को रहने के लिये एक ब  
हुत सुन्दर रमणी क घर जिस में स  
ब सम्यत्ति प्रौर विहार की चीजें  
बसी थी प्रौर एक बहोत सुन्दर मन  
को लुभाने वाली सेन विद्य रही थी  
तैसा स्थान बताया जो रत्कार प्र  
यनी स्त्री कर के साथ उस स्थान में  
गये ॥६॥७॥ प्रौर प्रयनी स्त्री से क  
हा कि मेरी इच्छा से बिपरीत नां उल  
टिवाते न करना जो रोसा कहे जी तो  
में तुज कूं छोड़क चला जाऊंगा ॥  
८॥९॥ यह सुन कर वासु सुक  
कि की वह न बोली केवल हुत प्र  
च्छा में सदैव प्राय की इच्छा के





॥२३३॥ प्रादि पर्व ॥

को समर्थ जान कर वह भयभीत हो क  
र विचार नें ली ॥ २४ ॥ कि जो मुनि  
को जगाती है तो मुनी प्रवर मुजवर को  
ध करै जों, और जो नहीं जगाती है तो  
तो संध्या छूट जाने से धर्म का लोप हो  
जा ॥ और इस प्रकार से कुछ देर संक  
ल्प विकल्प कर के, प्रंत को धर्म का  
लोप हो ॥ ना बड़ा दोष समझ कर, प्र  
त्यक्ष मधुर बोली से, प्रपन प्राण पती  
ति को जगाने लगी है महाराज, प्रब  
सायं काल हो गया है सूर्य, प्रस होने  
वाले हैं उठ कर के जरतार को धाय  
त हो कर उठे ॥ और, प्रपनी स्त्री से बो  
ले कि तैं नैं मेरा बड़ा प्रपमान कि  
या ॥ २२ ॥ २४ ॥ स्त्री बोली महाराज  
मैं नैं प्रायका, प्रपमान नहीं किया है  
॥ प्राय को धर्म का लोप समझ कर, प्रा  
य को जगा है जरतार को ले कि सूर्य  
मैसी, प्रजली लिये बिना, प्रस न

॥ २३४ ॥ प्रादि पर्व ॥

हिं हो सक्ते हैं जहां हमारे रोसे मनुष्यो  
का प्रपमान होता है वहां हम नहीं रह  
ते हैं हमारा कहना झूठ नहीं है प्रबह  
म मुझे छोड़ते हैं तु प्रयत्न भाई के  
घर में रह प्रौर कुछ पोंच मत कर ॥

२५ ॥ ३२ ॥ यह कह कर जर त्कर चले  
ने लगे उनकी स्त्री यह देख कर रो  
ने लगी कंठ सूक गया प्रौर फेर  
गद गद वांणी कर के विनय पूर्वक  
बोली महा राज प्रप को मुझे छोड़  
ना उचित नहीं है मैं निरपराध प्रो  
र धर्म रत हूं प्रौर जिस लिये वासु  
कि ने मुझे प्रप को दिया है वह भी  
व नहीं हवा प्रब वासु कि मुझ से क्या  
क है जा उसने मुझे प्रप को  
प्रप से एक पुत्र उत्पन्न होने के  
लिये दिया था जो महा राज प्रप से मे  
रे एक पुत्र हो जा ता तौ मेरे कुल को



॥३३५॥ प्रादि पर्व॥

लोग सुख पूर्व करहते गर्भ न हो  
ने से के कारण व से वे लोग प्रव  
प्रत्यन्त ही दुःखी हों ~~ये~~ जो सोहे  
महाराज मुक्त निरपराध को छोड़  
ना प्राप को उचित न ही है

६०॥ यह सुनकर जर कोर बोले कि  
तु इस बात की चिन्ता मत कर तेरे  
एक पुत्र बड़ा तपस्वी सुन्दर प्रौर सु  
र्य के समान ते जर खने वाला उत्प  
न्न हो जा मेरा कहा झूठ नहीं होता  
रोसा कहकर जर कोर वहां से तप  
स्या करने को चले जाये ॥६१॥ ६३॥  
इति श्री भाषा महा भार्ते प्रादि प  
र्वणि सप्त चत्वारिंशोऽध्यायः ॥६४॥  
प्रडताली सर्वाः प्रध्यायः ॥ प्राप्ती  
स्तीक के उत्पन्न हो नैं कि कथा ॥  
सुत पुत्र बोले हे कृषि यो जरा का

॥२३६॥ > प्रादि पर्व ॥

के चले जाते पर (उन की स्त्री) प्रापने  
भाई वासुकि के पास जाई > प्रौर वासु  
कि से सब हाथ ल रो रो कर कहा ॥२॥  
वह सुन कर बड़ा दुःखी हुआ > प्रौर वो  
ला कि तू जानती है के किस लिये तू  
ऊँ मैंने जरतार को दिया था जो उस महा  
त्मा से तैरे एक पुत्र पैदा हो जाय तो वह  
हम सब की सर्वे धन में रक्षा करे ॥३॥  
५॥ यद्यपि यह बात तूज से पूछनी  
> प्रयोज्य है परन्तु बड़ा काम होने से मु  
ऊँ यह बात तूज से पूछनी पड़ी कि तु  
ऊँ उस महात्मा से गर्भ भी है या न ही  
मैं तैरे पति के पीछे पीछे उसे लाने को  
नहीं जा सकता हूँ क्योंकि उनका स्वभा  
व उग्र है रोसा न हो कि मुझ से > प्रप्रस  
न्न होकर मुझे पाप दे दे ॥५॥ १॥ > प्र  
वज्र कुक्ष (उन्होंने) तूज से चलते समय  
कहा है वह कह कर मेरे संदेह को



॥२३१॥ प्रादि पर्व॥

दूर कर ॥ ८॥ यह सुन कर वासुकि  
बहन बोली कि मैंने भपुत्र के वा  
से उन से ती चली वरत पूछा था  
तो वह (प्रसि) कह के चले जाये  
न का उन का कहा हूँ सहन मैं  
भी ऊँठ नहीं हो सक्ता है पूछी हुई वा  
त वह ऊँठ को कर कहें जो इस से तुम  
प्रयत्न मन का संदेह दूर करो तुम्हारा  
मनोरथ निश्च सिद्ध होगा ॥ ८॥ १३॥  
यह सुन कर वासुकि प्रौढ सब ना  
ज वरत प्रसन्न हुये प्रौढ ना नां प्रका  
र की मण्डी ले कर प्रयत्नी बहन का  
पूजन किया ॥ १४॥ १५॥ सूत जी  
बोले हे कृषि घोषा दे दिनों मैं उस वा  
सुकि की बहन का गर्भ पुरुष पद  
के चन्द्रमा की तरह बढ कर सुंदर ल  
ज में उस गर्भ से एक पुत्र उत्पन्न

॥ ३३८ ॥ ७ प्रादि पर्व ॥

हुं प्रा ७ प्रौर उसका नाम प्रास्तीकर  
करवाक्यों कि उसका पिता जरकार उ  
सकी माता से प्रास्ती कह कर वन को च  
ला गया था थोड़े दिनों में जब प्रास्ती  
के प्रपते माता के घर में बड़ा हुं प्रात  
व उसने चवन ऋषि से सब वेद  
७ प्रौर वेदांग पढ़ लिये ॥ १२६ ॥ १८ ॥  
७ प्रौर नागों की रक्षा में रह कर प्रात  
न्द पूर्वक नागलोक में विचरने ल  
गा ७ प्रौर सब सर्पों को पिबजी के स  
मान बढ कर सुरव दिया ७ प्रौर सर्प उ  
सके प्रताप से सर्व सत्रय स से निर्भ  
य हो कर रहने लगे ॥ १२७ ॥ २२ ॥ इति  
श्री मद्भ्य भाषा महाभारते प्रादी  
पर्वणि ७ प्रष चत्वारिंशोऽध्यायः ॥  
उन च सर्वा व वे पचा सकषी ७ प्रथ  
य ॥ एते न क ऋषि बोले हे सूत



॥२३६॥, प्रादि पर्व ॥

त्र, प्रब यह क्रया कर के राजा जन्मे ज  
यका, प्रपने मै त्रियो से, प्रपने पिता  
के मरने का हाल पूछने की कथा कहि  
ये सुत बोले ॥१॥२॥ हे कियो  
एक समय राजा जन्मे जयने, प्रप  
ने मंत्रियो से कहा के, प्राप लो जह  
मारे पिता के मरने के सब हाल को, प्र  
च्छी तरह जानते हो मै भी सुना चाह  
ता हूँ, प्राप उ सब को कहिये मै सु  
नकर, प्रपने कल्याण का काम क  
रि जा विपरीत विपरीत नहीं कर  
जा ॥३॥४॥ यह सुनकर धर्म के जा  
नने वाले मंत्री बोले कि महाराज, प्रा  
प के पिता प्रजा का पालन, प्रच्छी तर  
ह करते थे चारों वरों की धर्म से रक्षा  
करते थे वडे पराक्रमी थे पृथ्वी की र  
क्षा करते थे उनके न बहुत से वैसी थे  
, और न वे किसी से वैर मानते थे

॥२४०॥ प्रादिपर्व॥

प्रजापतिके समान थे प्रौरस वसे राक  
सा भाव रखते थे उनके राज्य में ब्राह्म  
ए क्षत्री वैश्य प्रौर पुरुद्र प्रयत्ना प्रप  
ना कर्म सावधान होकर करते थे वि  
धवा स्त्री दीन प्रनाथ प्रंजही नपु  
रुषों का पालन पोषण करते थे उन  
को देखकर मनुष्य से प्रसन्न होते  
थे जैसे चन्द्र मां को देखकर चकोकर  
प्रसन्न होती है उन्होंने महा राज कथा  
चार्य से धनुर्विद्या पढ़ी थी प्राप के  
पिता जो विन्द भक्त शास्त्र नीतिके  
गान में वाद लेजिते निरूप प्रौढ हि  
मान थे साठ वर्ष उन्होंने इस पृ  
थ्वी का राज किया उपरान्त पाम  
धाम को चले गये ॥ ५॥ ६१॥ उनके  
पीछे प्राप राज हुये प्रव प्राप इस  
कुल में पृथ्वी पर रहना स्वर्ग



॥२४१॥ प्राद्विपर्व ॥

राज किजिये ॥१८॥ यह सुनकर राज  
मै जयबोला कि इसकुल के मे कभी  
ऐसा कोई भी राजा नहीं हुआ जिस  
ने प्रजा को बालन प्रादि राज्य क  
र्म धर्म से न किये हों जैसा कि हम  
ने प्रयत्न दादे पर पादों का हाल सु  
ना है प्रवृत्त प्राप यह कहिये कि हम  
रे पिता कै से मरे ॥१९॥ २०॥ यह  
सुनकर व मंत्रियों ने राजा वरी दि  
त के प्रहेर खेले जाने राजा के  
बाण मारने उस के वहां से बन में भा  
गने राजा का उस का पिछा करने  
वहां मरग का हाल में नरुत क्रिषि  
से पूछने उन के कुछ न बोलने पर  
राजा का उन के जाले में मरा सूर्य  
हाल ने उस हाल को सुनकर क्रिषि  
के पुत्र श्री जी को राजा को पग प देने  
मने का प दे पास प्रयत्न पिछा ने

॥२४२॥ ७ प्रादि पर्व ॥

जकर पाप का हाल कहना राजा का  
पाप की निवृत्ति का उपाय करना तत्त  
क का राजा को काठ नौ ७ प्राते राह मेक  
पय पय मुनि को जो राजा को ७ प्रच्छा क  
रने को ७ प्राते ये तत्त क से धन पाकर  
लौ ट जाना ७ प्रौर तत्त क के काठने से  
राजा का मर जाने का सब हाल जो हम  
उम से पहले वर्ण कर चुके हैं क्रम से  
कहा ॥२९॥ ६२॥ यह सुन कर राजा  
जो मे जय बोला कि कय पयजी ७ प्रौर  
तत्त क का संवाद तो बत मेहु ७ प्राधा  
यहां कै से मालुं हुवा ॥६३॥ ६४॥ हम  
जानते हैं कि तत्त क ने कय पयजी का  
मंत्र बल देव कर यह विचार कि  
या के मेरे कठे हुये को यह जिला द  
उजे तो मेरी हां सी होगी इस से उस  
ने कय पयजी को राह से धन दे कर  
लौ टा दिया हम ७ प्रव उपाय कर के  
तत्त क को द राउ देंगे यह कहि पै कि  
यह हाल यहां किस ने ७ प्राकर कहा



॥ २४३ ॥ प्राद्वर्ष ॥

॥६५॥६६॥नक्षत्रकोसुखें

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यह सुनकर मंत्री बोले कि यहां को  
एक लकड़हारा उसी ब्रह्मदेव को  
कड़ी तोड़ने चला था उस को तत्काल  
ने नहीं देखा न कपय जी ने तत्काल  
कै काठ नें पर उस ब्रह्मदेव के साथ  
और भी भस्म हो गया था और राजा  
कपय जी ने उस ब्रह्मदेव को सर जीव  
एकिया तब वह लकड़हारा भी उस  
के साथ जी उठा उसने यहां प्रक  
र यह सब ब्रह्मदेव को बताया प्रवजो  
कुछ प्राप की इच्छा होय सो तुम  
करो ॥ १० ॥ १४ ॥ सूरत जी बोले हे  
ऋषियो यह बात सुनकर राजा ने  
जैसे जय कोक में डूब गये प्राखों से  
और वह ने लगे और कोय से

॥३४४॥ प्रादिपर्व॥

दोनों हाथों को मलमल कर बोले  
॥१५॥ के प्रापलो जो से में ने प्रप  
ने पिता के मरने का हाल संवसुना  
प्रवमेरी इच्छा उस दुष्ट तत्त्व को  
दराउ देने की है क्यों की उसने छल  
कर को श्री जी ऋषि के प्राप को के  
वल है तबना कर हमारे पिता को  
इसा ॥१६॥ ८॥ उस तत्त्व का कु  
छ विजान जाता जो कपयजी हमारे  
पिता को प्रपनी प्रौषध के वल  
से जिवा देते परन्तु उस दुष्ट तत्त्व को  
नो उन को धन दे कर राह में से उल  
टा फेर दिया इस कारण से में उत्तं  
क प्रौर प्रापलो जो की प्रसन्नता  
प्रौर प्रपने पिता के बैर लेने के लि  
ये तत्त्व को दराउ दूंगा ॥८३॥ ८५॥  
इति श्री भाषा महाभर्ते प्रादिपर्व



॥२४५॥ > प्राद्विपर्व ॥

हिराकोनपञ्चापातवपञ्चापाततमो  
१ ध्याय ॥ ४८ ॥ ५० ॥ इक्यावनवां > प्रधा  
य ॥ राजा जन्मे जयके सर्प सत्रय सर  
चनेकी कथा ॥ सुः वीले हे ऋषि यो  
राजा जन्मे जयने मंत्रियों से प्रसन्त  
होकर सर्प सत्रय सकरने की प्रतिभा  
करी ॥ १ ॥ > प्रौर > प्रयने पुरोहित > प्रौर  
ऋषि जों को बुलाकर कहा के तत्  
कनें > प्रयनी दुष्टता से हमारे पिता को  
विना > प्रयराध > प्रयनी विष की > प्र  
ति से काठकर जला दिया इससे मैं  
भी चाहता हूँ कि > प्रयने पिता का बद  
ला लेने के लिये उस तत्काल को भई  
बन्धु वों सहित जलती हुई > प्रगति में  
जल्ये > प्रापलोगों को रोसा कर्म क  
रने की विधि मालूम है या नहीं य  
ह सुनकर ऋषिजी जवाबने के इसका  
मक कर ने के लिये सर्प सत्रय सपुरा

॥२४६॥ प्रादि पर्व

ए० मे विख्यात है ॥२॥६॥ हम लोग  
उस यत्न को कर सकते हैं और प्राप  
हमें राजा के सिवाय उस यत्न को और  
कोई नहीं कर सकता है यह सुनकर ज  
मे जय प्रसन्न हुये और उसी समय  
से तत्काल को भस्म हुवा मान ॥८॥ क  
विजो से बोले कि मैं उस यत्न को क  
हूँगा प्राप उसकी सामग्री इकट्ठी की  
जिये ॥९॥ सू जी बोले हे कवि यो क  
वि जो ने यह सुनकर उस सब देस को  
नाप कर यत्न कर तें के योग्य पृथ्वी  
पोधी ॥१०॥ और उस पृथ्वी पर य  
संघाला वन वाई इसके पीछे वहां  
वस्त्र धन धान प्रादि सब यत्न की  
सामग्री इकट्ठी करी गई और वह  
तसे वेद के जानने वाले तपस्वी क  
बिलोग इकट्ठे हुये ॥११॥१२॥ कवि  
जो ने राजा के सर्व सत्र यत्न का फल  
पाने के लिये राजा को दीक्षा दी ॥१३॥



॥२४१॥ प्रादीपर्व॥

प्रौर राजा कर्ने सब य सकै रने वालों का वर्ण  
किया प्रौर य स प्रारम्भ होने के पहलै किल्य प्रा  
स्त के जानने वाले को ले य स प्राला के बनाने  
वाले कारीगरों ने एक पा कुन दे ख कर कहा  
कि एक ब्राह्मण के कारण स यह य स स  
माप्त न हो जा ॥ १४ ॥ १५ ॥ यह सुन राजा ज  
मे जय ने दी दालने के पहिले द्वार पाल  
कों को प्रासा दी कि हमारी विना प्रासा य  
स मै कोई न प्रा ने पावै ॥ १७ ॥ इति श्री भाषाम  
हामार्ते प्रादिपर्वलि नामैक पश्चात्तमो  
॥ १८ ॥ प्रध्याय ॥ १९ ॥ वावनवां प्रध्याय ॥  
राजा जमे जय के सर्व सत्रय सकरने की क  
था ॥ स्मृ० बोलै हे ऋषिये इस के पीछे य स  
होने लग सब ब्राह्मण प्रयने प्रयने कर्मों  
को कर ने लग ॥ १ ॥ प्रौर ऋषिजों ने जिन  
के धूम्र से कपडे काले प्रौर प्रां वै लाल  
हो गई थी मन्त्र से प्राग्नि में हो म किया २  
प्रौर प्राग्नि के मुख में सूर्य का प्रावाहन  
किया ॥ ३ ॥ प्रौर सर्व मंत्र के बल से निर्ब  
ल हो कर प्रा प्राकर प्राग्नि के राउ में गि

॥ २४८ ॥ प्रादि पर्व ॥

रने लगे ॥ ४ ॥ बालक त स्तु ए प्रौर बूटे  
पवेत काले प्रौर नीले प्रनेक प्रकार के  
पार्ष कोई एक को पा कोई एक को जन प्रौ  
र कोई जौ के ना क की वर वर लं जिन का प्रा  
कार किसी को छोड़े किसी का हाथ किसी  
का हाथ की सूर के समान था एक दूसरे  
को बुलाते फ डकते पवा सलेते पर स्पर् लि  
पटते चिन्नाते प्रकार ते लारकों प्रयुक्तों प्र  
बुद्धों प्रसंख्य रव्य सर्व प्रव पा हो कर कोई  
पूँछ की प्रौर से प्रौर कोई मुरव की प्रौर से  
उस प्राणि कु राउ में मन्त्र केवल प्राक्रम  
से गिर गिर कर भस्म हो जाये ॥ ५ ॥ १० ॥  
इति श्री छ भाषा महाभार्ते प्रादि पर्वणि  
द्विपञ्चाशत तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥ त्रिप  
नवा प्रध्याय ॥ जने जय के क्वचिज् प्रौ  
र सदस्यो के नाम ॥ इत नीक था सुन कर  
पौ० बोले हे सूत पुत्र उस भयानक सर्प  
यस में क्वचिज् प्रौर सदस्य कौन कौ  
न थे ॥ १० ॥ २ ॥ सू० जी बोले सुनो भण्डव  
नाम एक चंड नाम बास ए वडे वेद के



॥२६६॥ प्रादि पर्व ॥

जाननेवाले, प्रौर तय पूवी ये वे उस य संमें हो  
ता प्रार्थी तु होम करनेवाले थे ॥३॥ ५॥ जै  
मनी जी जौ बडे विद्वां न, प्रौर बद्र थे वह सा  
म वैदी कं चि न थे सां ग र जी ब्रह्मा, प्रौर  
पं जल कृषि पनु वै दी कृ चि न थे ॥६॥  
प्रौर, प्रपने पि ब्यो सहित व्या स जी महा  
राज, उदालक, प्रमत्तक, पूर्वत केतु, पि  
जल, प्रसित, देवल, नारद, पर्वत, प्रात्रे  
य, कुंड, जठर, कालघट, वात्स्य, श्रुत प्र  
वा, कौहल, देव शर्मा, मो दुल्य, सप्त सौर  
भ, प्रौर ॥२॥ बहुत से वेद के जाननेवाले ब्राह्म  
ण उस य सं के सदस्य थे ॥७॥ ८॥ हे कृषि  
को उस य सं में हजारों सर्प चि ल्लाते हुये, प्रा  
काश से, प्रज्जि में गिरते थे उन की चर्वी की  
नदी उस, प्रज्जि कुंड से वह चली, प्रौर सर्पों  
के जलने की बड़ी कड़वी गंध वास फैल गई  
॥९॥ १०॥ प्रौर तत्काल जलो जय के य सं का  
हाल सुन कर इन्द्र के पास गया, प्रौर, प्रप  
नी रुद्रा के लिये इन्द्र की पारण लई इन्द्र  
ने उसे पारण दे रख कर उस में कहा कि  
हि भय मत कर यहां तुज को य सं बाधा न

॥२४८॥ प्रादि पर्व ॥

कर सकी ता ॥१३॥१६॥ हम तरे मैं वारे में  
हमा जी सेंप ह लेहि ~~कह~~ कह चुके हैं यह  
सुन कर त दक सुरव पूर्व क इन्द्र के स्थान  
में रहने लगा ॥१७॥१८॥ इस के उपरान्त स  
रौं के बहुत से जलने पर वासु की नाग को  
जिस का परिवाल र थोड़ा सा रह गया था ॥  
मोह हुआ ॥१९॥ और उस मोह में प्रत्यन्त  
दुखी हो कर प्रपणे नी वह न से बोला के रा  
जा जन्म जय व स कर रहा है उस से मेरे सब  
दोह मे जलन उठ रही है मुझे दिवा नहीं सू  
जती चकराते हैं और दृष्टा क्या छाती  
पटी जाती है मैं जानता हूं कि मैं भी प्रवृ  
त्त स की धोर प्रति में गिर कर मर्ज  
रिगा ॥२०॥२२॥ प्रवृत्त वही समय प्रा  
या है जिस के लिये मैं ने मुझे जरा का र को  
दिया था इस लिये प्रवृत्त प्रयत्न पुत्र को  
जो वेद वेदांग के पार हो गया है बुला कर  
उस से हमारी सकुटुम्ब रक्षा करने रा प्रा  
प्ती क पुत्र निश्चय उस य स को वन्द कर  
सक्ता है क्योंकि ब्रह्मा जी ने मुझ से पहले



॥२५०॥ प्रादियर्ब ॥  
 इनवातोंको कहा था ॥२३॥ ॥२६॥ इति श्री  
 भाषामहाभाषे प्रादियर्बणि त्रिपंचा  
 शततमोऽध्यायः ॥५३॥ चौवनवां प्र  
 ध्याय ॥ वासुकि की वह नका प्रपनेपु  
 त्रसे सर्वों की यह शरीर दत्ता करने की कथा  
 प्रौर प्रास्तीक का जन्म जय के पास जाया  
 सुतजी बोले हे ऋषि यो वासुकि सुकि  
 की वह नने प्रपने भाई की बात सुनकर प्र  
 पनेपुत्र प्रास्तीक को बुलाया प्रौर उससे  
 कहा हे पुत्र तेरे मामा ने मुझे तेरे पिता को  
 एक कारण पाकर दिया था उस कार  
 ण का समय प्रब प्रातः पहुंचा है इस सम  
 य में तुझको भी उचित कर्म कर्म करना  
 चाहिये ॥१॥ ॥२॥ यह सुनकर प्रास्तीक बो  
 ला मेरे मामा ने तुमको क्यों मेरे पिता को दि  
 या था प्रौर वह क्या काम है जो मुझे प्रब क  
 रना चाहिये माता बोली ॥३॥ ॥४॥ हे पुत्र  
 सर्वों की माता कद्रू ने प्रपने पत्नी को प्रा  
 नमान कर ने के कारण से यह पाप दि  
 या था कि तुम सब यश की जल तीहुई प्र

॥३५१॥ प्रादि पर्व ॥  
 जिने में भस्म हो जे, प्रौर ब्रह्मा जी ने नेक  
 दूक माता से उस स म प्रय कहा था कि तेरा  
 पाप स चो हो जा ॥५॥ ८॥ उपरांत मेरे  
 मामा वासुकि ने देवता प्रों की पारण ली  
 देवता तेरे मामा को ब्रह्मा जी के पास ले जा  
 ये ॥ ८॥ १०॥ प्रौर उन से तेरे मामा की प्रो  
 र से बहुत कुछ कह सुन कर तेरे मामा को  
 पाप से छूरने की प्रार्थना ॥ ११॥ १३॥ त  
 व ब्रह्मा जी ने कहा कि वासुकि की वरुन  
 जरतकार नाम जरतकार ऋषि को विवाही  
 जावे जी उसका पुत्र सुकर्मि सवों को  
 पाप से छुटावे जा ॥ १३॥ हे पुत्र इसका  
 रण से तेरे मामा ने मुझे तरवे दे तपस्वी  
 पिता जरतकार को दिया था ॥ १४॥ प्र  
 व वही समय, प्राजा यहै राजा जन्मे ज  
 य सर्प सत्रय स कर रहा है तजे चाहु  
 ये कि, प्रपने मामा, प्रादिके कुटुम्ब को  
 उस य स की, प्रग्नि से वचा, प्रौर उस नि  
 मित्त को पूरा कर जिस निमित्त मेरा दान  
 तरे पिता को हुवा था ॥ १५॥ १६॥ यह सु



॥२५२॥ प्रादि पर्व ॥

नकर प्राप्तीक, प्रय नीं माता में बोला  
कि बहुत प्रच्छा में रहे सही करुंगा प्रौ  
र फिर, प्रय नैं फिर, प्रय नैं मा मा वासुकि  
सैं कहा ॥११॥ के मैं, प्राप को पुता पसें चु

टा उंजा, प्रव प्राप स्वस्थ हो कर वै ठो, प्रौ  
र भय को छोड़ दो मैं कभी हसी मैं भी जूठ  
नहीं कहता हूं मेरे कहे को, प्राप सच मां  
जो मैं, प्रभी ~~न~~ ज नू जय के पास जाता  
हूं, प्रौ र उसे, प्रय एणी वां एणी से प्रसन्न क  
र के उसका यम बंद करार है ता हूं ॥१२॥

२२॥ वासुकि यह सुन कर बहोत खुसी  
हये मानो कि सीने जीव दात दिया, प्रौ र  
यह बोले के मेरा पारी र घूम रहा है हृदा  
घाती फटी जाती है मुझे ब्रह्म दराउ की  
पीडा से दिवा दिखाई नहीं देती है ॥२३॥

यह सुन कर, प्राप्तीक ने कहा कि, प्राय कि  
सी तरह को भय, प्रौ र संताप न करो मैं, प्रा  
प को, प्रणि के भय को दूर कर के, प्रणि  
सी समान तेजर खने वाले ब्रह्म दंड के

॥२५३॥ प्रादि पर्व ॥

तेज को ना पा कहं जा ॥२५॥ २५॥ सूत  
जी को लेहे कृषि यो रो सा कहिये, प्राप्ती  
कनें वासुकि के दुःख को उसकी देह से  
उतार कर, प्रयत्न सरीर पर रख लि  
या, प्रौर सर्पों की रक्षा के लिये वहा से रा  
जा जमे जय के पास चले ॥२६॥ २७॥ जब  
यसे साला के पास पहुंचे तब द्वार पाल  
ने कहा कि बिना महाराज की, प्राप्ता वि  
जय भीतर नहीं जान पावों, जेह कम नहीं  
है, प्राय ठहरो मैं खबर उन कुं देता हूं  
, प्रैसा कह के द्वार पालने रा जा कुं जा ख  
बर करी रा जाने कहा, प्रच्छा, प्रा ने दो  
, प्राप्ती क राजा की, प्राप्ता हुकम पाक  
र भीतर गया जय साला में जहां बड़े व  
हे तय स्त्री, प्रदस्य, प्रौर कृषि जु वे ठे थे  
यसकी प्रसपा ना वडा इकर ते हुये पहुंच  
चे ॥२८॥ ३०॥ इति श्री भासा माहा भाते  
, प्रादि पर्व एणी चतुःपंचासत तमोऽध्या  
यः ॥५५॥ पंचपनकों, प्रध्याय ॥, प्राप्ती  
क काय समें पहुंच कर सदस्य कृषि



॥२५६॥ प्रादि पर्व

जं य स, प्रौ र राजा की स्तुति करना ॥  
सू. बोलें हे ऋषियो, प्रास्तीक य स में  
पहुँचकर य स सदस्य। ऋत्विज, प्रौ र  
राजा की स्तुती करने लगें हे राजन ते  
रयहय, प्रय साहु वाहें जयसे पहलें वे  
नृसा बहू पा प्रजापती इन्द्र यम राज  
हरि मेध रंति देव जाय वासि विन्दु कुवे  
र नृग, प्रज मीठ राम चन्द्र य स श्रुति यु  
धिष्ठिर, प्रज मीठ बंधू, प्रौ र व्यास जी  
प्रादि य स हूयें हैं हम तुम से, प्रय ने या  
तें का कल्याण चाहते हैं ये ॥१॥ १॥, प्रा  
पके य स करने वाले ऋत्विज, लो ज  
सूर्य के समान तेज र र बने वाले हैं पृथ्वी  
पर कोई विधी ऐसी नहीं है जिसे ये न  
जानते हों इनको दान दिया हुआ कभी ना  
पा नहीं होता ॥२॥, प्रौ र व्यास जी महा  
राज सब के पि र मौ रहें जिनकी दी  
क्षा पाकर ब्राह्मण ऋत्विज होते हैं  
प्रौ र पृथ्वी पर, प्रनेक शुभ कर्म करा

॥३५५॥ प्रादिपदें  
 तेहैं ॥८॥ प्रौर प्रणिदेव जिन केना  
 म विभा वसु. चित्रमानु. हिर राघ रेता  
 दुडु क. कस्तवर्मा. प्रदक्षिण वर्त कि  
 वाहै तेरी होमी हुई हव्य को देवता प्रों  
 को दे तेहैं ॥१०॥ प्रजा के पालन में वरा  
 वर इस नर लोक में कोई राजा नही है  
 हम तेहैं देख कर प्रसन्न हुये त्रधर्म रा  
 ज प्रौर वरुण के समान उदार है ॥११॥  
 इन्द्र प्रौर लोक पालन की समान प्रजा पा  
 ल कहै त्रवरा वीर है तेरी वरा वर धी राज  
 धारी कोई नहीं ॥१२॥ तेरा तेज रव बा  
 ज. नाभा ज, दिलीप, ययाति प्रौर मा  
 न्धाता के तुल्य है तू भीष्म की समान  
 तेजस्वी वाल्मीकि की समान पराक्रमी  
 वशिष्ठ के समान क्रोध को बरामें करने  
 वाला इन्द्र के समान प्रभुता का रखने  
 वाला नारायण के समान को ति धारी  
 यम राज के तुल्य धर्म चारी रुक्म के  
 समान उग्र निधान लक्ष्मी प्रौर य



॥२५६॥ प्रादिपर्व ॥

शोक वा सस्यान पर पुरा म के समान  
प्रसन्न सन्न जानने वाला तजसी प्रवि  
प्रौर प्रौब रिसिधों के तुल्य तपस्वी प्रौ  
भाजी रथ के समान दुर्धर्ष है ॥१३॥  
१६॥ सू- जीवो ले हे ऋषियो प्रास्तीक  
की यह सुति सुन कर सब सदस्य ऋ  
त्विज राजा प्रौर प्रणि प्रसन्न हुये प्रौर  
जन्मे जय उन सब ब्राह्मणों एों के मानसी  
संकल्प को जान कर बोला ॥१७॥ इति श्री मा  
घा महा भार्ते प्रादिपर्व एी पंचपंचापात  
तमोऽध्यायः ॥५५॥ छप्यनवां प्रध्याय ॥  
प्रास्तीक का राजा जन्मे जय से वर मांग क  
र सर्व सत्रय सको बंध करना ॥ सूत जी  
वो ले हे ऋषियो राजा जन्मे जय  
सब ऋषिये से बोला कि यह बाल  
क बड़ों की तरह बात कहता है इस  
से मैं इसे बड़े ही मान कर वर देना चा  
हता हूँ प्राय की क्या सलाह है ॥१॥ स  
दस्य प्रौर ऋत्विज बोले कि राजा प्रों

॥ २५१ ॥ प्राद्विपर्व

को ब्राह्मण का बालक भी मान्य है  
और जो विद्वान् है वह तो सर्वथा पूजन  
योग्य है प्राप नु द्विमान है प्रापसे  
और क्या कहा जाय तत्त भी प्राया  
ही चाहता है यह सुनकर राजा  
स्त्री को बर देने की को ही था कि इ  
तने में होता व्यग्रचित होकर बोला  
कि महाराज तत्त क नहीं प्राता है ॥  
३॥ यह सुनकर जन्मे जय बोला कि

~~महाराज~~ हे ब्राह्मणो प्रबरोष्क  
जिसमें सा करो जिसमें तत्त क प्राक  
र प्राणिन में गिरै यह य स समा प्रहो  
॥ ४ ॥ ~~विज्~~ विज् बोले महारा  
ज हम लोग बहु प्रकार से मंत्र पृष्ठ  
ते हैं परन्तु तत्त क नहीं प्राता है वह  
भय से पीड़ित हो कर इन्द्र की पारण  
गया है इन्द्र ने उसे यह वर दिव्या है  
कि तुम यहां निर्भय बसो यहां मंत्र  
बल ना ही चलैगा इस से जान प  
इता है कि जो य स कुं उ के वना ने



॥२५८॥ प्रादि पर्व ॥

कैसमय पुराण के जानने वाले सु  
नरुने और ब्राह्मणों ने कहा था, छे  
वही हो नहार है ॥५॥ १॥ यह सु  
न कर राजा जन्मे जयने क्रोध  
किया, और हो वेता से कहा कि प्रव  
रे सा उर्य्य करो जिस में वह सर्प इ  
न्द्र सहित चला, प्रावै यह कहकर  
राजाने मंत्र से के जानने वाले ब्राह्म  
णों से फिर क्रोध कर के कहा महा  
राज तत्तक तो इन्द्र के घर गया ही  
है, प्रब, प्राप, प्रयथा करै कित  
तत्तक सहित इन्द्र का, प्रावाहन  
कर के दानों को, प्रणि मै हो म दे  
॥८॥ ११॥ राजा की बात सुन कर  
होताने इन्द्र का, प्रावाहन किया  
, और इन्द्र तत्तक सहित जिन के

॥२६८॥ प्राद्विपर्व ॥  
 प्रंग महा मंत्र सै किल गये चे स्वर्ग  
 से चले कुछ दे रत के देवे नू प्रा का पा  
 मै दुखित रहे उपरान्त उस यम को दे  
 रव कर भयभीत हो तत्काल को छो  
 ड चले गये इन्द्र के चले जाने प  
 र तत्काल मंत्र बपा से सब घमड़ भूल  
 गया प्रौर व्याकुल प्रंग होता हुआ प्र  
 णिके पास पहुंचा ॥१२॥१५॥ उसको  
 दे रव कर ऊँ त्विजो नें कहा हे राजा ते  
 कार्य तौ सिद्ध हुवा प्रबल मइस ब्राह्म  
 ण को बर दो ॥१६॥ जय जय कहा महा  
 राज प्राप वर मां गि ये मै प्राप को जो  
 मां जो जो सोही दूंगा ॥१७॥ राजा यह कह  
 ने ही पाये थे कि इतने मै ऊँ त्विज कि  
 र वो लो देखो राजा जन्मे जय तद्दे क  
 स्वर्ग से चिन्ता ता चला प्राता है प्रौर  
 इन्द्र के छो ड जाने से बिकल मूँ छि



॥३६॥ प्रादिपर्व॥

त प्रौर घुमेर खा खा कर ॐ चे स्वासले  
ता है ॥१८॥ ॥१९॥ सूत बोले हे ऋषियो  
जब प्राप्ती कने देखा कि तत्क प्र  
जिनके समीप प्रापुं चाहें थोड़ा ही प्र  
तर है तब वह वह जन्मे जयसे बोला ॥  
२०॥ कि प्रापने जो बर हम को देने क  
हा था सो दी जिये हम यह बर मांगते  
हैं कि तुल्लारा यह सर्व सत्र य स प्र  
व बंध हो वै प्रौर इस समय से पाछे इस  
में सर्व न गिरे ॥२१॥ यह सुन कर जन्मे  
जय बोला के प्राप सो ना चां दी जाय प्रौर  
र जो कुछ इच्छा हो सो ले ली जिये परन्तु  
हमारे य स को न बंद नही कि जिये २२॥  
२३॥ प्राप्ती क बोले कि हम को यह कु  
छ व नही चाहिये हम तो केवल प्रा  
प को य स बंद करना चाहते हैं ॥२४॥  
राजा ने बार बार यही कहा कि प्रौर जो  
वर इच्छा होय सो मांग लो परन्तु हम

॥२६॥ प्रादिपर्व ॥

राय सर्वदण्डनकरोपरन्तु प्राप्ती कनेय  
हीउत्तर दिया कि मुझे प्रौर बरन हींचा  
हिये ॥२५॥ २६॥ इसके उपरान्त सबस  
दस्य प्रौर चेट चिन्तन बोले कि हेरा जा प्र  
वकुष् चिन्तान करो बरदो प्रौर सर्व  
सत्रयसको बंद करो उनकी बात सुन  
कर राजाने ब्राह्मण को बर दिया प्रौर  
सर्व सत्रयसको बंद करो उनकी बात  
सुन कर राजाने ब्राह्मण को बर दिया  
प्रौर सर्वयसको समाप्त किया ॥२७॥  
इति श्री माता महाभारते प्रादिपर्वणि  
षट्पंचाशतमोऽध्यायः ॥ ५६॥ सत्तावन  
वा प्रध्यायः उन मुरय मुरय सर्पों के  
नाम जो यप्रणि में भस्म हुये ॥ इत नीक  
कथा सुन कर सौ नक चेट चिन्तन बोले  
कि मैं उन सब सर्पों के नाम सुना चाह  
ता हूं जो उसय सकी प्रणि मैं गिरक  
र भस्म हुये उन सब के नामों को नहीं  
कह सता हूं ॥३॥ परन्तु उन में मुरय



॥ २६३ ॥ प्राद्विपर्व ॥

सुरवा सर्वथे उनके ना मये है ॥३॥ प  
हले वासुकि नाग के कुल के लसकों  
को ना म कहता हूं जो नीले काले, और  
पूवेत, प्रादि, प्रनेकरंग के बड़े विषधा  
री, और कायाधारी थे प्रधान प्रधान  
उनके ना मये है कोटिपा, मावन सप्त  
र्षी, पाल, ~~ख~~ पाल, हर्लीमक, ४॥५॥  
चिच्छल, कौणय, चक्रकालवेग, प्र  
कालन, हिरण्यवाहु, पारण, तदक  
और काल दंतक ॥६॥ और तदक कु  
ल के सर्पों के मुख सर्पों के ना मये है पु  
च्छंडक, मंडलक, पिंडसेत, और  
भेराक ॥७॥ ८॥ उच्छिक, पारम,  
मंग, विल्वतेजा, विरोहण, पिली,  
पालकर, मूक, सुकुमार, प्रवेयन,  
मुद्गर, कि पुरोमा, सुरोमा, और  
महाहनु ॥९॥ १०॥ और रेशवतस  
र्य के बंधा के नागों के प्रधान ये है परा

॥१६३॥ प्रादि पर्व ॥

वत, पांडर, हरिण, कृपा, बिहंग, पा  
रभ मेद, प्रमोद, प्रौर संहतापन, प्रौर  
कारैव्यकुल के मुख्य मुख्य येना महै  
॥११॥१२॥ राक, कुंडल, बैणीवेणी  
स्कन्द, कुमारक, बहक, अगं बेर, धू  
तक, प्रात, प्रातक, धृत राष्ट्र, प्रौर ना  
जवं पा के मुख्य सयों के येना महै ॥१३॥  
॥१४॥ पां कु, कर्ण, पिठरक, कुठार,  
मुख्य सेचक, पूर्ण गद, पूर्ण मुख,  
प्रहास, पाकु निदरि, प्रमाहठ, कामठ  
क, सुयेण, मानस, प्रव्यय, भैरव, मुं  
दवेद्गंग, पिंपाग, (उद्धारक) ऋष  
भ, वेगवाननाग, पिंडारक, महारु  
न, रक्तगंग, सर्व सारग, सम, धू, प  
दक वासक, बराहक, वीरणाक, सु  
चित्र, चित्रवेगिक, परापाह, तस्त्रण  
कमलिन, स्कंध, प्रौर, प्रस्त्रणि ॥१५॥



॥२६४॥ प्रादि पर्व ॥

१८॥ सूत बोले हे ऋषियो मुख्य मुख्य  
नामों के नाम मैं न कहूँ इन सब के पुत्र  
पौत्रादिक, प्रसंख्य थे किसी के तीन  
किसी के सात, प्रौर किसी के द्वावि  
रथे, प्रौर उनका विष का, प्राग्नि के  
समान था कोई पाहु की सिर की  
वरा वर था कोई एक योजन, प्रौर को  
ई दो योजन लम्बे थे रासे रासे को दिन  
पार्ष जिन की संख्या कोई नहीं कह स  
ता है माता के पाप से जन्मे जय के  
यस मे, प्राये, प्रौर भस्म हो गये ॥२॥

॥२४॥ इति श्राभाषा महाभाते प्रा  
दि पर्वणि सप्तपंचापात्तमोऽध्या  
य ॥५१॥ प्रह्लावन कां, प्रध्याय ॥ प्रा  
स्तीक का जन्मे जय से सूर्य यस बंदक  
रने का बर मांगना, प्रौर जन्मे जय का  
बरदान देकर यस समा प्रकरना ॥  
सूत बोले हे ऋषियो, प्रास्तीक ने  
हे क, प्रौर वरी, प्रद्युत वात की वह भी

॥ ३६५ ॥ प्रादिपर्व ॥

सुनोइन्द्र, प्राप्तीककोवर मिलने में  
देसीदेखकर भयसे तत्तक को छोड़क  
र चला गया, और बड़ी देर हो गई परन्तु  
तत्तक, प्रणि में नहीं गिरा तब राजा  
के मन में बड़ी चिन्ता यह हुई के मंत्र से, प्रा  
वाहन करने पर भी तत्तक स्वर्ग से, प्र  
णि में क्यों नहीं गिरता है ॥ १ ॥ ३ ॥ यह  
सुनकर शौनक ऋषि ने पूछा कि  
हे सुत पुत्र जी क्या ब्राह्मण मंत्र विधि  
भूल जाये थे जिस से रो साहुवा ॥ ४ ॥ सु  
त बोले नहीं जब प्राप्तीक ने देखा कि  
तत्तक, प्रणि में गिरने चाहते हैं तब  
तीन वर तिष्ठ तिष्ठ, प्रार्थी बैठकर कहा  
॥ ५ ॥ उस के वचन से वह तत्तक, प्राका  
श में बैठ गया ठै र गया इसके पीछे रा  
जा सब सदस्य ऋषिजों के कहने से बो  
ला कि, प्राप्तीक का कहना सत्य होय  
हमारा यह कर्म पूरा हो, और सर्व निभ  
य होय, प्राप्तीक प्रसन्न होकर, और वह



॥ २३ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

जौ नो स्य सय भय भवेत् ॥ २३ ॥

यो जरा का हृत्ता जो तो जरा को सौ महा

यथा ॥ २४ ॥ प्राप्तीक सय सत्रै वपन्त जा

न्यो भ्यर दत्त सस्मर स नो महा भा ज

तमा ही सतु नहै त ॥ २५ ॥ सय य स

व भद्र नौ दूर ज चर महा धि प ज

न्या स्य य सानो ॥ २६ ॥ प्राप्तीक व चनं मि

र ॥ २७ ॥ प्राप्तीक सय व चः सु वा

पः सय न न व र्त्त ते पा त धा मि द्य ते

सू द्धि सिं द्रा ब्र द क लं य था ॥ २८ ॥

इत नी क था सु ना कर सू त वो ले हे

ऋषियो सय सै य ह व र दान पा कर

॥ २९ ॥ प्राप्तीक ऋषि वहां सै चले जाये ॥ ३० ॥

र पुत्र पौत्र युक्त हो कर कुघ्र काल

में स्वर्ग वा सी रुये ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

प्राप्तीक के चरित्र सुनने वाले को सय

का भय कभी नहो जा ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

था को प्रिमिती नाम भाई बने जे

॥३६८॥ > प्रादिपर्व॥

जय से, प्रयने पुत्र हृह को सुनाया  
था वही में ने तुम को से भी कही है ३-

॥३९॥ यह वही > प्राप्ती क की कथा

है जो दुंडुभ सर्प ने कही थी > प्रौर  
उसके सुना ने को > प्रापने मुऊ से

कहा था ॥३३॥३३॥ इति श्री ब्र भा

षा महा भारते, प्रादिपर्वणि > प्रष

प चापातमो, प्रध्यायः ५८॥ उ

न सठवा, प्रध्याय सौनक कृषि

को सूत पुत्र से महा भारत कथा में

कुरु पांडु व बताने सुनने की इच्छा

करना ॥ पौनक कृषि बोले कि हे सू

तजी भृगु वंश की सब कथा सुन

न कर हम तुम से बहुत प्रसन्न हु

ये > प्रवतुम कथा कर के महा भारत

सम्बन्धी कुरु पांडु व बताने

जिसे राजा जन्मे जयने, प्रपने



॥३९०॥ प्रादि पर्व ॥

विद्युवै सभ्याय न सर्प सत्र य समे  
व्यास जी से पूछा था, और व्यास जी  
महाराज ने प्रपने पिछे वै प्राप्या  
यन को उसे सुनाने की, प्रासादी ब  
रनन कि जिये सूत जी बोले बहु  
त श्रेष्ठ मैं, प्रादि से सब कथा कह  
ता हूं, प्राप सुनिये मुझे भी इस कथा  
के कहने मैं, प्रा नन्द होता है ॥१॥१॥  
इति श्री भाषा महाभा, तें, प्रादि प  
र्व तीर को न षष्ठि तमो, ध्याय ॥५॥  
साठवां, प्रध्याय ॥ व्यास जी का राजा  
जन्मे जय से के य स मैं जाना और ज  
न्मे जय का कुरु पांडु वीर तान पूछ  
ना ॥ सूत जी बोले हे कृषि पोर राजा  
जन्मे जय को सर्प सत्र य स कर ने  
के लिये दीक्षित सुन श्री व्यास जी  
महाराज जो परा पार मुनि से य मु  
ना के क्षीप में सत्य वती माता के क

॥ २१६ ॥ > प्राद्विषर्ब ॥

मार > प्रवस्था में उत्पन्न हुए थे > प्रप  
ने पिछ्छों सहित वहां > प्राये व्यास  
जी > प्रयत्नी मां ता के उत्पन्न होते ही  
बड़े होगये > प्रौर बिना वेद पढ़े > प्रथवा  
तपस्या किये सब वेदों में पार होग  
ये व्यास जी सगुण निगुण ब्रह्म के  
ज्ञानने वाले ब्रह्म ऋषि कवि सत्य  
व्रत > प्रौर पवित्र थे > उन्होंने ही वेद  
के चार भाग किये > प्रौर राजा पात  
न के कुल को बँटाने के लिये पौरा  
ण्य तराष्ट्र > प्रौर विदुर को उत्पन्न  
किया सो व्यास जी > प्रयत्ने वेद वेदों में  
के ज्ञानने वाले पिछ्छों समेत उस  
जगत् में जहां राजा जन्मे जय बड़े ॥ २  
ब्रह्म कल्प सदस्यों के बीच में से  
वैठाया जय से देवताओं में इन्द्र ॥ १ ॥ ६  
राजा उनको देख कर ऋषियों सहित



॥२१२॥ ७ प्रादि पर्व ॥

तें उन के पास प्राया प्रौर बड़े आदर से  
उनको ले जाकर सुनहली बिबरवाले  
प्रासन पर बैठाया प्रौर बिधि पूर्वक  
जैसे इन्द्र बृहस्पति की पूजन करता  
है पाद्य प्रर्घ्य प्राचमन प्रौर मधु  
पर्क प्रादि बिधि से राजा ने उनका  
पूजन किया ॥१०॥ १३॥ व्यास जी  
उस पूजा को ग्रहण करके प्रसन्न  
हुये ॥१४॥ राजा पूजन करके उन  
के पास बैठ गया प्रौर उनसे कुशा  
लपुंछी व्यास जी ने भी राजा से कु  
शल पूछी ॥१५॥ उपरान्त सब सद  
स्थाने प्राकर व्यास जी का पूजन कि  
या प्रौर व्यास जी ने भी राजा से कुशा  
लपुंछी उनका पिछा चार किया  
इसके राजा जन्मे जयने हाथ जोड़के

॥२१३॥ प्राद्विपर्व ॥

रव्यासजी से बीनती करी ॥१६॥ कि  
महाराज प्रायने कुरु प्रौर पांडुवों को  
प्रांख से देखा है कपा करके उन  
की कथा कहिये ॥१७॥ कि वैलोग  
बड़े बुद्धिमान थे फिर किस लिये प्रा  
पस मैं रोसा बिच्छू हूँ प्रा कि उनके  
युद्ध मैं सब राजा हैं प्रां का नास हो  
गया ॥१८॥ यह सुन कर व्यासजी ने  
प्रापने बैषाम्या येन पिष्य को पास  
बुला कर कहा कै जो कुरु पाण्डुवों के  
भेद हो ने की कथा तुम ने हम से सुनी  
है उसको राजा जन्मे जय को सुनावो  
॥१९॥ २०॥ यह सुन कर बैषाम्या य  
नजी गुरु की प्रासा सिध्य रधार  
ण कर के कुरु पांडुव की कथा इति  
हास वर्णन कर ने लगे ॥२१॥ २२॥  
इति श्री भाषा महाभारते प्राद्वि



॥२१५॥ ० प्रादिषव्व ॥

॥ परबणि षष्ठितमोऽध्याय ॥

६० ॥ एकसठवां ० प्रध्याय ॥ व्यासजी

को राजा जन्मे जय के य समें जानों

० प्रौर जन्मे जय का कुरु पांडुबीर

तान्त पूछना ॥ सुतजी को ले हेरु

धियो राजा जन्मे जय को सर्प सत्रय

सकरने केलि घे दी दित सुन कर

श्री व्यासजी महा राज जो परा पार म

निसे यमुना के द्वीप में सत्यवती मा

ता के कुमार ० प्रवस्था में उत्पन्न हये

थे ० प्रप ने पिछों कर के साथ हूँ ० प्रा

ये व्यासजी ० प्रपनी ० प्रपनी माता के ०

त्यक्त होते ही बह डे हो गये ० प्रौर बि

छाछे ना बंद पड़े ० प्रथवा तपस्या

किसे सब बंदों में पार हो गये व्या

सजी सज्जुता निज्जुता ब्रह्म के गान

नैवाले बस - नितिक नित सत्यवत श्री

॥२१५॥ प्रादि पर्व ॥

रय विवये (उन्होंने ही वेद के चार भा  
ग किये) और सन्मयात्तनु के कुल को  
बढाने के लिये पारा दुध त राष्ट्र और  
विदुर को (उत्पन्न) किया सो व्यास जी  
प्रसन्ने वेद वेदांगों को दे जानते वाले  
किष्को सहित उस य समें जहां राजा  
जन्मे जाय बड़े बड़े ब्रह्म कल्प सदस्यों  
के बीच में से बैठे था जयसे

---

सूत जी को लेहे कृषियो वैराग्या य  
न जीवने गुरु और ब्राह्मणों को न  
मस्कार करी और जन्मे जयसे कहा  
कि मैं महात्मा व्यास जी के बनाये हुये  
कथा इतिहास के प्रसन्न पूर्वक कह  
ता हूं तुम सुनो हम तुम को सुनने  
के योग्य समझते हैं ॥१३॥ कुरु पां  
डवों में भेद होना और प्रिथ्वी की द  
य कर नें की जाने पुरु की प्रापती का



॥२९६॥ प्रादि पर्व॥

संदोषकार ए॥ इस तरह रह पार है ॥४॥५॥  
कैराजा पांडु के वन में मर जाने के पीछे  
उनके पुत्र हस्तिनपुर में जाये प्रौर थो  
हुंसे दिनों में सब बेद प्रौर धनुष वि  
द्या पढ कर बड़े प्रवीण चतुर हो जाये  
॥६॥ उनकी लक्ष्मि यथा देह बल उ  
त्साह जितेन्द्रियता प्रौर बल देव  
कर पुरवासी बड़े प्रसन्न रूपे परन्तु  
धृतराष्ट्र के दुर्योधन आदिक पुत्र उ  
नको न देख सके ॥७॥ प्रौर दुर्योधन  
कर्ण प्रौर वाकुनी की सलाह से कुल  
जय द्वा की वरा वर जो सिंह की दाढ़ का  
भी मांस निकालने के लिये यत्न कर  
ता है प्रनेक उपाय कर के पीडुओं को  
दुःख देने लगे ॥८॥९॥ पहले दुर्योध  
न ने भीमसेन को मारने के लिये वि  
ष दिया भीमसेन उसको पचा जाये  
॥१०॥ प्रौर जंगल के तट पर प्रणाम

॥ २११ ॥ > प्राद्विषर्ब ॥

लूके रिघाट पर सो जाये दुर्योधन ने उस  
सो ते हुये वीर को बंधवा कर जं जा जीमें  
हाल दिया ॥ ११ ॥ वह वीर जागते पर बं  
ध जमान तो डकर चला प्राया > प्रौर  
केर सो रहा तव दुर्योधन ने उसको बि  
षधारी सयों से कठवाया फेर भी > प्रो  
नहीं मरा ॥ १२ ॥ १३ ॥ विदुर जी पांडुओं  
की रक्षा इस प्रकार से करते थे जै से इन्द्र  
मनुष्यों की रक्षा करता है ॥ १४ ॥ १५ ॥  
उनकी रक्षा के कारण से दुर्योधन  
दिक सब प्रकार के गुप्त > प्रौर पर घर  
व उपाय कर के थक गये पर नु पांडुओं  
को नहीं मार सके ॥ १६ ॥ इससे ती पाँधे  
दुर्योधन ने पाकुनी > प्रौर कर्ण की सलाह  
से घर तर भूकी > प्रा आले कर पांडुओं को  
बारणवत नगर को जिजवाया ॥ १७ ॥  
१८ ॥ > प्रौर वहां उन को ला द्वा घर में  
रह के नें को हुकूम दिया पांडु वहुं जा  
ये > प्रौर एक बरस तक उस घर में रहे वि  
द्ये विदुर जी के कहने के माफ के जेह



॥२१८॥ प्रादि पर्व ॥

जो पांडु वंसे हस्तिनापुर से चलते वस  
त उस घर में से बचने को उपाय बता प्रा  
ये थे उस घर में प्रागल्भ्य कर पुरोचन  
को जलाकर प्रापसु रंग की राह होकर  
माता कुंती कुंसा लिये निकड़ गये, और  
दुर्योधन के उस से, प्रमत्त को परधरन  
ही करने के वास्ते रात कुंचले गये राह में  
हिंडु बना मरा दस को मारा ॥१९॥ २४॥  
और उसकी बहन हिंडु बाको भीम से  
नाने ग्रहण करी जिससे ती घटोत्क  
च उत्पन्न हु, प्रा वहां से पांडु वचन क  
र एक चक्रावरी नगर में पहुँचे ॥२५॥  
हुं एक ब्राह्मण के द्वाँ ब्रह्मचारी बण  
कर हुं रहे, और भीम सैन ने उस नगर  
के मनुष्यो के बाँधे नें वाले बकना  
मरा दस को मारा, और पुरवाषियों  
को सुख दिया इस के पीछे पांडु वं  
चाल देवा के राजा की कृष्ण नामक  
न्या को स्वयं वरसुन कर ॥२६॥ २९॥  
हुं गये, और दोष दी को पाकर एक

॥३१८॥ प्रादि पर्व ॥

वर्षतक हों रहे ॥३॥ चिधे वे जब प्रघ  
टहोगये तब वहों से हस्तिनपुर को च  
ले गये हस्तिनापुर जाने के पीछे भीष्म  
पितामह और धृतराष्ट्र ने उन से क  
हा कि तुम वांडव प्रस्थनगर में जा  
कर बसो और मत्सर ता छोड़ कर हो  
॥३१॥३३॥ पांडव उनके कहें की मा  
फ कर सब प्रकार के रत्न लेकर प्रप  
नने सुहृद ध्यारे मित्रों के साथ वांडव  
प्रस्थनगर में जा बसे ॥३४॥ और प्र  
पने पास्त्र के प्रताप से बहुत से राजा  
वों को बस मे कर के रहने लगे ॥३५॥३६  
भी मसे नने पूरब और प्रज्जनने उत्त  
र की दिशा नकुलने पश्चिम और स  
हदेवने दक्षिण दिशा प्रों को सब रा  
जा प्रों को जीत कर विजयनां जीत क  
री ॥३७॥३८॥ पां चों पांडव सूर्य के स  
मान तेज धारी होने से परध्वी उस स  
मय में छः सूर्य रखने वाली हुई ॥३९॥  
इस के पीछे युधिष्ठिर ने प्रज्जन को



॥२८॥ > प्रादिक पर्व ॥  
 जो प्राण से भी, प्रादिक प्या रा था किसी  
 कारण से वन को भेजा ॥४०॥ ४१॥ वहां  
 > प्रजुन ने बाहर वर्ष तक वास किया  
 केरूहों से, प्रजुन द्वार का चले जाये  
 ॥४२॥ > और वहां श्री कृष्ण जी की छो  
 छोटी बहन सुभद्रा को हरानां चुराया  
 याने लै भागे उस को ले कर रा से पोभा  
 को प्राप्त हुये जय से लक्ष्मी कर के पाथ  
 बिष्णु की पोभा होवे ॥४३॥ ४४॥ इ  
 सके > प्रननार > प्रजुन ने श्री कृष्ण चन्द्र  
 के पाथ खाइ वन को जला कर > प्र  
 णि देव को तृप्त किया ॥४५॥ > और बा  
 सुदेव की सहायता से इन्द्र के वन को भ  
 स्म कर दिया ॥४६॥ > प्र णि देव ने प्रस  
 न्न हो कर > प्रजुन को जांजीव्य नृषदे  
 ने रक्षा का जिसमें बाण कभी खाली  
 न जाय > और राक > प्ररथ जिस की ध्व  
 जा पर रहने मान जी की मूर्ती थी सो दि  
 भी दिया ॥४७॥ > और > प्रजुन ने यमना

॥ ३८१ ॥ प्रादिपर्व ॥

मन्त्र दैत्यको प्रति में जलता हुआ देव  
कर उस कुं वचाया था उसने पांडवों को रा  
के व होते प्रस्था सुन्दर रतन जड़ित स  
भावना हुई ॥ ४८ ॥ उस सभा में दुर्योध  
न ने लोभ किया और पीछे पांडवों के  
साथ जुवा खेल कर पुच्छिश्चिर से खेल  
कर के सर्वस्वनां सब ठाठ वाट हर लिया  
याने जीत लिया और बारह वर्ष का वनो  
वास दिया ॥ ४९ ॥ पांडव वारह वर्ष वन  
क तो वन में रहे तैर वे वर्ष में बिराट नगर  
में उप हो कर के रहे और चौदह वर्ष में  
पुच्छिश्चिर ने वन से लौट कर प्रयत्ना सब  
धन और राज मांगा और वह न मिल  
ने के कारण से कुछ काल डाई प्रापस में  
हुई उस कुछ में पांडवों ने क्षत्री कुल को मा  
र कर राजा दुर्योधन को मारा ॥ ५० ॥  
और संपूर्ण राज ले लिया जन्मे जय इस  
प्रकार से कुछ पांडवों में भेद हो के राय  
हुई ॥ ५१ ॥ इति श्री भाषा महाभारत प्रा  
दिपर्व एव कथ्यते तमोऽध्याय ॥ ६१ ॥



॥२८२॥ प्राद्वर्ष ॥

वो सठवां, प्रध्याय ॥ जन्मे जयका वेष्टा  
म्यायन से महाभारथ कथा बिसार  
सहित पूछना, प्रौर बैषा म्यायन को  
महाभारत महात्म कहना ॥ सुतजी  
बोले है ऋषियो इतनी कथा सुन क  
र राजा जन्मे जय वैषा म्यायजी से के  
ले कि महाराज, प्रायने कुछ ६० प्रौ  
र पांडुवों का बलान्त संदौप कर के सु  
नाया परंतु मैं सम्पूर्ण महाभारत  
कथा जो व्यासजी ने कही है सुनना  
चाहता हूं ॥१॥२॥ कोई कारण मा  
लूम होता है जिससे पांडुवों ने भी व्या  
दिक बड़े बड़े १ प्रवध्य यो यो हू ॥ प्रौं  
को मारा, प्रौर समर्थ हो नें पर भी व  
डे बड़े के प्रासहे ॥३॥५॥ परन्तु क्रोध  
न कि था भी मसेन को दयाह ३ आर  
हणी का बल था जिसमें रभी उन्होंने  
ने क्रोध को रोका ॥६॥ प्रौर द्योय

॥२८३॥ प्रादिपर्व॥

दीसबप्रकार से समर्थ थी परन्तु उस  
ने महा ल्के पास हे प्रौर उनदुरात्मा  
कौरवों को प्रपने तेज से नजं लाया  
युधिष्ठिर जुवेमैं चारों भाइयों को हार  
जाये वे चारों महा परा कर्त्ति होने पर भी  
चले जाये प्रौर कौरवों को नमारा युधि  
ष्ठिर धर्म वतार थे प्रौर ल्के पास  
हने के योग्य न थे परन्तु उन्होंने भी  
ल्के पास हा उन सब चरित्रों  
को कारण सहित कहिये प्रौर यह  
भी वर्णन कीजिये कि प्रर्जुन ने जि  
नके सारथी श्री कृष्ण थे कि सप्रका  
र से बहुत सी सेना को यमपुर पहुंचा  
या प्रौर उन सब महारथीयों नें कि  
सप्रकार से युद्ध किया प्रौर कवक  
वे क्वा क्वा चरित्र किया ॥८॥ ११॥ यह  
सुनकर बैराग्यायजी बोले कि हे रा



॥२८४॥ ० प्रादि पर्व ॥

जामैं शकलारव व्यासजी के बनायेहु  
ये महा भारत को जो सब लोकों में पू  
जितहैं कहता हूं ० प्रापरा का उत्तमन  
कर के सुनिये ॥१२॥ १४॥ इस कथा  
के सुनने ० प्रौर सुनाने वाले दो नोत्र  
ब्रह्म लोक पाकर देवतों के तुल्य हो  
जाते हैं ॥१५॥ यह महा भारत वेदों  
की तरह पवित्र ० प्रौर उत्तम है ० प्रौर  
सब के सुनने के योग्य है क्यों कि स  
ब ऋषियों में इस की प्रशंसा करी है  
॥१६॥ ० प्रौर इसके पढ़ने से मनुष्य  
को ० प्रर्थ काम मोक्ष सच्चिन्दी बुद्धि  
० प्रौर ज्ञान प्राप्त होता है ॥स॥ १७॥ वि  
द्वान् लोग इस महा भारत को दान  
प्रीति सत्य प्रीति ० प्रनास्तिक ० प्रौर  
० प्रक्षुद्र मनुष्यों को सुना कर धन  
पाते हैं ॥१८॥ इस के सुनने से ० ऋण

॥२८५॥ प्रादि पर्व ॥

हत्या का पाप दूर हो जाता है और स  
व पापों से रो से छूट जाता है जैसे राहु से  
छूटकर चन्द्र मा निर्मल हो जाता है  
इसके सुनने से जय चाहने वाले को  
जय होती है ॥२८॥ २०॥ वह पृथ्वी को जी  
तकर शत्रुओं को मारता है और स  
जान चाहने वालों के सत्ता न होती है  
॥२९॥ जो राजा और रानी इसको सु  
नै तो उन के बड़ा वीर पुत्र प्रथवा ब  
ड़ी भाग्यवान् कन्या होती है ॥३०॥  
यह व्यास कृत महाभारत धर्म शा  
स्त्र और मोक्षदा शास्त्र है ॥३१॥ इस  
के सुनने और सुनाने वालों के मन  
वाचा और कर्म के कि ये हुये पाप ज  
ल्दी दूर हो जाते हैं और उन के प्राप्ता  
कासी और सेवा करने वाले पुत्र होते  
हैं ॥३२॥ ३५॥ उन के पास व्याधि  
नहीं प्राप्ती है ॥३६॥ व्यास जी ने इस



॥२८६॥ प्रादिपर्व ॥

इति हासकोमनुष्यों के पुराय प्राय  
यया प्रौरधन देने को बनाया है यह पां  
उब प्रादिक बड़े बड़े क्षत्रियों का की  
र्तन करने वाला है प्रौर सब विद्या  
वों का देने वाला है जो कोई इस पुराय  
कथा को ब्राह्मणों को सुनाता है उस  
को परम गति मिलती है जो कुरुवं  
स की कथा को पढ़ता है उस को बड़ा उ  
त्तम वंश ~~की~~ मिलता है प्रौर  
जो चातुर्मास में इस को सुनता सुना  
ता है उसके सब पाप दूर हो जाते हैं ॥

२१॥ ३१॥ इस महाभारत के पढ़ने  
वाले को वेद पारग जानना चाहिये  
क्यों कि इस में देव ब्राह्मण ऋषि वि  
ष्णु देवी प्रौर जो का महत्त्व वर्णन  
किया है ॥३३॥ ३५॥ जो कोई इस इति  
हास को श्राद्ध में ब्राह्मणों को सुनाता  
है उसके सितर पद पात्र वि हो जाते

॥३८१॥ प्रादि पर्व ॥

हैं ॥३६॥ प्रौर जो मनुष्य स्नान या  
प्रस्नान से इन्द्रियों के वषा होकर पाप  
करते हैं उन के पाप तुरन्त धूट जाते  
हैं ॥३७॥ इसमें भरत वंशियों के महा  
जन्म की कथा होने से इसका नाम महा  
भारत कह्यो प्रा है इस प्रर्थ को जानने  
में मनुष्य के पाप इस प्रकार से भागते  
जैसे सूर्य के तेज के लगने से घीत चला  
जाता है ॥३८॥ ३९॥ श्री व्यासजी ने इस  
इतिहास को नियम कर के तपमें स्थि  
त होती हुई नव वर्ष में बनाया है इससे ब्रा  
ह्मणों की भी नियम धरिके कहना प्रौर  
सुनाना चाहिये ॥४०॥ ४१॥ प्रयसा  
करने से सब पाप दूर हो जाते हैं धर्म की  
इच्छा रखने वालों को इसे प्रवक्ष्य सु  
नना चाहिये क्यों कि इस के सुनने  
से सिद्धी मिलती है मनुष्य स्वर्ग गति  
से उसे भोग नहीं भोगता है जैसे भोग  
इस महा भारत के पढ़ने से मिलते हैं



॥१८८॥ प्रादि पर्व ॥

६२॥६६॥ इस के सुनने से सुनाने  
से प्रसन्न मेध प्रौर राजसूय यज्ञों  
का फल मिलता है यह विज्ञ प्रौर  
वेदों के तुल्य महा भारत से पुराण  
की खान है जैसे समुद्र प्रौर समुद्र  
स्वर्ग तरलों का है ॥६५॥६७॥ जो  
कोई महा भारत की पुस्तक पढ़ने को  
दान देता है उसे सब पृथ्वी दान कर  
ने का फल मिलता है हे राजा यह क  
था प्रद्युम्न प्रौर पावन मया व विज्ञ है  
प्रौर पुराण विज्ञ प्रौर चारों फलों को  
देने वाली है प्रौर जो धर्म प्रर्थ काम  
प्रौर मोक्ष का सिद्धांत इसमें है वह प्रौर  
रजगह भी है प्रौर जो इसमें नहीं है  
वह कहीं नहीं है ॥६८॥५९॥ इति श्री  
भाषा महा भारते प्रादि पर्व लिखि  
षित मो प्रध्यायः ॥६९॥ तरे सठवां  
प्रध्याय व्यास जी की उत्पत्ति प्रौर  
रक्षणा उवों के यज्ञ के मुख्य मुख्य रा

॥२२६॥ > प्राद्वि पर्व ॥

जा बोके जन्म की संक्षेप कथा ॥  
बैष्णवायन बोले हे राजा पूर्व काल में  
वसु नाम एक पुरुष का बड़ा चर्म  
त्मा राजा था उसको > प्रहेर खिलने  
का वड़ा बत था समय बरवत जा ए  
कर > प्रो राजा राज छोड़ कर उग्रतप  
कड़ने लगा उस को तप को देव कर इन्द्र  
को संकाहुई > प्रौर सन्त वचन कह के  
इसी कारण से इन्द्र सब देवता > प्रों के  
साथ राजा के पास > प्राया > प्रौर साव  
धान वचन कह कर उस को तप से हट  
या ॥१॥६॥ पहले देवता बोले कि रा  
जा > प्राप का यह धर्म नहीं है > प्राप को  
तो पहले ही क्षत्री धर्म है जिस से स  
ब संसार की रक्षा होती है ॥५॥ फिर  
इन्द्र बोले हां राजा > प्राप को राज नीती  
के भाव के चलना चाहिये > प्रौर संसा  
र का पालन करना चाहिये ऐसा क



॥२८॥ प्राद्वर्ष ॥

रने से तुम को पुराय और सनातन लो  
क मिले जे ॥६॥ हम स्वर्ग वासी हैं  
और प्राप पृथ्वी की के रहने वा  
वाले हैं प्रब मेरे मित्र च प्राप हो  
कर इस पृथ्वी पर जो चन्देरी देस  
हैं वड़ा सुंदर हूं तुम वास करो यह देस  
पञ्चवैष्णव का हि तरकारी पुराय सारी  
और धनधान्य कारी हैं ह्यां की पृथ्वी  
धनरत्न और प्रने क गुणों से युक्त  
है ॥१॥८॥ और उस मै धर्म और धी  
नवान मनुष्य और बड़े संतो श्री सा  
धू लोग रहते हैं जूठ कोई नहीं बोल  
ता है सब गुरु भक्त होते हैं पुत्र पिता  
से जुड़े नहीं रहते बैल को धुरी में नहीं  
जोतते हैं सब व एों के लोग प्रय ना प्र  
पना धर्म करते हैं और मै तुम को प्रय  
ना विवाह जो देवताओं के योग्य हैं

॥ २८१ ॥ ० प्रादि पर्व ॥

० प्रौर स्फटिक की तरह उजाला है देता  
है इस पर चढ़ कर तुम नरसु पधारी देव  
ता की तरां विचरो ॥ १८१ ॥ ० प्रौर यह वे  
जनी माला जिसके कमल कभी नहीं भु  
र जाते जो इसको पहन कर जब लडाई में  
जावो तो तब यह पालों से तुम्हारी रक्षा  
करेगी ॥ १८५ ॥ इस कूंफ रहये जो कोई  
तुम को देखेगा वो तुमको धन्य कह  
गा ॥ १८६ ॥ इन्द्र के ऐसा कह ने से राजा ने  
चन्देरी देवा में वास किया ० प्रौर इन्द्र ने  
उस समय राजा को एक वांस की लक  
ड़ी दी ॥ १८७ ॥ ० प्रौर कहा किय हल कड़ी  
साधारण नहीं है हर संवत् के वीतने  
पर इस लाठी को तुम पृथ्वी में गाड़ कर  
मेरा ० प्रावाहन इसमें करना ० प्रौर मणि  
भूषण ० प्रौर बसन सहित वो उस उप  
चार से मेरा पूजन करना दूसरे दिन  
राजा चंदेरी ने बड़े उत्सव से उत्तरीती  
से इन्द्र का पूजन किया उसको देव क



॥३६२॥ प्रादि पर्व ॥

इन्द्र ने प्रीति से कहा कि राजा चंदेरा  
की समान जो राजा मेरा पूजन न करेगा  
उसके लक्ष्मी और विजय होगी और  
उसके देवा मैं सदा प्रान्द्र रहेगा तबसे  
उत्तम राजा वों के यहां प्रवतक इन्द्र का  
पूजन उसी प्रकार से होता है राजा चन्दे  
रा इन्द्र से ऐसा सत्कार बड़े प्रसन्न हुये  
और हर संवत् में इन्द्र का पूजन और  
रक्षा का धर्म से पालन करने लगे ॥  
२८॥ २८॥ इस के पीछे राजा के पांच  
पुत्र बड़े पराक्रमी और तजस्वी हुये  
एक का नाम बृहद्रथ जो मधदेवा में  
विवात है दूसरे का नाम प्रत्यग्रह  
तीसरे का नाम कुपावं जिसको म  
णिवाहन भी कहते हैं चौथे का ना  
म मावेल्नी और पांचवें का नाम पदु  
था इन्हीं पांचों को राजा ने अलग २२  
ज्येष्ठ कर राजा किया और वे पांचों

॥२५३॥ प्रादि पर्व ॥

प्रपने २ राज्य समेये प्रपने २ ना  
मके नगर वसा कर राज कर नें ल  
गे (उन पांचों के पांच) लगर वं पाहु  
ये ॥२६॥ ३२॥ राजा बसु इन्द्र के ह  
ये हुये विमान पर प्रा का पा में बैठे  
रहते और विचरा करते थे और उन  
के पास गंधर्व और प्रसर प्रा  
ती थी ॥३३॥ इस के पीछे राजा का नाम  
(उपरि चर विख्यात हुआ) उस राजा को  
चंदेरी नगर के समीप एक पुरा कि म  
ती नाम नदी बहती थी उस नदी  
की को काम के बस हो कर को ला  
हल नाम पर्वत नें रोका ॥३४॥ राजा  
ने कोष कर के उस पर्वत को लाते सा  
रा और उसमें राक विवर हो गया कि  
उसकी राह बह नदी बह निकली ॥३५॥  
को लाहल के संग मकर नें सें उस नदी  
के गर्भ में उस रहा और उस के



॥ ३८४ ॥ प्रादिपर्व ॥

राक पुत्रहुवा प्रौर राक लडकी ७  
त्यन्त रुईन सदी ने उन दोनों को रा  
जा की प्रीति के कारण से राजा को निवे  
दन किया ॥ ३७ ॥ और उस गिरि की क  
न्या को प्रपत्नी पत्नी बनाया थोड़े दिनों  
में वह गिरिका नरतुवती हुई ॥ ३८ ॥ पर  
न्तु जिस दिन वह गिरिका नरतुस्तान  
करने कुंथी उस दिन पितरों ने राजा  
से कहा कि प्राज मृगमार कर प्राध  
करो राजा उनको प्रासा के प्रनुसा  
र वन को चला गया और गिरिका के  
स्व को पाद कर के राजा को सब प्या  
हुवा ॥ ३९ ॥ ४० ॥ जब वन में चौहं चो  
तव दरवता क्या है कि वसंत नरतु  
ने उस वन को प्रत्यन्त पोभा यमा  
न कर रक्खा है प्रने तरह के मीठे  
फल देने वाले वृक्ष जैसे प्रणोक च  
म्यपक, आम, प्रतिमुक्त, पुन्नाग,  
वकुल, लोभाहल, काहल, तारि

॥ २६५ ॥ प्रादि पूर्व ॥

केल, चन्दन, प्रज्ज्ज, प्रादि लगे  
रुये थे हे चारो प्रोर भौरे गुंज  
रहे हैं, प्रोर को किलावों के ऊँके ऊँ  
उज्ज्ज तहा मधुर घोष कर रहे हैं ॥ २६ ॥

॥ ४३ ॥ राजा का मकी प्रज्जि से  
प्राविष्ट उस ~~प्रज्जि~~ प्रनन्द को  
देखता हूँ प्रादैव योग से एक प्रणो  
क देह के पास पौह चा वह प्रत्यक्ष सु  
गात्रित फूलों के उच्चै से फूला हुआ  
था राजा उसके निचे बैठ गया प्रोर में  
धुन के प्रात नन्द को पान लगा उपरान्त  
उस वन में ~~धुम~~ धुमने लगी हूँ हूये रा  
जा का वीर्य गिरा ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ राजे ने  
इस बात को जान कर वीर्य को वृक्ष  
के पत्र में ले लिया ॥ ४६ ॥ प्रोर इस वि  
चार से के मेरा वीर्य प्रोर में सस्र क मा  
र स्त्री का चरु को लव्यर्थ नहीं प ॥ ४७ ॥



॥२५६॥ > प्रादिपर्व ॥

> प्रपने विमानपर बै ठेहये वृये न नाम  
पक्षी से कहा कि यह मेरा वीर्य है इसको  
रुज ल्दी ले जा कर मेरी गिरिका नाम  
स्त्री को दे ॥५०॥ ॥५१॥ वृये न पक्षी यह  
सुन कर वहां से (उसका वीर्य को ले कर  
चला वडा जोर से उड़ा जल्दी ॥५२॥ राह  
में (उसको जाते हुये एक दूसरे को वृये  
न पक्षी ने उस पक्षी देखा और उस वी  
र्य मुक्त पत्ते को मास समझ कर उसके  
उसके सामने <sup>प्र</sup>पा ॥५३॥ वास पौहं चा  
तव दो नों प्राप समे चूं च मार मार कर  
लड़ने लगे और वी <sup>प्र</sup> वीर्य यमुना  
में गिर पडा ॥५४॥ दैव जो ग से उस न  
गह जहां वीर्य गिरा था एक प्रादू का ना  
म अप्सरा जो एक ब्राह्मण के सारा पसे  
मछली हो गई थी यमुना में डोलती फि  
रती हुई हुई पहुंची ॥५५॥ और उस वी  
र्य को खा गई ॥५६॥ तब इस महीने हु  
ये तब (उस मछली को देव घो ग से

के ॥ २८७ ॥ प्रादिपर्व ॥

जीवरो ने उस मछरी को पकड़ लिया  
और उस पेट चीरने लगा उस मछरी  
का पेट में से एक कन्या और एक लड़का  
वैदाहवाप उन को देख कर जीवरो  
ने प्राश्न्यनां प्रचरत्र माना और उन  
दो नुवों को ले जाकर राजा के प्रिय बना  
कर दे दिया ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ राजा ने उस ल  
ड़के को ले लिया और वही लड़का धर्मा  
त्मा और सत्य संकल्पमत्स्य नामरा  
जा हुआ और वह प्रपरा स्त्रापसे जो  
मछली हो जाइ थी और भगवान् ने उ  
स संयह कहा था के तू दो मध्य नुष्यो उ  
त्पन्न करेगी उस समय तू इस प्राप से  
धूर जायगी जीवरो के पेट काटने पर  
दिव्य ससुपधारक प्राकास कुंचनी जाइ ॥  
६० ॥ ६२ ॥ और उस कन्या को जो बड़ी  
जुएवान् और ससुपवाली थी राजा ने  
जीवरो देकर कहा के यह तुम्हारी कन्या  
हो ॥ ६३ ॥ ६५ ॥ धीवरो ने उस को ले



॥३८८॥ श्री दिवर्ष ॥

लिया, प्रौर, प्रपनी कन्या के समा  
नया ला, प्रौर उसका नाम सत्यव  
ती रक्षा परानुत उसका जन्म म  
चली के होने से के कारण से उसका  
थोड़े दिनों तक मध्य स्थिति थी  
नी नाम रहा ॥६६॥ थोड़े दिनों में वो क  
न्या स्याणी हो गई, प्रौर पिता की प्रा  
प्ता से पिता की नाव के महात्मा, प्रो की  
सेवा के लिये यमुना में चलाया कर  
ती थी एक समय हुआ परा पार ऋषि  
तीर्थ यात्री करत हुये, प्रापुं चै, प्रौर  
उस कन्या के सुन्दर सस्य, प्रौर प्र  
दु मुस्मान को देख कर मोहित हो जा  
ये ॥६७॥ ६८॥ प्रौर जब नाव में बैठ  
कर वीच धारा में पोहूंचे तब का प्रदेव  
के वस में हो कर बोलने के हु कल्याणी  
तुमरे स्थ थर मरा कर वो कन्या यह  
वात सुन कर बोली के महाराज  
वीर पार दोनुं, प्रौर ऋषि गए एव  
हुये ॥६९॥ के दे ल ने हुये मेरा प्राप

॥२६६॥ प्रादिपर्व ॥ ने ६

कासमागमवधों कर होय यह सुन क  
र परासर जी नै रोसा निहार प्रघट कि  
या की चोरो प्रौर वडा प्रन्ध कार घणा  
या ॥६६॥ ११॥ सत्यवती उस प्रन्ध  
कार को देख कर चकि तहुई प्रौर उन  
को बडा तपस्वी समझ कर नेजित  
होकर ॥१२॥ बोली कि महारजमें  
प्रभी कन्या हूं प्रौर पिता की प्रा  
साके प्रनुसार चलती हूं प्रापके  
संजम कर सें मेरा कन्या भाव मि  
जाय जा प्रौर कन्या भाव मिटने पर  
क्यों कर धर जा उं जा प्रौर जीती हूं  
ॐ जी ॥१३॥ १४॥ इस बात को  
प्राय विचार कर तीजिये फिर जो च  
हे सो करो यह सुन कर मुनी खर प्रि  
ती पूर्वक बोले कि तूम जो मैं हूं सो  
कर तेषा कन्या भाव बनत है म



॥३००॥ प्रादि पर्व ॥

जायगा और जो कुछ तुझे बर मां  
मांग नो है सो मांग ॥१५॥ १६॥ मे  
रा कहा कभी झूठ नहीं होता सत्य  
वती नै कहा की मिरा राज मैरी देह  
सुगन्धित हो जाय ॥११॥ मुनी स्व  
रने उसको मनो बांछित बर दिया  
और बर पाकर उसकी देही प्रत्न  
विन सुगन्धित हो जाइ और  
उसको नाम गंधवति पृथ्वी पर वि  
व्यात रुवा उपरांत जे बमनुष्यों को  
ने उसकी देह की गंध को राक्यो ज  
न चार को सब तक सूंघात बसे उ  
सका नाम योजन गंधा विख्यात रु  
प्रा ॥१२॥ १३॥ इस के उपरान्त परा  
पार क विने उस कन्या से उसी ज  
उह यमुना के द्वीप में भोग किया  
और उस कन्या ने तुरंत गर्भ को  
उद्धारण कर के उसी यमुना के

३०६॥ प्राद्वर्ष॥

क्षीपमें व्यासजीको उत्पन्न किया व्या  
सजी उत्पन्न होते हीं वहां से तप कर  
ने को चले गये और माता से यह क  
ह गये कि जिस समय नू याद करैगी  
में प्राजा उं गा ॥ ८१ ॥ ८३ ॥ व्यासजी  
को नाम दै पावन मुनि होने का यह  
कार है कि वह यमुना के क्षीप प्रथमत  
टापू में उत्पन्न हुये और इसके पीछे  
जब उन्होंने ब्राह्मणों पर प्रवृत्त  
कर के मनुष्यों की प्रायु और प्राप्ति  
को और युगों के प्रंत में धर्म की ह  
नी देख कर देह का विस्तार और  
विभाज किया तब से उनका नाम  
व्यासजी कर के विख्यात हु प्रा ॥  
८४ ॥ ८५ ॥ उन चारों क्षेत्रों में  
को और इसमें पांचवें महा भारत



॥३०२॥ प्रा० सुर्व॥

वेदको व्यासजीने सुमंत, जैमिन,  
कैल, प्रौरवैषा म्यायन, प्रादि पि  
ष्योको, प्रौर, प्रपनेपुत्रसु कदेवजी  
को पढाया, प्रौरवैषा म्यायन के  
द्वारा यह पं चवां महाभारत वेद  
संसार में प्रचल रहा ॥८६॥८७॥  
इतनी कथा सुनाकर सूतजी को  
लेहे ऋषियो इसके उपरान्त बड़े  
यष्टास्त्री, प्रौर परा ऋषी भीष्म  
जी, जं जाके जर्मसे, प्रषवसु  
वोंके, प्रंससे राजा सानो नु के पुत्र  
उत्पन्न हुये ॥८८॥ प्रौर धर्म  
राजपुत्र दूयोनी में, प्रवतार ले कर  
विदुर के नाम से प्रकर हुये पुत्र दूयो  
नी में जन्म लेने का कोर ॥ ए यह  
था की एक, प्रणी माहुय नाम  
वृंणोस्त्री वसेवेना, प्रौर वेद पा

॥३३॥ प्रादि पर्व ॥

ही ऋषि धेऊन को चोरी का जूठा  
पाप लं जा कर पूरुली दी गई जेव  
यमराज के पास पहुँचे तब ऋषि ने  
कहा की हमने कोई पाप संसार में नहीं  
किया था हाँ बालापन में एक समय  
एक टटी हरी को तिन के से छेदा था  
सो वह छोड़ा सा पाप क्या हमारी महा  
उज्जतप स्या से भी नाश नहीं हुवा  
ब्राह्मण का वध करना पीड़ा देना प्रौ  
२ प्रवृत्ति पना न कर सब संसारी प्रा  
णि को के के वध से अधिक है इस  
कारण से हम तुम को पाप देते हैं  
कि तुम पृथ्वी पर जा कर परदूयोनी  
में जन्म लो ॥२६॥ २७॥ इस के पीछे  
जब लगण से मुनियों के समान सं  
गय सुख त उत्पन्न हुये ॥२८॥ प्रौ  
२ कुंती के गर्भ से कुमार प्रवस्थामें  
सूर्य के वीर्य में कंडल पौर कवच



॥३०४॥ प्रादिवर्ष ॥

धारण कि ये ह्यै कर्ण प्रघट्ट आ  
॥६५॥ इसके अंतरांत श्रीविष्णु भ  
गवान् जो प्रतादिना पारहित् ज  
गत का कर्ता प्रभु, प्रप्रकर्त, प्रवि  
नायक, ब्रह्म, प्रधान, त्रिगुणात्म  
क, इति ~~प्रकार~~ कर्तृ प्रभु  
प्रात्मा, प्रव्यय, प्रकृति, उत्पत्ति  
कानिमित्त, प्रभु, पुरुष, विश्वक  
र्मा, तत्त्व, योग, ध्रुवाक्षर, प्रधातृ  
प्रणवनाम ब्रह्माक्षर कै, प्रक्षर, प्र  
नन्त, प्रचल, देव, हंस, प्रधातृ  
संघास, प्राश्रमस्थ, नरायण प्र  
भु, धातार, प्रज, प्रव्यक्त, प्रव्य  
य, कैवल्य, निर्गुण, विश्वरूप,  
प्रतादि, प्रज, प्रव्यय, पुरुष, सम  
र्थ, कर्ता, प्रौरसवप्राप्तियों का पितृ  
मह हे उनमें ने धर्म की रचा, प्रौर सं





॥३०६॥ प्रादि पर्व ॥  
 तस्यैन्द्री कृष्ण प्रद्युम्न ॥१०५॥१०६॥  
 फिर प्रह्लाद का पिछा न जन जित  
 प्रौर सुवल उत्पन्न हुये ॥१०७॥ इन  
 की संतान देव के कोष से धर्म ना सक  
 हुये प्रौर जंघार देस के राजा सुवल  
 के पाकुनि नाम पुत्र प्रौर राक जंघा  
 री नाम कन्या उत्पन्न हुई उस का  
 विवाह धर्तराष्ट्र से हुआ प्रौर उस  
 के दुर्योधन आदिक पुत्र हुये प्रौर फि  
 र व्यास जी से विचित्र वीर्य की स्त्री के  
 गर्भ से धर्तराष्ट्र प्रौर पांडु प्रौर शू  
 द्रयोनी से विदुर जी उत्पन्न हुये वि  
 दुर जी धर्मवान प्रौर निष्ठा पथे १०८  
 ॥११०॥ इसके उपरान्त राजा पांडु  
 के दो स्त्रियों से पांच पुत्र देवता प्रौर  
 केतुल्य पराक्रमि उत्पन्न हुये राक  
 का ना पृथ्वि फिर उस से छोटे दूसरे  
 का नाम भीमसेन प्रौर तीसरे नाम

॥३०॥ प्रादि पर्व ॥

प्रज्जैन चौथे कान कुल प्रौर पांचवे  
काना सह देव था इन में से पहिले ती  
नों क्रम से धर्म राज वायु प्रौर इन से  
प्रौर पिछले दो नुं प्रश्वती कुमारी से  
उत्पन्न हुये ॥१११॥ ११३॥ प्रौर धृत  
राष्ट्र के भी सौ पुत्र दुर्योधन आदिक प्रौर  
रघुपुत्र प्रौर कर्ण उत्पन्न हुये ॥११४॥  
इन में से ११ पुत्र जो मरार थी थे उनके  
नाम यह है के कर्ण, दुषणासन, दुः  
सह, दुर्मर्ष, विकर्ण, चित्रसे  
न, विविंशति, जय, सत्यवत, गुरु  
मित्र, प्रौर वेण्यापुत्र युयुत्सु ॥११५॥  
११६॥ इनके पीछे श्री कृष्ण का भान  
जा प्रौर पांडु वों का पोता प्रभिम  
न्युसुभद्र के गर्भ से उत्पन्न हुआ ॥  
॥११७॥ प्रौर द्रौपदी के भी पांचों पा  
रुवों से पांच पुत्र प्रत्यन्त विरूपका



॥३०८॥ प्रादिपर्व ॥

न उता न रुये ॥११८॥ इनमें से युधि  
ष्ठिर के पुत्र का नाम प्रतिबिन्ध्य  
भीमसेन के पुत्र का नाम सत सो  
म प्रजुन के नाम श्रुत कीर्ति नकु  
ल के पुत्र का नाम सतानीक  
प्रौर सह देव के पुत्र का नाम श्रुत  
सेन था प्रौर उसी समय मैं छुड़वा  
राक्षसी के भीमसेन से घटोत्कच  
नाम पुत्र पैदा हुआ ॥११९॥ ॥१२०॥  
प्रौर राजा दुषद को पिरावंती कन्या  
उत्पन्न हुई प्रौर उसको स्थूरा नाम  
मय देने प्रपना पुरुष त्वदेकर प  
रुष किया ॥१२१॥ इतकथा सुना  
कर सूनजीवो लेहे रूषियो कुरु प्रौर  
र पांडुओं के पुत्र मैं कइ लाख राजा  
इकठे रुये थे उन के नाम वर्षों में भी न  
ही कह सता रुपरान्त जो जो उन में

॥ ३०८ ॥ प्रादि पर्व ॥

सुरव्य सुरव्य थे उनको मैं नें उपर व  
र्णन किया है ॥ १२१ ॥ १२३ ॥ इति श्री  
भाषा महाभर्ते, प्रादि पर्वणि त्रयवि  
तमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥ चौसठवां प्रधा  
य ॥ प्रसुरों का पृथ्वी पर जन्म लेना व  
पृथ्वी का उन के, प्रथम से दुःख  
पाकर जहाजी के पास जाना, और ज  
हाजी का सब देवताओं को पृथ्वी का  
भार दूर करने को पृथ्वी पर जन्म लेने  
की, प्रोसादेना ॥ सूत जी बोले वे हे  
दियो राजा जन्मे जय उपर वर्णन के  
सिद्धि कथा हैं सुत कर वैया म्पायन  
जैसे बोला कि महाराज मैं नें उन को  
जो काबल तो सुनायानु, प्रो उवाहा  
त से महारथी राजा लोग जिन्हें नें दे  
वता, प्रों के पाट्या पृथ्वी पर जन्म लि  
या उन की कथा भी सुना चाहता हूँ



॥३६०॥ प्रादिवर्ष ॥  
 कृपाकर के उनकी कथा भी समु  
 का कर कहि ये ॥२॥ २॥ यह सुन  
 कर वैषाम्यापनजी बोले कि हे  
 राजन यह देवता प्रों की उन्मात  
 है मैं ब्रह्माजी को नमस्कार कर के  
 उम्हारे सामने वरों न करत हूँ  
 तब जंदगिने के पुत्र परदा राम  
 जी महाराज की सबेरे पृथ्वी  
 को दक्षियों से रहित कर के भहे  
 नृपर्वत पर सोम्य स्वभावधार  
 एकर के तपस्या करने को चले  
 गये ॥४॥ तब सब दक्षियों की ई  
 स्त्रीयां ऋषियों के पास जाई ॥५॥  
 और कहा के महाराज ऐसा की  
 जिये कि जिसमें दक्षियों का व  
 पा पृथ्वी पर रहा प्रवृत्त महा

॥ ३९९ ॥ प्रादिपर्व ॥

तपस्वी ऋषियों ने उन की प्रिय  
वात सुन कर ऋतु स्नान कर ने प  
र उन के साथ भोजन कर के वीर्य  
दान दिया परन्तु किसी ने उन के  
पाथ का मवपा हो कर भोजन ही  
कि या उन ऋषियों की हजारे स्त्री  
यों ने गर्भ धारण किया और उ  
न से हजारों बड़े बड़े पराक्रमी दो  
त्रिपुत्र और कन्या उत्पन्न हुई  
और थोड़े ही काल में धर्म करने  
में वह ऋषि लो ७ ग ॥ प्राप्त बड़े कि  
संपु ८ र्ण पृथ्वी और वन और प  
हाड़ों में फामु दू तक भर गये  
और उन के पारी रति रोगी और  
प्रायुला खबर सकी होती थी  
क्यों कि वह लो ७ ग धर्म पर चलते



॥ ३९३ ॥ प्रादि पर्व ॥

थे और स्त्री के पाथ संगम कर तुम  
स्नान करने पर करते थे काम बस  
होकर कभी कोई स्त्री के पाथ भोग  
नहीं करता था ॥ १३ ॥ राजा लो  
ज पृथ्वी का पालन धर्म से करते थे द  
राउ पोखुण्य जय मनुष्यों को धर्म  
से डंढ देते थे सेवा करने में ब्राह्म  
ण प्रादि चारों वर्गों उन के राज में  
प्राप्त नृ पूर्व कर रहे थे ॥ १४ ॥ १५  
राजा लो जों के इस कर धर्म के सा  
थ राज्य करने में इन्द्र सब देवों में  
प्रभु रह बरखा करते थे और  
उस से प्रजा का पालन होता था १६  
उस समय में कोई मनुष्य बाल प्र  
वस्था में नहीं मरता था और ना को  
ई स्त्री छोड़ी मर में वच्चा जनती  
थी पुरुष लोग स्त्रियों के साथ सं

॥३१३॥

जमयवा प्रवस्थाके प्राप्त होने पर करते  
थे ॥११॥ दत्त जी लोग बड़े २ यम जि  
नमें बड़ी २ दक्षिणा दी जाती है कर  
ते थे ब्राह्मण लोग विना भ्रिये वे  
द पछाते थे और वेदों का उच्चारण  
पूरु द्रों के सामने नहीं करते थे १२  
॥३॥ वशिष्ठ वे ती वैलों में कर  
ते थे परन्तु प्राम वैलों को धुरी में  
नहीं जोत के जो वैल दुबले होते थे  
उनसे काम नहीं लेते थे और उन  
का पालन करते थे और गायों का दू  
ध तब तक ही दूधते जब तक बछड़े  
की आधार केवल दूध फि रहता था  
और वलिकु लो ज कभी कपट के  
बाटों से सौदा नहीं तोलते थे १३  
१४॥ सब काल में प्रपनी २ ४ ५



॥ ३८४ ॥ प्रादिवर्ष

पनी कल के पुल और फूल प्र  
वृत्ती तरह होते थे जो और स्त्री प्र  
पने २ धर्मों को प्र वृत्ती तरह क  
हे थे ॥ काल पर वच्चा जननी  
थी इस प्रकार से सब पृथ्वी में  
सुख और प्रानन्द रहता था चा  
तों व र्ण प्रपने २ धर्मों को प्र  
वृत्ती तरह कर ले थे ॥ २३॥ २५॥ इस  
प्रकार से जब पृथ्वी में सत युग वा  
प रहा था उस समय पृथ्वी में उन  
दैत्यों ने प्राकर जन्म लिया जो  
देवताओं से युद्ध में हारने के का  
र से स्वर्ग से निलक्षित थे उन दै  
त्यों ने प्राकर मनुष्य छोड़ा हाथी  
गाय भैंस उंठ गधा और मूँगा

॥३९५॥ आदिपर्व

आदि सब यो नियों में जन्म लिया  
और उन के पीछे दिति और दनु के  
पुत्र दैत्यों ने राजा लो जो में जन्म लि  
या छोड़े दिनों में ये दैत्य पृथ्वी पर ज  
न्म ले ले कर समुद्र तट पृथ्वी पर  
कैल जाये और प्रधर्म का आचर  
ण करने लगे उन पर कमी यद्य  
मंडी मद मत और विवेक हीन प्र  
सुरों से ब्राह्मण आदि चारों वर्णों  
को बड़ा दुःख हुआ वह लो ज जीवों  
को मारने और क्रूरियों को दुःख  
देने लगे जब से सेर प्रनेक प्रध  
र्म पृथ्वी पर होने लगे तब पृथ्वी  
पृथ्वी उन दैत्यों के बोज़ को नहीं सह  
सकी और सब देवताओं के फिता  
मह ब्रह्मा जी के पास गई ॥३६॥ ३७  
और उन ही सभा में जहां उत्तम



॥३१६॥ प्रादिपर्व॥

ब्रह्मण बडे २ ऋषि संपूर्ण देवता  
अंधर्व प्रौर प्रपारा वै ही धी जा  
कर ब्रह्मा जी की वन्दना करी प्रो  
र लोकपालों सहित स एण जात हो  
कर प्रपनी व्यवस्था सुनाते ल  
गी ॥४०॥ ४२॥ परन्तु ब्रह्मा जी  
जो संपूर्ण जगत् के रचने वाले स्व  
यंभू प्रधानात्मा ईश प्रथार वि  
ष्णु श्रुः पराभू प्रौर प्रजपति  
है पृथ्वी की सब व्यवस्था को पह  
ले ही जान गये प्रौर उससे बोले  
॥४३॥ ४४॥ हे पृथ्वी मैं जानता हूं  
जिस कार ए से लूह्यां प्राई है प्र  
वतु जो प्रौर मैं तेरे काम के करने  
के उपाय मैं देवतां प्रों को नियुक्त  
करता हूं ॥४५॥ ऐसा कह कर ब्रह्मा  
जी ने पृथ्वी को विदा किया प्रौर

॥३११॥ ७ प्रादिपर्व ॥

सब देवताओं को ७ प्रासादी ॥४१॥ के  
तुम लो ग पृथ्वी का भार दूर करने को  
७ प्रयने २ ७ प्रंपा से मृत्यु लोक में जन्म  
लो ॥४८॥ ७ प्रौर गंधर्व ७ प्रप्सरा ७ प्रों  
को भी बुला कर यही ७ प्रासादी ॥४८॥  
देवता ७ प्रादि सबों ने ब्रह्माजी की ७ प्रा  
सा को पिर रघर धर ७ प्रौर ॥५०॥ वहां  
से सब के सब देवता श्री विष्णु म  
गवान के पास जो पांख चक्र गदा  
पद्म ७ प्रौर पीतांबर के धारण कर  
ने वाले तीक्ष्ण प्रभा वाले पद्मना  
भ ७ प्रसुरनासक बड़ी चौड़ी घाती  
पर द्रुघिर खने वाले प्रजापति के प  
ति देव, सुरनाथ ७ श्री वासांक ७ ह्य  
दृषिके स ७ प्रौर सब देवताओं से पू  
जित हैं बैकुंठ धाम में जा कर विनय  
करी ७ प्राप भी पृथ्वी भार दूर करने



॥ ३१८ ॥ प्रादिपर्व ॥

कौ जन्मलीजिये विष्णु भगवा  
न ने कहा प्रच्छा रो साही करै जो

॥ ५९ ॥ ५५ ॥ इति श्री भावामहा  
भार्ते प्रादिपर्वणि चतुः षष्टि  
तमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥ वै सठवां प्र  
ध्याय ॥ सब सुर प्रसुर दैत्य दा  
नवगंधर्व प्रौर प्रप्सरा प्रों के  
प्रंदावतारण की कथा ॥ वै कां  
पायन बोले है राजा जन्मे जय इन्द्र  
प्रादि सब देवता प्रों का विष्णु  
भगवान के साथ मंत्रो ने के  
पीछे इन्द्र ने सब देवता प्रौर गंध  
र्व प्रादि को मरत्यु लोक में ज  
न्म लेने की प्रादी प्रौर प्रासा  
देकर वहा सैं चले गये ॥ १ ॥ २ ॥  
इसके पीछे सब देवता प्रों ने प्रप  
नी र हचिके प्रनुसार स्वर्ग सैं प  
र्धी में जाकर ब्रह्म ऋषि प्रौर रा

" ३१६॥ प्रादि पर्व ॥  
 जन्म विधौ कै बं पा मै प्रवतार लि  
 या प्रौर सब दैत्य दानव प्रौर रा  
 दसों को मार डाला प्रौर दैत्य लो  
 ज उन प्रबल देवों को बाल अवस्था  
 में भी न मार सके ॥ ३॥ ६॥ यह सु  
 न कर राजा जन्मे जयने कहा के  
 महाराज मैं सब सुर प्रसुर दैत्य  
 दानव गंधर्व प्रपसरा प्रौर मनु  
 ष्यों के प्रवतार की कथा विस्तार  
 पूर्वक सुना चाहता हूं प्राय कृपा क  
 र के उन के संभव की कथा वर्णन  
 की जिये ॥ १॥ ८॥ यह सुन कर वै  
 शम्पायन बोले हे राजन मैं ब्रह्मा  
 जी को नमस्कार कर के सब देवता  
 प्रौर के सम्भव की कथा कहता हूं  
 सुनो ॥ ९॥ पहले ब्रह्मा जी के द्वा  
 नसी पुत्र उत्पन्न हुये एक का नाम  
 मरीच दूसरा प्रविती सरा प्रक्षीर  
 सचै



॥ ३२ ॥ प्रादिपर्व ॥  
 रघु ठा कतु था कि रमरी चके क  
 स्यपजीपुठे नहुं ये प्रौर कपुय ॥  
 जीसें यह सेव सरखि हुई प्रौर दत्त  
 के १३ तेरा कन्या उत्पन्न नहुई  
 उनके नाम ये हैं ॥ १० ॥ ११ ॥ प्रा  
 दिति १ दिति २ दनु ३ काला ४ द  
 ना ५ सिं हिका ६ क्रोधा ७ प्रा  
 द्या ८ विस्वा ९ विनता १० कपि  
 ला ११ सुनि १२ कदू १३ इन स  
 वका विना हरु पयपजीसे हुवा  
 प्रौर उन को पुत्र प्रौर पौत्र प्रन  
 गिनत हुये ॥ १२ ॥ १३ ॥ प्रादिति  
 कै बा हरु सूर्य जो भुवने पवरक  
 हलाते हैं उत्पन्न हुये उनके नाम  
 ये हैं ॥ १४ ॥ द्याता १ मित्र २ प्र  
 र्यमा ३ वाक ४ वसु ५ ॥ अंश ६

ॐ ३२१॥ ७ प्रादि पर्व॥

भग १ विवस्वान् च पूषा च सविता १०॥

१५॥ त्वष्टा १२ विष्णु १३ इन्द्र सव  
में छोटे ७ प्रादित्य ७ एमैं सबमें ७ प्राधि  
कहैं ॥ १६॥ ७ प्रौर दिष्टु तिके एक प  
त्र हिरण्य राय हिरण्य कपि पुन  
सी बड़ा प्रतापी हुवा ७ प्रौर उस के पां  
च पुत्र हुये पहला प्रह्लाद दूसरा संह्रा  
द तीसरा ७ प्रनु ह्राद चौथा पि वि ७ प्रौर  
पांचवां वाष्कल था ॥ १७॥ १८॥ प्रह्ला  
द के तीन पुत्र हुये एक का नाम विरोच  
न दूसरे का नाम कुंभ ७ प्रौर तीसरे का  
नाम नि कुम्भ था ॥ १९॥ विरोचन के  
बड़ा प्रतापी बलि नाम पुत्र हुवा वह पि  
वजी का बड़ा भक्त था जिसका नाम  
महा काल भी विख्यात है ७ प्रौर द के  
४० पुत्र हुये उनमें से नौ विख्यात



॥३२३॥ प्राद्विपर्व॥

हैं उन के नाम ये हैं विप्र चित्त, पां  
वर, नमुचि, पुलोमा, प्रसिलोमा,  
कैशी, दुर्जय, दानव, प्रयः पिरा,  
प्रपव पिरा, प्रपव पांकु, कर्तमान,  
स्वर भानु, प्रपव पति व्रषप की, प्र  
जक, प्रपव जीव, सूक्ष्म, लुहंड, ए  
कपाद, एक चक्र, विस्वपात्त, महो  
दर, निचंद्र, कुपट, कपट, पार  
भ, पालभ, सूर्य, प्रौरचन्द्रमा  
२॥३६॥ जिन सूर्य प्रौरचन्द्र  
मा की गिनती देवताओं में है वे सूर्य  
प्रौरचन्द्रमा दूसरे हैं ॥३७॥  
दनु के पुत्रों में जो पुत्र वंश कर  
ता हूँ उन के नाम यह हैं एकाक्ष, म  
तपवीर, प्रलंब, नरक, वातायि,

॥३३३॥ प्राद्विपर्व

पात्रतपन, महा, प्रसुर, पाठनाम, ग  
विष्ट, वनाय, दीर्घ, त्रिह्वा, दानव, प्रौ  
र इन्द्र पों के पुत्र पौत्र, प्रस व्यहये  
॥३८॥ ३०॥ प्रौर सिंधिका के ४ पुत्र  
हुये पहला सूर्य, प्रौर चंद्रमा को मर्द  
नकरने वाला राहु, दूसरा सुचन्द्र,  
तीसरा चंद्रहर तार, प्रौर चौथा च  
ंद्र प्रह मर्दनर्था ॥३९॥ प्रौर को  
धा के त्रै रस्वभा वर विने वाले, प्र  
न गिनती पुत्र पौत्र उत्पन्न हुये  
॥४०॥ ३१॥ प्रौर इ के पीछे द  
नय के चार पुत्र विदार, वलवी  
र, प्रौर दत्त वनामी सब दानकों  
में उत्तम हुये ॥४१॥ इनके पीछे का  
ला के चार पुत्र विनाशान, क्रोध,  
क्रोधहंता, प्रौर क्रोध पात्रनामी  
बड़े बलवान विख्यात, प्रौर काल  
के तल्य पदार के करने वाले प्रकार



॥३२४॥ > प्रादिवर्ष ॥

हुये ॥३४॥ ३५॥ इन > प्रसुरों के ३  
विपुत्र शुक्रजी (उपाध्याय) दृष्ट औ  
१ शुक्र के चार पुत्र त्वष्टा, प्रधर  
> प्रथम त्रिनामी, प्रौर दो, प्रौर जो स  
ध के समान तेजस्वी, प्रौर ब्रह्मल  
क में रहते थे > प्रसुरों को य भ कराने  
वाले हुये ॥३६॥ ३७॥ इन नी कथा सु  
ना कर वै दाम्पायन जी बोले हे राज  
न यह प्रसुरों के वंश की कथा जो ह  
मने पुराणों में सुनी थी > प्राय के सा  
मने कही परन्तु इन सब की संतान  
का हाल नहीं कह सका हूं क्योंकि उ  
नकी गिनती नहीं हो सकती ॥३८॥  
॥३९॥ विनता के पुत्रों को नाम थे  
हैं त्वष्ट, तद्व्य, > प्ररिष्ट नेमी, गरु  
ड, > प्ररिण, > प्ररिणी > प्रौर बरुणि  
॥४०॥ > प्रौर दोष, वासुकि, तत्तक,

॥ ३२५ ॥ 'प्रादिपर्व' ॥

कूर्म, प्रौर कुलिक, कद्रू के पुत्र हैं ॥ ४१ ॥  
इन के पीछे मुनी देवी के १६ देवगं  
धर्व उत्पन्न हुये उनके नाम यह हैं भी  
मसेन, उग्रसेन, सुपर्ण, वसुण, जो  
पण्डित, धतराघ, सूर्यवर्चा, स  
त्यवाक, प्रर्कपर्ण, प्रयुत, भीम, चि  
त्ररथ, पालिपिरा, पर्यन्त, कलि, प्रौ  
रनारद ॥ ४२ ॥ ४४ ॥ इसके उपरान्त  
प्राधा के पुत्री, प्रौर १० पुत्र उत्पन्न  
हुये उनके नाम यह हैं पुत्री नामा नी,  
प्रनवद्या, मनुबंणा, प्रसुरा, मर्ग  
णप्रिया, प्रस्था, सुभगा, प्रौर भा  
सी पुत्र नामा नी ॥ सिद्ध, पूर्ण, बर्हि,  
पूर्णपु, ब्रह्मचारी, रति, उण, सुपर्ण,  
विष्णु बसु, भानु, प्रौर सुवन्द ॥ ४५ ॥  
॥ ४६ ॥ प्राधा के ये पुत्र देवगंधर्व  
कहलाते हैं, प्रौर इन के उत्पन्न होने  
के पीछे पाट ॥ के देव ॥ सिद्धों से, प्र



॥३३६॥ प्रादिवर्ष

परा, प्री के बंधा उत्पन्न हुये नाम  
रुम, प्रा जो वरु रान कर ते है ॥४८॥

६६॥ प्र लंबु वा, मिश्र, के  
प्री, विद्युत्परी, रक्षित, रक्षा

रक्षा तिलोत्तमा, प्ररुणा, रक्षा

रक्षिता, रक्षा, मनोरमा, के

पिनिसु, वाहु, सुरता, सुरजा

प्रोर सु प्रिया, प्रोर गंधर्वों में, प्र

ति वाहु, हाहाहूहू, प्रोर सुं बरु व

डेतामी हुये ॥५०॥ ५१॥ इतनी क

थासुना कर वै पा म्या य नजी वो

ल है जन्मे जय मैं ने तुम को, प्रर

ते वा सारा जो गंधर्व, प्रपरा

प्रोर कपिला की संतान की कथा

परा रों के, प्रनु सार सु नाई, प्री

रसम्यूर प्राणी गंधर्व, प्रका

॥३३१॥ प्रादिपर्व

सर्व, सुपर्ण, इन्द्र, मरुत्तगण, जो  
ब्राह्मण, और पवित्र पुरुषों के उत्प  
न्न होने का हाल भी वर्णन किया यह  
सब कथा, प्राय के बहाने वाली, और  
धन, और सुख के देने वाली, और स  
दा सुनने के योग्य है जो मनुष्य इस क  
था को ब्राह्मण, और देवता के समीप  
पढ़े जा उस को लक्ष्मीयया संतान  
, और सुभगती प्राप्त होगी ॥ ५३ ॥ ५४ ॥  
इति श्री भाषा महाभारते, प्रादिपर्व  
णि पंचवष्टितमोऽध्यायः ॥ ६॥  
धरा सट्वां, प्रध्याय ॥ देवता, प्रसु  
रधर्म, प्रधर्म, और पशुपदियों  
के उत्पन्न होने की कथा ॥ वैष्णवाय  
न बोले हेराजा जन्मे जय मरीच, प्रं  
गिरा, प्रवि, पुलस्त्य, पुलह, और क  
उये ६ पुत्र ब्रह्माजी के, और मरुग्या  
धर्म नि ॥ इति, प्रज्ञैकपाद,



॥३२८॥ ॥७॥ प्रादि पर्व ॥

प्रह्लवर्ष, पिनाकी, दहन, ईश्वर,  
कपाली, स्या ए, प्रौर भग यह २२  
पुत्र पिब जी के उत्पन्न हुये ॥१॥४॥  
इसके पीछे वह स्यति, उत्तम्य, प्रौर  
संवर्तये तीन पुत्र बड़े व्रत धारी, प्रंजि  
रा के, प्रौर मुनज व्याघ्र, वानर,  
राक्षस किन्तोर, प्रौर यक्ष कुल स्य  
जी के, प्रौर पालम सिंह, किंपर व व्या  
घ्र, इहा, प्रौर मृग पुलह जी के, प्रौर  
सत्य व्रत धारी बाल विवर्ष क  
बिजो सूर्य के साथ फिरा करते हैं  
कतु जी के, प्रौर वेद के जानने वा  
ले बड़े २ महा ऋषि, प्रविजी के  
उत्पन्न हुये ॥५॥६॥, प्रौर उसी  
समय में ब्रह्मा जी के दहिने, प्रंगुठे  
से दक्ष ऋषि, प्रौर वायें, प्रंगुठे से  
दक्ष की भार्या उत्पन्न हुये, प्रौर  
(उन्हो नों के ॥५॥५॥ वकासक न्याह

॥ ३२६ ॥ प्रादि पर्व ॥

ई ॥ ११ ॥ ११ ॥ दत्त (उन सब सुन्दरी क  
न्या ॥ ११ ॥ ११ ॥ प्रों को पुत्र भाव से रखते थे  
॥ प्रौर स्या नी हो पर दत्त ने ॥ ११ ॥ कन्या  
॥ प्रों का बिबाह धर्म राज से ॥ २१ ॥ का च  
न्द्रमा से ॥ प्रौर १३ का कपय पजी से  
वेद विधि से कर दिया ॥ १२ ॥ १३ ॥ जो  
कन्या दत्त ने धर्म राज को दी (उन  
के नाम यह हैं कीर्ति, लक्ष्मी,  
श्रुति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा ॥ कि  
या ॥ १४ ॥ बुद्धि, लज्जा ॥ प्रौर मति  
ब्रह्मा जी ने दक्षो धर्म के द्वार इन  
ही को कहा है ॥ १५ ॥ ॥ प्रौर जो २१ क  
न्या चन्द्रमा को दिखी वे लोक या  
त्रा में समय के क्रम से नन्दों में  
फिरा करती है ॥ प्रधीत ॥ प्रविनी  
भरणी रोहणी ॥ प्रादि जो २१ नन्द  
त्रेक हलाते हैं वह दत्त की वही स



॥३३०॥ प्रादिर्वर्ष ॥

ताई सोंक न्या है जो चन्द्र मा  
को दी थी ॥१६॥ और पुत्र दत्त

प्राजापति के जो प्राप्य चहुये वै  
ही प्रष्टव सु कह जाते हैं और उ

नके नाम वे हैं ॥१७॥ धार, ध्रुव,  
सोम, प्राप, प्रनिल, प्रनल,

प्रत्यूष, और प्रभास ॥१८॥ इन में

में धार, और ध्रुव धूम्रासे चन्द्र मा

मनस्वी से स्वसन त्वासा से, श्रु

रतासे हुतासन सांडिलिसे प्रत्यू

ष, और प्रभास प्रभाता से उत्प

नहुये ॥१९॥ २०॥ इस के पीछे

धार के द्रवण, और हुतहव्य, और

ध्रुव के काल, और चन्द्र मा के वर

चा, और मनोहरा के पिरसप्राण

, और रमण, और प्रहस के के

ज्योति, याम, पात, और मुनि

॥३३१॥ > प्राद्विपर्व॥

> प्रौर, प्रज्जी के मान कुमार जी जो  
६ कृतिका > प्रों से उत्पन्न होने के कार  
ण से कार्ति के य नाम से विख्यात  
हुये > प्रौर, प्रनिल के पि वा स्त्री  
से मनो जव > प्रौर, प्रवि सा गति  
> प्रौर प्रत्पू सुख के देवल > प्रौर प्र  
भास के ब्रह्मस्पतिकी बहिन से जो  
ब्रह्म वादिनी > प्रौर योग युक्त थी  
विष्वकर्मा जी पुत्र उत्पन्न हुये इन  
के > प्रननोर चन्द्रमा के पुत्र वर्च के  
वर्च स्वी पुत्र > प्रौर कार्ति के य जी के  
पात्र विपाध ख > प्रौर नैग मेव  
नामी पुत्र > प्रौर प्रत्पू सुख के  
पुत्र देवल के दामा वान > प्रौर म  
नीषी नाम पुत्र उत्पन्न हुये > प्रौर  
प्रभास के पुत्र विष्वकर्मा जी जो  
पात्र बलाने की विद्या से वडे नि



॥३३२॥ प्रादिपर्व ॥

पुण्यै, प्रौरहजारों से से से से पत्य  
रवना ये जि न को जो न कर मनुष्य  
प्रय नी जी विका कर ते हैं, प्रौर विश्व  
करमा का, प्राराधन करते हैं, उन्हां  
नें देवता, प्रों के लिये उत्तम २ विमा  
न बनाये ॥३१॥ ३॥ इसके, प्रननो  
र ब्रह्मा जी के दहिने स्तन को को को  
डकर नर रूप धारी धर्म उत्पन्न  
हुये ॥३१॥ उन के पास, का काम  
प्रौर हर्ष नामी तीन पुत्र बडे मनोह  
र, प्रौर तेज स्वी हुये ॥३२॥ प्रौर इ  
न स्त्री तीनों का विवाह प्राप्ति, प्रौर  
र रति, प्रौर नन्द नाम स्त्री यों से  
हुवा ॥ ३३ ॥ प्रौर मरीचि के  
पुत्र कश्यप पुत्री कश्यप के पुत्र  
प्रौर सुर, प्रौर प्रसु उत्पन्न हुये  
जो कि सृष्टि के कारण कहलाते  
हैं ॥३४॥ इसके पीछे सूर्य के लक्ष्मी

॥३३३॥ प्रादि पर्व॥

नाम स्त्री सै दो नों प्राप्ति वे नी कुमार  
प्राकास में उत्पद्ये ॥३५॥ प्रौर  
प्रौर प्रदिति के इन्द्रादि कवार ह पुत्र  
हैं उनमें सब से छोटे विष्णु हैं ॥३६॥  
इतनी कथा सुना कर वै कां पायन बोले  
हेराजन् प्रवमें तुम सें देवता प्रों के  
गए प्रौर पदों के नाम कहता हूं कह पहा  
ले हैं ह्रद्गए मस्य गए साध्य ग  
ए भार्जव पक्षवसु पक्ष विश्वे देवा  
विनता के पुत्र ग ह्रद्ग प्रौर प्रहृण ब  
हस्यति जो प्रादित्यों में गिने जाते हैं  
दोनों प्राप्ति वे नी कुमार गृह के प्रौर  
सब प्रौर मधी प्रौर पपु ॥३७॥ ४०॥  
मनुष्य इनका कीर्तन करने सें सब  
पापों सें छूट जाता है प्रौर भगू जी  
ब्रह्मा के दृष्ट मको कोर कर निकडे



॥३३६॥ > प्रादियवर्ब ॥

॥४१॥ उनके कविनामी पुत्र > प्रो  
र > प्रौर कविके सुकनामी पुत्र उत्प  
न्न हुवा सहपात्र के वर्षा > प्रवर्ष  
> प्रवर्षा भय > प्रौर > प्रभय सूच  
क कार्यों के लिये ब्रह्माजी से नि  
युक्त दो नो के कारण से चौदहों भु  
वनों में घूमते हैं > प्रौर यही पुत्र के  
योग सिद्धी से दो रूप धार कर सुर  
> प्रौर > प्रसुरों के उत्पत्ति हैं ॥४२॥ ४३॥  
इसके पिछे भृगुजी के च्यवन नो  
भवदा तपस्वी > प्रौर धर्मात्मा पुत्र  
उत्पन्न हुवा जिन्होंने नंदे के पि  
तहो के गर्भ से गिर कर > प्रपत्नी मा  
ता को > प्रसुर सें छुटाया ॥४४॥ ४५॥  
इसके > प्रननर भृगुजी का विवा  
ह मनु की कन्या से हुवा > प्रौर उस

॥ ३३५ ॥ > प्राद्वि पर्व ॥

से भगु जी के, प्रौर्व ऋषि वडे तेजे स्त्री  
> प्रौर पदा के मी उत्त को तोड़ कर उत्प  
न्य न्हये ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ उन के पुत्र ऋ  
ची कह्ये, प्रौर ऋ चीक के ज म द गिनि  
> प्रौर ज म द गिनि के च्या पुत्र उत्प न्ह  
ये उन चारों पुत्रों में सबसे छोटे पर प  
रा म जी वडे गुणवाने सब पा स्त्रों में नि  
पुण, प्रौर सब प र्थी के दो नौ यों को  
जी पा कर नेंवाले, प्रौर वया में राव नें  
वाले न्हये, प्रौर, प्रौर व ऋषि के सोप  
त्रये उन में ज म द गिनि सबसे बडे थे  
> प्रौर उन पुत्रों की, प्रन गि। न ती सत्ता  
न प र्थी पर कै ली ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ इसके  
पीछे बह्मा जी के दो पुत्र धाता, प्रौर वि  
धाता नाम से उत्प न्हये ये दो नों मनु  
जी के संग रह ते हैं ॥ ५० ॥ उन वह न  
क म ल में रहने वाली लक्ष्मी थी उस  
के, प्राकाश में चलने वाले मानसी  
पुत्र उत्प न्हये ॥ ५१ ॥ इसके उपरांत



॥ ३३६ ॥ प्रादि पर्व ॥

तव स एके वडी स्त्री से एक बल ना  
मी पुत्र और सुरा नामी पुत्री जिसे  
देख कर देवता परमानन्द पाते हैं  
उत्पन्न रूपे ॥ ५२ ॥ और प्रन्तेन  
होने के कारण से जब प्रजा सुधि  
महुई और प्रबल निबल को भक्षे  
एकर ने लगति तब सब जीवों का ना  
पाकर ने वाला प्रधर्म उत्पन्न हु  
आ ॥ ५३ ॥ उसका विवाह निर्केति  
नाम स्त्री से हुवा और उसके तीन  
पुत्र भय, महा भय, और म  
त्यु नामी राक्षस सदैव पाप कर्म में  
रतरहने वाले उत्पन्न प्रथे मृत्यु के  
कोई स्त्री, प्रथवा पुत्र नहीं हुवा वह  
प्रापही प्रंत कष्ट परहा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥  
इसके पीछे ताम्रा देवी के पांच पुत्री  
काकी, रयेनी, भासी, धतराक्षी  
और काकी नाम से उत्पन्न हुई ५६

॥ ३३१ ॥ ॥ अदि पर्व पञ्चमी मास के के मा  
 ॥ का की के उल्लु नाम के पक्षी धरतरा  
 श्री के सब तरह के हंस प्रौर चक्रवाक  
 नाम पक्षी प्रौर पाकी के पाक प्र  
 र्थात तोता नाम के पक्षी उत्पन्न हये  
 ५१ ॥ ५२ ॥ इस के प्रननर दत्त की  
 क्रोधा नाम पुत्री के मजी, मजम  
 न्दी, हरी, भद्र मना, मातंगी, वा  
 दूली, पवेता, सुर, मि, प्रौर सुर  
 सा नाम ~~पुत्री के मजी~~, नव के न्या  
 उत्पन्न हये ॥ ६० ॥ ६१ ॥ मजी के सब  
 मजम प्रौर मजम न्दी से ऊँच प्रौर  
 रसम भद्र मना से देवना गते  
 र वत हाथी हरी से बानर प्रौर लं  
 गर वा दूली से सिंह व्याघ्र प्रौर ह  
 री मातंगी से हाथी पवेता से दिग्ग  
 ज उत्पन्न हये प्रौर सुरभी के चार  
 पुत्री रोहिणी, गंधर्वी, विमला प्रौर



॥३३८॥ प्रादि पर्व॥

प्रनला उत्पन्न हुई और रोहणी  
के जो वैल गंधर्वों के छोटे विम  
ला के खजूर नारिकेली प्रादि सा  
त प्रकार के पिंड बने और प्रनला  
के शुकी नाम पुत्री हुई ॥६२॥६८॥ औ  
र सुरसा के कंक नामी पुत्र हुआ ॥६६॥  
और प्रसूता की स्त्री पौषनी के महा  
वली संवाति और जटायु उत्पन्न हुये  
सब के पीछे सुरसा सैंना जाकर सब से स  
र्व और विनता सें गह्य और प्रसू  
ता उत्पन्न हुये हेरा जन यह सब स  
खि का बलांत हम ने वर्णन कि  
या जो कोई पापी मनुष्य इस को सुने  
जा वह पापों सें मुक्त होकर उत्तम  
जति पावै जा ॥१०॥१२॥ इति श्री  
भाषा महाभाते प्रादि पर्व लिख  
द्वि तमोऽध्यायः ॥६६॥ सर  
सठि वां अध्याय ॥ द्वैत्य दान व दे

॥ ३३८ ॥ प्रादि पर्व ॥

वैता जन्धर्व, प्रौर, प्रसारा, प्रों के  
पृथ्वी पर, प्रपने, प्रंससे, प्रवतार  
लेने की कथा ॥ राजा जन्मे जय बोले  
हैं वैष्णवायन जी, प्रव, प्राप कथा  
कर के देवता दानव जन्धर्व ~~प्र~~ (७)  
राजा दत्त सिंह व्याघ्र म० गपन्त  
गपही, प्रौर सब महात्मा प्राणियों  
के ममनुष्य लोक में जन्म लेने की  
कथा वर्णन की जिये ॥ १ ॥ २ ॥ यह सु  
नकर वैष्णवायन जी बोला कि मैं देव  
ता, प्रौर दानवों के पृथ्वी पर जन्म लेने  
की कथा वर्णन कर ताहूं, प्रापचित्त  
देकर सुनिये। देवता, प्रों में दैत्यों ने  
पहले पृथ्वी पर जन्म ~~लिया~~ लिया (७)  
न के नाम, प्रौर जिस जिस ने जहां ३  
जन्म लिया वह हम, प्रागे वर्णन कर  
तेहें ॥ दैत्यों के नाम पृथ्वी पर जन्म  
लेने का संक्षेप बताते ॥ विप्रचि  
त --- यह है यह इस लोक में जरा  
संक्षेप के नाम से विख्यात हुआ ॥ ४ ॥



॥३३६॥ प्रादिषर्व॥

हिरण्यकशिपु — यह पिपु

पुपातनामीराजाहु ॥ प्रा॥ ५॥ ग्रह

लाद का घोटा भाई संहार —

यह बाहू लीक के वंश में यौल्य

नाम से उत्पन्न हु ॥ प्रा॥ ६॥ प्र

नुहाद — यह ध्रुव के तू के ना

म से विख्यात हु वा ॥ ७॥ पि। वि

— यह राजा दुम के नाम से वि

ख्यात हु वा ॥ ८॥ वाष्कल —

यह राजा भगदत्त के नाम से वि

ख्यात हु वा ॥ ९॥ प्रपि। रा॥ प्र

वपि। रा॥ प्रपः पांकु गज

नमू घी वेगवान् ॥ यह पां चों

दैत्य के कय देस में उत्पन्न हो

कर बड़े योधा राजा हुये ॥ १०॥

११॥ केतुमान — यह प्रमि

॥३४॥ > प्रादि पर्व ॥

तौ जानामसे विख्यात बड़े उग्र  
कर्मका करने वाला राजा हुआ ॥  
स्वर्भानु — यह राजा उग्र सेन  
नामसे विख्यात हुआ ॥१३॥ > प्र  
स्व — यह > प्रयोग नामसे वि  
ख्यात हुआ बड़ा परा कमी राजा  
हुआ ॥१३॥ > प्र स्व पति — यह  
सहार्दिक नामी बड़ा राजा हुआ  
॥१४॥ वृषपर्वा — यह दैत्य रा  
जा दीर्घ प्रसके नामसे विख्या  
त हुआ ॥१५॥ > प्रजक वृषपर्वा  
का भाई — यह राजा पालव हुआ  
॥१६॥ > प्र पूर्व जीव — यह दैत्य  
रोचमान नामी बड़ा बुद्धिमान  
> प्रौर किंतिमान राजा हुआ ॥  
१७॥ सुत्तम — यह राजा बरुद



॥३४॥ प्रादि पर्व ॥  
 थहुवा ॥१८॥ तुहुंडसहरा जासेना  
 बिहुंडवा ॥१९॥ इमिधु — यहरा  
 जानन जितहुवा ॥२०॥ राकच  
 क — यह राजा प्रतिविन्धहुवा  
 ॥२१॥ विरुपाक्ष — यह राजा वि  
 त्धर्मनामसे विख्यातहुवा ॥२२॥  
 वीरहर — यह दैत्य सुवाहन नाम  
 राजाहुवा ॥२३॥ सुहर — यह दै  
 त्य वाहीक नाम राजाहुवा ॥२४॥  
 निचन्द्र — यह दैत्य मंजुकेषाना  
 म राजाहुवा ॥२५॥ निकुंभ — यह  
 दैत्य देवाधिप नाम राजाहुवा ॥  
 २६॥ पारभ — यह दैत्य पौरव नाम  
 म राजाहुवा ॥२७॥ कु  
 पथ — यह दैत्य सुपाय नाम राजाहुवा ॥२८॥  
 कथन — यह दैत्य पार्वतिय नाम वदाने ज  
 स्वी राजाहुवा ॥२९॥

"३४२॥" प्राद्विपर्व॥  
 वाल्मीकि-यह दैत्य प्रह्लाद नामी  
 राजा बाही क के वंश में उत्पन्न  
 हुआ ॥ ३०॥ चन्द्र-यह दैत्य चं  
 द्रवर्मा नाम का बोज देणों का रा  
 जा हुआ ॥ ३१॥ प्रक-यह दैत्य  
 ऋषिक नाम राज ऋषि हुआ ॥  
 ३२॥ मृतया-यह दैत्य पश्चि  
 मानूपक नाम राजा हुआ ॥ ३३॥  
 योजविष्ट-यह दैत्य द्रुम तसे  
 ने नाम राजा हुआ ॥ ३४॥  
 मधुर-यह दैत्य विश्वना  
 म राजा हुआ ॥ ३५॥ सुपर्णा-य  
 ह दैत्य काल कीर्ति नाम राजा हुआ  
 ॥ ३६॥ चन्द्रहन्ता-यह दैत्य  
 सुनक नाम राजा हुआ ॥ ३७॥ चन्द्र  
 विनाशन-यह दैत्य जानकी  
 नाम राजा हुआ ॥ ३८॥ दीर्घ



॥ ३४३ ॥ प्रादिपर्व ॥

जिहू — यह दैत्य का पिता राज  
नाम राजा हु० प्रा॥ ३८॥ सिंह का  
वैटाराहु — यह गरुकाथ नाम  
राजा हु० प्रा॥ ४०॥ प्रनाय  
का पुत्र विदार — यह दैत्य वसुमि  
त्र नाम राजा हु० प्रा॥ ४१॥ दूसरा  
विदार — यह दैत्य पाराजय राखा  
पिपनाम राजा हु० प्रा॥ ४३॥ वृत्त  
— यह दैत्य मणिमान नाम राजा क  
बिहुवा ॥ ४४॥ क्रोधहंता — यह दै  
त्य दराड नाम राजा हु० प्रा॥ ४५॥ क्रो  
धवर्द्धन — यह दैत्य दराडधारना  
म राजा हुवा ॥ ४६॥ कालेय नाम प्रा  
४ दैत्य — यह प्राण दैत्य प्राणव  
देवदे पराक्रमी राजा हुये उन के ना  
म ये हैं पहला मगाधद पामें जय से  
ने नाम राजा दूसरा प्रपराजित  
नाम राजा तीसरा भीम नाम निषा

॥३४४॥ प्राद्विपर्व॥

दोंको राजा चौथा श्रेणिमान नामरा  
जाराज कृषि पांचवां महैजा नामरा  
जा छठा भीरु नामराज कृषि सातवा  
समुद्र सेन नामधर्म, प्रौर, प्रर्थके  
तत्वको जानने वाला राजा, प्रौर, प्राठ  
वां ब्रह्मन्तामवदाधर्मात्मा राजा हु  
वा ॥४७॥ ५५॥ कुक्षि-यह दैत्यपर्व  
तीस नामराजा हु, प्रा॥ ५६॥ कथन  
-यह दैत्य सूर्यादनाम राजा हु, प्रा॥  
५७॥ सूर्य-यह दैत्य दरदनाम बाहु  
हीकराजा हुवा ॥५८॥ कौधवरा  
नाम दैत्य गण-इस गणके दैत्यों  
ने पृथ्वी पर बहुत से राजा, प्रों में ज  
न्म लिया उनके नाम ये हैं ॥५९॥ म  
द्रक, कर्णवेश, सिद्धार्थ, कीटक,  
सुवीर, सुबाहु महावीर, बाहुलि  
क ॥६०॥ कथविचित्र, सुरयनील,  
चीरवास, कौश्य ॥६१॥ दंतवक्रजो  
इर्जगदा नावका, प्रवतारथा, रु



॥ ३४५ ॥ प्रादिवर्ष ॥

कमी, जन्मे जय ॥ ६२ ॥, प्राषाढ  
वायुवे ज भूरिते जा, एकलव्य, सु  
सु मित्र, वाठधान, गोमूत्र ॥ ६३ ॥  
कास्यदे मधूर्ति, मुताय, उद्ध,   
वहत सेन ॥ ६४ ॥ देमो जतीर्थ,  
कुहर, कलि जपति, प्रौर इषवर ॥  
६५ ॥ ये सवराजा पड़े पराक्रमी, प्रौर  
कीर्तिमान् क्रोधवपानामदै त्यों  
के जग से उत्पन्न हुये ॥ ६६ ॥ का  
लनेमी - पयदैत्य उज्ज सेन का  
पुत्र कंपानाम से महाबली विख्या  
त हुआ ॥ ६७ ॥ इतली कथा सुना क  
र बैषा म्यायन जीवोले हे राज न  
दै त्यों के पृथ्वी पर जन्म लेने के पा  
छे सव देवता, प्रों नें भी, प्रपन २, प्रं  
पासे, प्रवतार लिया उन के नाम, प्रौ  
र जहां जहां जिसने जन्म लिया वह  
प्रोजे वर्णन करते हैं ॥ देवता, प्रों  
के नाम पृथ्वी पर, प्रवतार लेने

"३४६॥ प्रादिपर्व॥

काहाल॥ जंधर्बपति— यह प्रव  
तारलेकर देवक नाम राजा हुआ॥ ६४॥  
बृहस्पति— इनका प्रवतार दो एण चो  
र्य है जो भरद्वाज के बंधुओं में प्रयोनि  
जित उत्पन्न हुये॥ ६५॥ महादेव प्रंत  
क काम प्रौर क्रोध— इन चारों देवता  
प्रों के प्रंश से संपूर्ण वेद पास्त प्रो  
र प्रस्त्र विद्या के जानने वाले दो एण चो  
र्य के महावीर प्रौर तेजस्वी प्रस्वत्था  
माना मपुत्र उत्पन्न हुआ॥ ७॥ ७३॥

प्रष्टवस— यह प्राण वसु वशिष्ठ  
जी के पाप प्रौर इन्द्र की प्रासा से रा  
जा पातन के यहां जंग जी के गर्भ से उ  
त्पन्न हुये उनमें सब संघोटे सब पा  
त्र प्रों को जीतने वाले प्रौर कुरुवों  
को प्रभय करने वाले भीष्म जी थे  
जिन्होंने सब पास्त विद्या के जान  
ने वाले जमदग्नि के पुत्र परपु राम  
जी से युद्ध किया था॥ ७४॥ ७६॥ रुद्र  
जग— वसु क्रयि क्रया चौर्य रुद्र



॥३६९॥ प्रादिपर्व॥

गणको प्रवतारये ॥११॥ द्वापर—  
इनका प्रवतार पाकुनिनाममहार  
थी राजा था ॥१८॥ मरु झण इन दे  
वता प्रों के प्रंपासे विष्टि कुल में  
सात्यकि प्रौर राजर्षि राजा दुष्य  
राजा कृतबन्धो प्रौर राजा विशा  
उत्पन्न हुये ॥१९॥ २३॥ हंसना  
मगंधर्वपति इस देवता के प्रंपा  
के व्यासजी का पुत्र धृतराष्ट्र नाम  
मी जो प्ररिषा का पुत्र था वराते  
जस्वी माता के दोष प्रौर कृषि  
के कोप से प्रंधा उत्पन्न हुवा ॥२४॥  
॥२५॥ हंसना मगंधर्वपति का  
घोटा भाई इस देवता के प्रंपा से  
राजा पांडु सत्यधर्म में रत बड़ा  
जस्वी उत्पन्न हुवा ॥२६॥ सूर्य के  
बेटे धर्मराज इसके प्रंपा से विदु  
रजी उत्पन्न हुये ॥२७॥ कालियुग  
—इसके प्रंपा से धृतराष्ट्र का पुत्र

॥ ३४८ ॥ प्रादिपर्व  
 दुर्पोधन नाम उत्पन्न हू, प्रावरु वडा  
 दुर्बुद्धि दुर्मति कुरु केल को, प्रपयस  
 देनेवाला सब पृथ्वी के द्रवियों का  
 नाश करनेवाला, और महाभात घु  
 झका रोपनेवाला था ॥ ८८ ॥ ८९ ॥  
 रावण के पुत्र प्रादि - इनके प्र  
 दासे धृतराष्ट्र के दुपपासन, प्रा  
 दिसौ पुत्र बड़े खोटे कर्म करनेवा  
 ले उत्पन्न हुए और घुघुत्सु जो वे  
 पपासों में उत्पन्न हुआ था वह इन सौ  
 पुत्रों, प्रच्छिन्न कथा ॥ ९० ॥ ९१ ॥ इति  
 नी कथा सुन कर राजा जन्मे जयने  
 कहा कि मैं धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों का  
 म क्रम से सुना चाहता हूँ यह सुन  
 कर वे पपास्य यन जीवों ने कि उन  
 नाम यह है के दुर्पोधन १ घुघुत्सु  
 दुपपासन ३ दुस्सह ४ दुपपाल  
 ५ दुरमुख ६ विविशती ७ विक



॥३५॥ प्रादिवर्न॥  
ए०८ सुलोचन १० बिंद ११ प्रन  
विंद १२ दुर्ध्व १३ सुवा  
१४ दुःप्रधर्षण १५ ॥८३॥ ८४॥  
दुर्मर्षण १६ दुर्मूर्ति १७ दुष्कर्ण १८  
कर्ण १९ चित्र २० उपचित्र २१ वि  
त्राक्ष २२ चोदचित्र २३ प्रगाद २४  
॥८५॥ दुर्मह २५ दुःप्रहर्ष २६ वि  
वित् २७ विकट २८ सम २९  
ए० नाम ३० पद्म नाम ३१ नन्द ३२  
उपनन्द ३३ ॥८६॥ सेनापति ३४  
सुयेण ३५ कुराडोदर ३६ म  
होदर ३७ चित्रबाहु ३८ चित्र  
वर्मा ३९ सुवर्मा ४० दुर्विशेचन  
४१ ॥८७॥ प्रयोबाहु ४२ महाबा  
हु ४३ चित्रचोप ४४ सुकुराड

॥३५०॥ प्रादि पर्व ॥

ल४५ भीम वेग ४६ भीम वल ४७  
बला की ४८ भीम ४९ विक्रम ५०

॥४८॥ उग्र युध ५१ भीम पार ५२  
कन काय ५३ दूठा युध ५४ दूठ व  
र्मा ५५ दूठ दूत्र ५६ सोम कीर्ति ५७  
प्रनू दय ५८ ॥४९॥ जरा संध ५९

दूठ संध ६० सत्य संध ६१ सहस्र

बाक ६२ उग्र श्रवा ६३ उग्र सेन

६४ दाम ६५ मूर्ति ६६ ॥१००॥ प्र

पराजित ६७ पंडितक ६८ विष्णु

लाक्ष ६९ दुराधन ७० ॥१०१॥

दूठ रुस्त ७१ सुहस्त ७२ बाहव वेग

७३ सुवर्चस ७४ प्रादित्य केत

७५ वहवापरी ७६ नारद तो ७७ प्र

नुपायन ७८ ॥१०२॥ कवची ७९

निषंगी ८० दंडी ८१ दुराधार ८२

धन ८३ राभी ८४ रथ



॥३५१॥ प्रादिपर्व ॥

वीर २५ वीरबाहु २६ प्रलो  
लुप २१ ॥१०३॥ प्रमय २२ रौद्र  
कर्मा २९ दृढ २९ प्रनाधर २९  
६१ कुराउ भेदी ६२ विरावी ६३  
दीर्घलोचन ६४ ॥१०४॥ दीर्घ  
बाहु ६५ महाबाहु ६६ व्यूठ ६७  
६९ कनकांगार ६८ कुराउज ६९  
चित्रक १०० धरतराव के ये सौ पु  
त्र थे ० प्रौर एक पुत्र युयुत्सु नामी  
बेण्यां से था इस प्रकार से सब पु  
त्र १०१ थे ० प्रौर एक कन्या दृष्टा  
लाना मथा उसका ॥१०५॥ १०६  
इन सब की बड़ा इच्छा ईनां में के  
० प्रनुस्मर है ० प्रधात जिसका नाम  
मयह ले है वह ० प्रपने की छेवाले  
से बड़ा है धरतराव के ये सब पु  
त्र बड़े पूर वीर पुष्ट पुरुष ० प्र

॥३५२॥ ० प्राद्विपर्व ॥

स्तवास्त विद्या के जानने वाले ० प्रो  
र वेद वास्त में निपुण थे ॥१००॥ १००॥  
इन सब का विवाह इनके ० प्रनुस्य  
स्त्रियों से किया गया ० प्रोर दुपरा  
ला नाम धनराष्ट्र की पुत्री का वि  
वाह पाकुनी की राय से सिंधु देश के  
राजा जयद्रथ के साथ किया गया ॥  
१०१॥ ११०॥ धर्म राज — इनके ० प्रं  
पा से राजा युधिष्ठिर उत्पन्न  
हुये ॥ वायु, इन्द्र ० प्रोर ० प्रश्वनी कु  
कुमार — वायु के ० प्रंपा से भीम से  
न इन्द्र के ० प्रंपा से ० प्रजुन ० प्रोर ० प्र  
श्वनी कुमार के ० प्रंपा से नकुल ० प्रो  
र सह देव जो बड़े स्वस्त्यवान् थे उ  
त्पन्न हुये ॥१११॥ चंद्रमा का पुत्र  
वर्चा — इनके ० प्रंपा से ० प्रजुन का  
बड़ा प्रतापी पुत्र ० प्रणिमन्यु नामी  
उत्पन्न ० वायु ० प्रणिमन्यु के



॥३५३॥ प्रादि पर्व ॥

प्रवतार लेने के समय चन्द्रमा  
ने देवता, प्रो से यह कहा था कि  
यह मेरा पुत्र प्राण से भी प्यारा है  
मैं इसको पृथक् नही कर सकता प  
रन्ते तुम्हा कार्य करने के लिये यह  
पृथ्वी पर, प्रवतार ले कर, प्रज्ज्म  
का पुत्र होगा, प्रौर १६ वरष की उम  
र में यह प्राप्त होने पर नारद प, प्रज्ज्म  
न, प्रयने पिता, प्रौर नारायण रु  
प श्री कृष्ण चन्द्र के न होने के का  
रण से यह महा, प्रभेद्य ब्यूह को  
तोड़ कर भीतर धुस जायगा, प्रौर  
रव हां जा कर बड़े बड़े पुरखी रों  
को घमपूरी पहुँचावेगा, प्रौर उस  
दिन सब सेना की चौथाई सेना  
को, प्रकेलामार कर संध्या होने  
पर मेरे पास चला, प्रावेगा, प्रौर  
रकांडों का वंश चला, प्राने के  
लिपे इससे एक पुत्र भी उत्पन्न

॥३५४॥ प्राद्विपर्व॥

होगा यह सुनकर देवता, प्रों नें तरा  
गलों के इस्वर चन्द्रमा की पूजा करी  
और कहा कि इसा ही हो हे राजा जन्मे  
जय यह, प्रति मन्यु तेरा पितामह  
प्रार्थना वा वा था ॥११२॥१२५॥ प्र  
गिनि - इन के, प्रंपा से धृष्ट धृष्ट  
उत्पन्न हुवा, और विखंडी स्त्री पू  
र्व जन्म कारा सहसा ॥१२६॥ विष्णु  
देवा, प्रों का गण - इस के गण के  
देवता, प्रों के, प्रंपा से द्रोपदी के  
पांच पुत्र उत्पन्न हुये उनके नम  
ये हैं के प्रति विध्य सुत सोम, श्रु  
ति कीर्ति दाता नीक, और श्रुत  
सेन ॥१२७॥१२८॥ और वासु देव  
जी के पिता सूर सेन के एक पुत्री  
पृथानाम की ऐसी स्वरूपवान् उ  
त्पन्न होने के यह ले ही प्रयत्नी  
फूफ़ी के पुत्र को देने की प्रतिभा  
करीणी सो उस के प्रतिभा के



॥३५५॥॥७ प्रादिपर्व॥

अनुसार सुर स सेन ने पथा को  
कुंति भोजना मरा जा को दे दिया  
॥२८॥॥३२॥ उसने उस कन्या  
को महात्मा और ब्राह्मण लो जों  
की सेवा करने के निमित्त नियत कि  
या एक समय दुर्वासा उग्र तपस्वी  
ऋषि वहां प्राये उस कन्या ने उ  
नकी बहुत प्रचरी तरह सेवा की  
दुर्वासा ने प्रसन्न हो कर पथा को  
देव बप्ती करण मंत्र बताया और  
कहा कि इस मंत्र से तू जिस दे  
वता को पुत्र की कामना से बुला  
वेगी वह प्राकर तेरी इच्छा को पू  
र्ण करेगा ॥१३३॥ १३४॥ दुर्वासा  
तो चले जये और कुंती ने उस मं  
त्र से सूर्य को प्रावाहन किया  
और उन से जर्म को धारण कर के  
बड़ा तेजस्वी और स्वस्व पवाने

॥३५६॥ प्रादि पर्व॥

कुराडल, प्रौर कव चर्धर ए। किये हुये  
रकपुत्र की उत्पत्ति की या, प्रौर जाति  
विरादरी के भय से उस को जल में वहा  
दिया ॥१३९॥१४०॥ इसके पिये उस  
वालक को जल में वहा हुवा राधा के  
पति, प्रच्छिर य ने जाते देखा वह उ  
सको, प्रपने घर ले, प्राया, प्रौर पुत्र  
भाव मान कर उस कताम वसुधे  
एर श्रुवा थोड़े दिनों में वह बाल  
क बड़ा हो गया, प्रौर सब वेद, प्रौर  
पास्तों को पढ कर सब, प्रस्तुधा  
रियों में श्रेष्ठ हो गया जिस समय  
वह पूजा करने बैठा गया उस सम  
य जो कोई ब्राह्मण उस से जो कु  
छ मांगता था वह उस को वही दे  
ता था ॥१४१॥१४२॥ उसी सम  
य में इन्द्र ने, प्रजुन के हित के लि  
ये ब्राह्मण रूप धारण कर के उस



॥३५१॥ प्रादि पर्व ॥

सेक वच ॥ प्रौद कुरातुलमां जो उस  
ने दो नों दे दिये ॥ प्रौर इन्द्र न उस  
के बदले में उसको एक प्राप्ति दी  
॥ प्रौर कहा कि देवता मनुष्य यक्ष,  
गन्धर्व ॥ प्रौर राक्षस में से जिस कि  
सी पर तुं इस प्राप्ति को छोड़ेगा वह  
मर जायगा ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ वह सु  
धेए नाम से पहले विख्यात रहा  
परंतु कुंडल ॥ प्रौर कवच के हरे जा  
ने पर उसका नाम पृथ्वी पर वैक  
र्तन के एह वा ॥ १४७ ॥ वह क  
र्ण पृथा का पहला पुत्र था ॥ प्रौर  
सूत के घर में बछ कर थोड़े दि  
नों में ~~कह~~ दुर्योधन का मंत्री  
हो गया हे राजन वह बड़ा वीर पा  
त्रों को नापा करने वाला ॥ प्रौर  
सर्व शास्त्र धारियों में प्रेष है

॥ ३५१ ॥ प्रादि पर्व ॥

था ॥ प्रौर उत्पत्ति (उसकी सूयके  
, प्रं पा से थी ॥ १४८ ॥ १५० ॥ इस के पी  
छे श्री सनतन नाराय भी वासुदेव  
नाम से पृथ्वी पर प्रकट हुये ॥ १५१ ॥  
गोष — इन के, प्रंस से बल देव जी उत्पन्न  
हुये ॥ सनत्कुमार — इन के, प्रं  
पा से प्रद्युम्न जी उत्पन्न हुये ॥ १५२ ॥  
इन के सिवाय बहुत से, प्रौर देवता  
, प्रों ने भी, प्रपने, प्रं पा से बसुदेव  
जी के कुल में, प्रवतार लिया ॥ १५३ ॥  
॥ प्रपारा, प्रों के गए — इन सब  
, देवियों के, प्रं पा से ~~सो~~ सोल  
ह सहस्र कन्या उत्पन्न हुई, प्रौर  
उन सब का विवाह श्री कृष्ण जी के  
पाय हुआ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ लक्ष्मी  
— लक्ष्मी जी ने, प्रपने, प्रं पा से  
भीष्म के कुल में द्रुपद नाम  
स जी सका, प्रवतार लिया ॥ १५६ ॥



॥३५८॥ ० प्रादि पर्व ॥

शची—यह देवी राजा दुषट् के हों  
द्रोपदी नाम से यसकी ० प्रणि से  
प्रकटहुई ॥ १५१ ॥ वह द्रोपदी क्या  
मा ० प्रत्यन्त सुंदरी कमल लोच  
नी न बहुत बड़ी न बहुत छोटी स  
बल हों से युक्त ० और कमल  
की सी गंधार खनै वाली थी ॥ १५२  
॥ १५२ ॥ सिद्धि ० और धृति—इन्हों  
ने कुंति ० और माद्री नाम से पृथ्वी  
पर प्रवतार लिया ॥ मति—यह  
देवी प्रयने ० प्रयासे गंधारी नाम  
से प्रकटहु ॥ १५३ ॥ इतनी थी सु  
नाकर वैष्णवायन जीवो ने हेरा  
गज न्मे जय में ने सब देवता गं  
धर्व राक्षस ० और ० प्रपरा श्री  
के पृथ्वी पर जन्म लेने की कथा  
वर्णन की यह प्रमाण वतार आय

॥३५६॥ प्रादि पर्व॥

बोधन यथापुत्र, प्रायु, प्रौर वि  
जय का देने वाला है, प्रौर उनमनु  
स्यों के (उन्हें) सुनेने के योग्य है जो  
परम गुरु हैं, जो दोष न ही लगे जाते  
हैं, परमात्मा को जानने वाला मनु  
ष्य, सब को सुनकर संसादुःखों  
से पीड़ा नहीं पाता है ॥१६१॥१६५॥  
इति श्री भाषा, प्रादि माहाभारते  
'प्रादि पर्व' लिखित षष्ठः । अदि  
तमो, अध्यायः ॥६१॥ अ  
ष्टमः सर्गः प्रथमः ॥ कुरुवंश  
के चलाने वाले राजा दुः  
ष्य नौकी कथा ॥ राजा अ  
र्जुन जन्म बोले हैं वे अर्जुन संवाचन  
जी, प्रायने देवता, प्रादिके एषी  
पर, प्रवतार लेने की कथा सुना



॥ ३६ ॥ ७ प्रादिपर्व ॥

ई ७ प्रव ७ प्राप सें कुरुवं पाकी कथा  
७ प्रादि विस्तार पूर्वक सुना चहु  
ताहू ॥ १ ॥ २ ॥ यह सुन कर वै पा  
म्या घन जी बोले हे राजा जन्मे ज  
य इस कुरुवं पाकी चला ने वाला  
पहला राजा दुष्यन्त नामी हुवा  
उसनें ७ प्रप नेवल ७ प्रौर पराक  
प्रसे सब पृथ्वी को समुद्र की सीमा  
७ प्रौर जे दोन के दे पाकी ७ प्रव  
चितक जीत कर ७ प्रप नेव पा में कि  
या ७ प्रौर उसका राज ७ प्रनेक भो  
गों के साथ किया ॥ ३ ॥ ४ ॥ उस के  
राज्य में नवर्ण संकर उत्पन्न हो  
ता था न खेती होती थी पाप हो  
ता था सब मनुष्य धर्म में प्रीति र  
खते थे ७ प्रौर ७ प्रर्थ धर्म को पाते  
थे ॥ ५ ॥ चोटी कभी नहीं होती थी

॥३६१॥ प्रादिपर्व॥

मनुष्यों को चुधा, प्रौं व्याधिका  
भय न ही होता था चारों वर्ण, प्र  
पनें २ कर्म करते थे इन्द्र समय पर  
वर्षा करता था, प्रौं पृथ्वी पर धा  
न्य, प्रौं पशु, प्रच्छी तरह उत्प  
न्न होते थे ॥८॥ १०॥ ब्राह्मण लो  
ग, प्रपना कर्म ही करते थे, प्रौं  
र ऊँठ कभी न ही बोलते थे वहरा  
जा रोसा पराक्रमी, प्रौं रूढ़ था  
कि मन्दरा चल पर्वत को, प्रपनी  
दोनों भुजाओं से उठा कर ले जा  
सक्ता था गदा, प्रादि शास्त्रों से  
पूछ कर ने मै, प्रत्यन्त निपुण था  
प्रौं हाथी घोड़े, प्रादि की सवा  
री भी, प्रच्छी तरह करता था उस  
राजा का बल विष्णु के समान ते



॥३६२॥ प्रादिपर्व ॥  
 जसूर्यकेतुल्य और प्रदा मिल  
 समुद्र और द्रमा पृथ्वी के अनुर  
 पथा प्रजा उसको बहु चाहती थी  
 और प्रो प्रजा का पालन धर्म से कर  
 ता था ॥११॥१५॥ इति श्री भाषा  
 महाभारते प्रादिपर्वणि ॥ प्र घ  
 षष्टितमोऽध्यायः ॥६८॥ उनह  
 तरवां अध्याय ॥ राजा दुःष्यंत के  
 वन में प्रहेर खिलने की कथा ॥  
 इतनी कथा सुनकर राजा जन्मे ज  
 यकोंला के महाराज में भरतजी  
 के जन्म और चरित्र और पाकु  
 नला की उत्पत्तिका बताना वि  
 स्तार पूर्वक सुना चाहता हूँ ॥१॥  
 और यह सभी वर्णन कीजिये कि  
 राजा दुःस्यन्त ने पाकुनला को  
 कैसे पाया था सुनकर वैष्णवा

॥ ३६३ ॥ प्रादिवर्ब ॥

नजीबो लै के राक समय राजा दुःष्यं  
त बहुत सी चतुरंगनी सेना, प्रौर बड़े  
बड़े पुरबीर जो खडग पाति, प्रा  
दि, प्रनेक पास्त्रलिये हुये थे साथले  
कर बन में सिकार मारनें गया ॥ २ ॥  
चलते समय पुरबीरों के सिंह नाद  
, प्रौर ताल मारने के पादु पांख, प्रौ  
र दुन्दुभी, प्रादिके घघो घहाथि  
यों की चिंधाए, प्रौर रथों का ऊए  
ऊए गट से चारों दिपा व्यप्त हो गई  
स्त्रियों ने, प्रपने रघारों पर चढ़ र  
कर राजा पर कूलों की वर खा कर  
नें लगे, प्रौर, प्राप समें कहनें लगी  
कि महदुन्दु की समान, प्रौर राजा दुः  
स्यन्त है जिस का पराक्रम रण में  
बस देवता के समान है, प्रौर जिस  
के समान स्वकीय पावन सी हरस



॥३६४॥ प्रादिपर्व॥

का॥६॥११॥ राजा उन स्त्रियों  
की प्रयासा से प्रसन्न होता हुआ, प्रौ  
र ब्राह्मणों से स्तुति सुनता हुआ  
हाथी पर सवार वन को चला॥१२  
॥१३॥ राजा के पीछे २ जो पुरवासी  
लोग, प्राणी वाद देते, प्रौर जय  
बोलते जाते थे वह राजा की प्रासा  
पा कर लौट गये, प्रौर राजा उस व  
न में पहुंचा जो नन्दन वन के समा  
नमनो हरथा, प्रौर जिसमें विल्व,  
प्रक, खदिर, कैथा, धौक, प्रा  
दी, प्रनेक उत्तम रत्न लगे हुये  
थे जहां तहां उंचे नीचे पत्थरों के  
ढेरों से पृथ्वी वहां की विषम हो  
रही थी न तो हां जलथान को इस  
नुस्यथा, प्रौर मृग, प्रौर सिंह  
प्रौ प्रादी, प्रनेक वन के जीव फिर  
ते थे॥१४॥१५॥ राजा वहां पहुंच

॥३६५॥ प्रादिपर्व॥

चा प्रौर वह च कर उस वन में सिका  
र मारने लगा, प्रौर थोड़ी देर में राजा  
ने वाए, खड्ग डगा गदा, प्रौर मुक्कल  
, प्रादि, प्रनेक फौजों में सिंह व्याघ्र  
वर। ह मरगा, प्रादि, प्रनेक जीवों को  
मार डाला जो जीव राजा के पास हो क  
र भागते थे राजा उन को तरवार से  
काट डालता था, प्रौर जो दूर रहते थे  
उन को बाणों से घेर न कर के गिरा  
देता था इस प्रकार करने में उस वन  
के सब जीव व्याकुल हो कर उस जं  
गल में से बाहर को भागने लगे वह  
त से भूख, प्रौर ध्यास से व्याकुल  
हो कर नदी, प्रौर तलाव, प्रनुमान  
कर के रेत की, प्रौर दौड़ कर जाते, प्रौर  
र फिर जल न मिलने के कारण से  
मृच्छित हो कर गिर पड़ते थे ॥१६॥  
॥३७॥ (उपममय राजा की सेना के



॥३६६॥ प्रादिपर्व ॥

मनुष्यों ने भूख के कारण से वही  
तम्रों को, प्राग्नि में भून कर वृ-  
क्षों को कूट कर, और बहुत से वैसे ही  
भक्षण कर गये वन को हाथी घा-  
यल हो कर भय से, प्रयत्नी, सुंद-  
र को डर कर मृतने लगे, और ली-  
द कर ने लगे, और वन छोड़ कर  
भागने लगे ॥३८॥३०॥ उन के  
भाजने से बहुत से मनुष्य दवक  
र मर गये इस प्रकार से राजाने  
सेनां स्त्री मैघ, और बाण स्त्री  
कुंदों से सब वन को छक कर म-  
र्जों को मार कर निशेष कर दि-  
या ॥३९॥ इति श्री महाभारते, प्रा-  
दिपर्वणी एकौ नवमोऽध्यायः ॥  
॥३६६॥ राजा दुर्योधन का  
एक दूसरे वन में जाना, और वहां

॥३६१॥ प्रादि पर्व ॥

एक वडेर मणीक प्राप्ति मको देख  
कर उस में जाना ॥ वैराग्यायन जी को  
लेरा जा दुःस्यंत इस प्रकार से हजारों  
मृगों को उस वन में मार कर प्रौर प्र  
हेर करने की इच्छा से भरवाया सा  
उस वन को छोड़ कर प्रागे कूंचला  
वन के अंत में एक बड़ा पुरान्य स्था  
न देखा राजा वहां से भी प्रागे कूंच  
चला गया प्रौर फेर एक दुसरा व  
न में पहुंचा जहां पीतल मन्द सुग  
न्ध वायु चलती थी प्रने करों के  
फूल खिल रहे थे कोकिला किल्ली  
प्रादि बहुत से पक्षी मधुर स्त्री  
बोल रहे थे वृक्षों की छांया प्रत्य  
न्त सघन थी भौंरे जहां तहां गरुड  
रहे थे रसा को इव दान था जिस पर  
पर फूल प्रौर भौंरे न थे राजा



"३६८॥" प्रादियर्व॥

सवन की प्रतिप्रदु तपो भा  
को देखता हुआ वन में चला ॥  
१॥८॥ उसके जाने में बरहों पर  
से फूल टूट कर राजा के ऊपर  
गिरने लगे मानो बरह राजा  
पर फूलों की बर्षा कर रहे हैं  
राजा पक्षियों के चह चहाट  
को सुनता ~~हूँ~~ सफल बरहों  
की ऊँची ऊँड़ डालियों पर गुंज  
बैते हुये भी सँको भा को देख  
~~देखते देखते~~ ता फूल रूपी वस्त्रों  
को पहनने हुये बरहों की सुगं  
धि को सुंघता ~~हूँ~~ इन्द्र की ध  
जा के समान उंचे बरहों की डालि  
यों के प्रापस में मिलने की को  
भा को निरखता और वह तसे

॥ ३६९ ॥ प्रादि पर्व ॥

वहुत से स्था नों में सिद्धि चारणों  
के समूह, प्रसर, प्रों को जाणा  
अंधर्व, प्रौर किन्तर, प्रादिकों  
को दूखि करता हुआ बन में उत्तम  
चलती हुई वायु को खाता हुआ  
बन में, प्रौर उस नदी के किना  
रे के उंचे बरतों की पोभा को दे  
खाता हुआ उस बन में चला जाता  
था ॥ १० ॥ १६ ॥ थोड़ी दूर जाकर  
राजा ने उस बन में एक प्रप्र  
म, प्रतिश्रेष्ठ जहां सुंदर ना  
ना प्राकार के वृक्ष लगे हुये थे  
पक्षी मधुर बाणी बोल रहे थे  
प्रौर, प्रज्जि कुंडों में, प्रखि जि  
जल रही थी देखा ॥ ११ ॥ १८ ॥



॥२१०॥ प्रादिपर्व॥

बहु० प्राश्रम जो मालिती नदी  
के किनारे परबाल खिल्यसं  
न्यासियों, और २२ बहुतसे मु  
नियों गणों से युक्त था राजा ने  
उस प्राश्रम को प्रणाम किया  
और उस नदी के ब्रह्मपत्नी और  
रमण प्रादिकी पोभा से प्रस  
न्न होता हुआ राजा उस मनोहर  
और देव लोक के तुल्य प्रसन्न  
प्राश्रम में गया ॥१५॥ २२॥  
जब राजा उस प्राश्रम के पास  
पहुंचा तब देखा कि क्या है कि  
वह नदी उस प्राश्रम के कि  
नारे से लगी हुई पाई करती  
हुई वह रही है चक्रवाक प्रा  
दि जल पत्नी और जल के जी

॥३१९॥ प्राद्विपर्व॥

व कि लोल कर रहे हैं, और वानर सी  
धर कि नार धादू लसर्प राज, और  
मतवाले हाथी की डाकर रहे हैं, और  
उस नदी के कि नार पर एक प्रा  
श्रमक पृथ्वी का वना हुआ है  
और वहां बहुत से मुनियों के जा  
ए बैठे रहते हैं ॥३३॥३४॥ उस  
प्राश्रम की पोभा नदी के कि  
के प्रताप से रसी थी जैसे  
बदिकाश्रम की पोभा जां जा से है  
राजानें उस प्राश्रम में कपृथ्वी  
जी के दर्शन करने को जाने की  
प्राभिलाखा से प्रपती से ना के  
मनुष्यों से कहा हा के तुम लो  
जा यहां ठहरो हम कपृथ्वी के  
दर्शन को जाते हैं जब तक हम  
न प्रावेत जब तक हम न प्रावेत व



॥३१२॥ प्रादिपर्व॥

तेके कहीं न जायता ॥२१॥३२॥

प्रौर, प्रापराजचिन्हों को दूर क  
रके, प्रपने साथ मंत्री, प्रौर पु  
ते हित को ले कर उस, प्राश्रम  
में गया रा वहां की पो भा को देख  
कर भूखिया स सब भूल गया

॥३३॥३४॥ जब, प्राश्रम के भी

तर पहुंच चात ब देखता क्या है कि  
वहां य सहो रहा है ऋषि, प्रौर  
प्राज्ञ ए लोग सामवेद ऋग्वे  
द यजुर्वेद, प्रौर, प्रथर्वण वे  
दों के मंत्रों को पद कमधन, प्रा  
दि, प्रलंकारों को से पढ़ रहे हैं  
कोई संहिता का पाठ कर रहा है  
बहुत से ऋषि लोग जो यशों की  
क्रिया में निपुण न्याय तत्व, प्रौर  
प्राज्ञ विज्ञान में सम्यक्त स

॥३९३॥ प्रादिपर्व ॥

माहार में विष्णु रदये और मोक्षध  
र्म प्रम नीवात को स्थापन कर नांद  
सरे के प्रसन्न त को खंडन करना और  
सिद्धांत मत को कहना इस के पर  
म आता पादू और छंद की निरु  
क्ति को जानने वाले काल का ज्ञान  
करने वाले द्रव्य कर्म गुण और धान  
र वाप दियों की बोली समझने  
वाले और बड़े अर्थों को विचार  
करने वाले थे आपस में वार्ता ला  
भ कर रहे थे राजा ने उन की वा  
णि को सुन कर और पांसि  
तवत कर प्रनेक प्रश्न पूछे  
आदि अर्थों को उत्तर उत्तर म और  
सबो पर वेठे हुये जय और होम  
में परा पर और देवकी मंत्रियों  
में वासियों की करी रुद्र वृजा को



॥३१४॥ प्रादिपर्व ॥

दैवकर यह समजा कि मैं इस  
समय ब्रह्मलोक में हूँ ॥३५॥ ४२  
राजा उस प्राश्रम की पुरो को दे  
खकर तृप्त नहीं होता था उपरांत  
त उस प्राश्रम में राजमंत्री प्रो  
परोहित के साथ किसी एक कां  
त प्रौर प्रत्यन्त मनोहर स्था  
न के समीप पहुँची ॥४६॥ ५०॥  
इति श्रावण महाभारते प्रा  
दिपर्व एण सप्ततितमो अध्या  
य ॥१०॥ इति तत्र वा अध्यायः  
राजा दुःस्यन्त का सकुन्तला  
से मिला यह होना प्रौर पाकुन  
तला के जन्म होने की कथा ॥  
वैष्णवायन जी बोले हे राजन  
वह राजा मन्त्री प्रौर परोहित

॥३१५॥ प्रादिपर्व ॥

को उसी सुन जाह छोड़ कर प्रा  
प उस स्थान के भीतर जाया प्रौ  
र वहाँ ऋषि प्रथवा किसी प्रौर  
को न पाकर बड़े उंचे स्वर से बोला  
यहाँ की नहीं ॥१॥२॥ उस पादक  
को सुन उस स्थान में से एक क  
न्या परम सुंदरी लक्ष्मी की पादस  
तपस्वी के वेष में निकली ॥३॥ प्रौ  
र राजा को देख कर प्राद कर बो  
ली प्राप प्रच्छे प्राये ॥४॥ इसको  
पीछे उस कन्या ने राजा का पूजन  
पाद्य प्रर्घ्य से कर के उसको प्रा  
सन पर बैठाया प्रौर दैम कुसल  
पुंख ने के उपरान्त मन्द मन्द मुस  
कान के साथ बोली कहिये प्राप  
का क्या काम है जो कुछ कहो सो क  
रें ॥५॥६॥ राजा उस कन्या की



॥३१६॥ प्रादिपर्व ॥

मधुरबोलीको सुनकर बो  
ला कि मैं करव ऊँचिके दर्पा  
नों को यहां प्रायाथा कहो वह क  
हांगये है ॥१॥ ॥८॥ यह सुनकर व  
ह कन्या जिसका नाम पाकुन्तल  
लाथा सो बोली के मेरा पिता ऊँ  
चिवन में फल फूल लेने कुँ गया  
है तुम ह्या दण भर छु रो वह  
प्राता ही होगा ॥९॥ राजा यह सु  
नकर प्रौर उस कन्या की मंद  
मुख का न तैजे प्रौर तपसे प्र  
काश मानर प्रौर योवन को  
देख कर बोला ॥१०॥ ॥११॥ किहू  
को नहै किस की बेटी है प्रौर क  
हासे प्रौर किस लिये इस वन  
में प्राई है ॥१२॥ तैने प्रपने द  
र्पन मात्र ही से मेरे मन को ह

॥३११॥ प्रादिपर्व॥

रलिया है इस कारण सें मैं तुज  
को जान ना चाहता हूं ॥१३॥ यह सु  
नकर वह कन्या हंसती हुई मधुर  
बोली से बोली ॥१४॥ के मैं धीर्य  
वान् धर्म सतपत्नी कराव ऋषि  
की पुत्री हूं ॥१५॥ राजा ने कहा की  
लोक पूजित ऋषि स्वर महाराज  
तो उर्दू रेंता कहलाते हैं, प्रथा त  
उनका वीर्य नीचे नहीं उतरता है  
, प्रौर ऐसा कहते हैं कि चाहे धर्म  
, प्रपत्नी कृत्य से डोल जावे परन्तु  
प्रांसित वत ऋषि, प्रपने वत  
सें कभी नहीं डोलता है फिर तू  
कों कर ऋषि की पुत्री है ॥१६॥  
११॥ यह सुनकर पाकुंतला बोली  
की मैं, प्रपने जन्म, प्रौर ऋषि  
की पुत्री होने का वत तव वर्णन



॥३१८॥ प्रादि पर्व॥

करती हूँ ॥१८॥ एक समय एक क  
यहां प्राये थे उन्होंने करव कर वि  
से मेरे जन्म का हाल ~~सुना था~~ वही  
में पूछा था मैंने उस समय क र  
कि वि के मुरवसे प्रपना जन्म  
का हाल सुना था वही मैं तुम से क  
हती हूँ ॥१९॥ पहिले कि सी सम  
य में विष्णु मित्र ने बड़ा उ  
उत्तप किया था उन के तम को  
देख कर इन्द्र को प्रपने इन्द्रा स  
न के घी न जाने का भय हुआ  
और उस ने इस उर से मेनका प्र  
पण रा को बुला कर कहा ॥२०॥  
२१॥ कि हम तुज को सब प्रप  
रा प्रों से गुण मैं विषोय सम  
जते हैं तुज से हमारा एक काम

॥ ३९८ ॥ प्रादि पर्व ॥  
 है उस को तू सुन और चि तलगा  
 कर उस को कर ॥ २२ ॥ प्राज कल  
 सूर्य के तुल्य तपस्वी विस्वामि  
 त्रि ऋषि बड़ा उग्र तप कर रहे हैं  
 मुझ को उन से इन्द्रासन धीन  
 जाने का बड़ा भय हो रहा है इस से  
 तू प्रपन स्वरूप योवन मधुवो  
 ली प्रादि से ऋषि के चित्त को ए  
 सालुभा ले कि वह प्रपना चित्त  
 तपस्या में से हटा ले एसा करने से  
 मेरा बड़ा उपकार हो जा तू इस का  
 म कर के जैसे वने वैसे कर ॥ २३ ॥  
 २६ ॥ यह सुन कर मैं न का बोली  
 कि प्राप जान ते हैं के विस्वामि  
 त्रि ऋषि बड़े तेजस्वी तपस्वी  
 और कोधी हैं ॥ २७ ॥ प्राप भी  
 उन से डर ते हैं कि मेरे डरने



॥ ३८ ॥ प्रादिपर्व ॥

में क्या संदेह है ॥ ३८ ॥ हे महारा  
ज यह विष्णु मित्र कर विवही  
है जिन्हों ने वशिष्ठ जी के सब  
पुत्र मार डाले, और तप बल से त  
त्री से ब्राह्मण हुये ॥ ३९ ॥ इन्हों  
ने ही, प्रपने तप के प्रभाव से  
कौसिकी नाम नदी को प्रघट कि  
या ॥ ४० ॥ और फिर जब वह कर  
वितपस्या कर नें को किसी सम  
य पहले चल गये थे, और उस स  
मय, प्रकाल पडने पर राजर्षि म  
तंग नें उनके कुटुंब की स्ति  
थों का पालन किया था तब  
तपस्या से लौट कर, प्रा ने पर  
कर विने उस नदी को नाम पा  
रार करवा, और मतंग को य

॥ ३२४ ॥ प्रादिपर्व ॥  
 सकराया ॥ ३२१ ॥ ३३॥ उस य  
 स में प्रापसौ मयाने को भयभी  
 त होकर गये थे ॥ ३३॥ देखो इ  
 नही विस्वामित्रने को चित  
 होकर दूसरे लोक की रचना क  
 रने को नक्षत्रों को बनाया था ॥  
 ३४॥ भला रोसेतपस्वी ऋषि  
 सें मुऊ को क्यों कर डर न होवे इस  
 सें प्राप रोसा उपाय करिये जिस  
 में वह ऋषि मुऊ को प्रापने को  
 ध सें न जलावे ॥ ३५॥ क्यों के वह  
 प्रापने तप से केवल सें सब लो  
 कों को जला सते हैं पृथ्वी को प्र  
 पने पग सें कंपाय मान कर सते  
 हैं मेरु परवत को कैक सते हैं  
 और दिपा प्रों को घुमाय स  
 ते हैं ॥ ३६॥ रोसे जिते न्द्री और



॥३८॥ प्रादिषवे ॥  
 प्रजिनके समान तेज र खने वा  
 ले ऋषि को मैं क्यों कर स्पृशे क  
 र सक्ती हूँ ॥३९॥ उनका मुख प्र  
 जिननेत्र सूर्य चन्द्रमा प्रौरता  
 राजिद्रा काल के समान हैं मे  
 री सामर्थ्य उनको छूने की न  
 ही है ॥४०॥ तुम भी तो विचार  
 करो कि जिसके प्रभाव से यम  
 राज, चन्द्रमा, महर्षि, विश्वे  
 देवा, प्रौर बाल विल्य ऋषि  
 उरते हैं उनके सन्मुख मुझ सी  
 स्त्री की क्या सामर्थ्य है जो कुघ  
 र सके ॥४१॥ इससे प्राप मे  
 री सहायता के लिये वायु प्रौर  
 र कामदेव को भी मेरे साथ क  
 र दीजिये जिसमें वायु मेरे व

॥३८३॥ प्रादिपर्व  
 स्त्रोको उठा कर मुऊ को न जन के  
 रदे ॥४०॥ ४१॥ इन्द्र ने वायु प्रौर  
 काम देव को मै न को की सहायक  
 करने के वास्ते प्रासादी प्रौर वह  
 सहायक ने को को ले कर इन्द्र का  
 काम करने के लिये वह से विष्णु  
 मित्र ऋषि के प्राश्रम को गये ॥  
 ४२॥ इति श्री भाषा महा भार्ते  
 प्रादिपर्व एतद्विंशतः सर्गः  
 प्रध्यायः ॥ ११ ॥ वह तरवां प्र  
 ध्याय ॥ सकुंतला के जन्म की  
 कथा का वर्णन ॥ जब मै न को  
 प्रप्स रा इन्द्र से विदा हो कर वा  
 यु प्रौर काम देव को साथ ले  
 कर विष्णु मित्र के प्राश्रम में  
 इरती इरती पाँऊं चीत व पह  
 ले विष्णु मित्र को प्रणाम करी



॥ ३८४ ॥ प्रादिपर्व ॥

पौर फिर क्रीडा करने लगी  
क्रीडा करते में वायु ने उस के च  
न्द्रमा के समान प्रकाशमान  
प्रकाशमान वस्त्रों उडा दि  
या, पौर वह नंगी होकर ब  
स्त्रपकड़ में कोहं सती, पौर दो  
इतीहई बिपा मित्र जी के  
सन्मुख, प्राई, पौर विस्वामि  
त्र उस के वरुप नन्दित, पौर  
नंगे पारीर को देख कर काम  
देव की सहायता से काम के ब  
प्रा में हुये ॥ ६ ॥ १ ॥, पौर उस  
को बुला कर उसके पाथ बि  
कसु हार किया, वह, प्रपरा  
उन के पास बनी रही, पौर  
उन दो नों ने, प्रपस में रोपा वि  
रस्य का क्या बहोत दिने ते

॥ ३८५ ॥ आदि पूर्व ॥  
 विहार किया एक दिन एक एक  
 वरस के समान बीता प्रथम दिन के  
 माफक मालुं होता था छोटे दिनों के  
 पाछे हिमालय के पिरवार पर माल  
 ती नदी के पास उस मैत का कैर  
 क कन्या हुई ॥ ८५ ॥ प्रौर वह प्रप  
 सरा देवता प्रों का कार्य सिद्ध जा  
 न कर उस कन्या को मालती नदी के  
 किनारे पर छोड़ कर वहां से इन्डू लो  
 क को चली गई ॥ ८६ ॥ मैत का कैच  
 ले जाने पर वहां के पत्नी उस कन्या  
 के पास प्रा बैठे प्रौर उसको प्र  
 पने घरों से इसकारण से छिपा  
 लिया जिस में मांस के खाने वाले  
 जीव वहां प्रा कर उसको खान जा  
 दें ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ उसी समय में कारव  
 ऋषि भी वहां सन्ध्यो ए सन  
 कार ने के निमि न नदी के कि



॥३८६॥ प्रादिव ॥

नारे पर प्राये और उस कन्य  
को वक्षियों से रक्षित देख क  
र प्रपने प्रास्थान प्रप्रं पर ले  
प्राये और पुत्री भावमान कर  
उसका पालन ना सह किया ॥१२॥  
धर्म दास का कैमत से तीन पित  
होते हैं एक तो प्रोपिता होता है  
जिसका पारीर ही उत्पन्न हो  
दुसरा पिता प्रोजो प्राण दे प्रो  
तिसरा पिता प्रोजो प्रन्न खा  
एकूंदे वे ॥१६॥ इस कारण से  
हे राजा करावचि मेरे पिता हैं प्र  
र मुज से पुत्री गव प्रीतरव  
ते हैं प्रोर मैं उनसे पिता भाव  
मानती हूँ और मेरा नाम करी



रि। टवर्ब ॥  
 माता है किसी  
 किये प्रोदन को  
 ॥४९॥ कोइ मनुष्य  
 प्रजुन की प्रोर देविजे  
 उसके वा ए लेने प्रोर चढ  
 प्रोर धनुष खीचने में प्रनर  
 ता है ॥४२॥ ४३॥ इसी प्रकार से  
 भी श्रीजी को भी देव नहीं सहा है  
 कर देव राजनें उन दो नों वीरों के सम  
 जम को दिवा पुष्पो की वर्षा से पूजा इसके पीछे  
 भी श्रीजीनें धनुष खीच कर प्रजुन के देवते  
 देवते उसके वा मया पव में वा ए मारे तव  
 जुन में हंस कर वडी धारवा ले वा ए से भी श्री  
 जी का धनुष काट डाला ७ प्रोर उनकी धा  
 ती में दया वा ए मारे उनसे वेधि न हो कर  
 र धर्म भी श्री रथ के डंडे को पकड़ कर वडी र  
 तक वैठे रहे उनकी यह दया देव कर रथ  
 को नें कलासा थी ७ उनके उपदेवा को सार्ण  
 कर के रथ को हांक कर प्रचेत भी श्री को दू  
 र ले गया ॥४४॥ ४५॥ इति श्री भासा महा  
 भार्ते विराट्पर्वणी चतुःषष्टितमोऽध्या



॥ प्रजुन को दुरोध  
 कर एसे भाजन  
 जाज मे जे जव भीष  
 जाज ये तव वडे मन काला दु  
 कि रके धनुष लिये रु ये जर त ता रु  
 सुख माया ॥ १॥ और एक भल्ल धनु  
 त क दी न कर प्रजुन के ललाटे मे मारा ॥  
 लगे से प्रजुन की जो भा ऐसी होग ई मान  
 के एक पिंजर पर प्रकला वा सरखस है ॥ ३॥  
 सिपर लगे रु धवा ए से प्रजुन का माथा घाया हो गया  
 और उस मेरे उग्रा रु धिर की धार निकलने लगे ॥ ४॥  
 उस वा ए के लगे ने से प्रजुन ने जो धि त हो कर प्रजुन  
 और विष से ऊपर कम द रजा रखने वा ले वा ए को  
 ले कर दुरोध न को मार ना प्रारम्भ किया ॥ ५॥ तव दु  
 रोध को धमने भी और वा ए प्रजुन के मारे और प्र  
 जुन ने दूरे वा ए दुरोध न के मारे इस प्रकार से वे  
 हो तो प्रजुनी छव दि कुच को ल तक प्रचरे प्रकार  
 से लडते रहे ॥ ६॥ विक र्ण पर्वत के तुल्य मतवाले  
 हाथी पर सवार हो कर साथ में चार रथी लिये रु ये प्र  
 जुन पर दौड़ा ॥ ७॥ तव प्रजुन ने वडे फ ल का ती व वा  
 ए ले कर का न तक र्वी चकर उस शीघ्रता से आने वा  
 ले हाथी के धिर में मारा ॥ ८॥ और वह वा ए हाथी के



मा  
इन्  
॥६॥  
प  
तका  
र विक  
रकर  
जुं न  
को वें  
और व  
दिया  
योई  
भी  
६३॥ ६४॥  
६५॥  
भाई  
व  
पने  
धननि

वै॥

चला गया जहां तक परे लगे थे मानों  
रामान पर्वत को चीर कर घुस गया है  
निसे बहा धी कें व पकर पीड़ी त होकर  
गर से गिर पड़ा जय सब जत्र के गिरने से पर्व  
कर गिर जाता है ॥६०॥ उसके गिरने प  
प्र उतर पड़ा और भय से चपट सी घे को ह  
ति के रथ पर सवार हो गया ॥६१॥ फिर प्र  
वज्र रूपी हाथी को बाण से पर्वत रूपी हाथी  
एक बाण दुर्योधन के वक्षस्थल में मारा ॥६२॥  
सिं बाण मार कर सब थोड़ा और को घायल कर  
दिया इस प्र र से हाथी का मरना और विकर्ण प्रादि सब  
योई वों के घायल हो कर भागने को देख कर दुर्योधन  
भी रथ को फेर कर उस और भागा जिधर प्रजुं न न था ॥  
६३॥ ६४॥ प्रजुं न ने उस को भाग ते हुये और हृष्टि  
धिर से लिप्ट घायल देख कर तालिय वों जाई ॥६५॥  
और हा कि प्रे दुर्योधन तू वड़ी कीर्ति और परा को धो  
इ कर रा से विष्ठ मु खि हो कर को भागता है क्या ते रा  
ज भ र हो गया प्रव को जय के वाजे न ही बज वाता है ॥  
६६॥ मै क नी की तीरा पुत्र पुष धि धिर का आ ता का सी  
भाई हमें प्रदु में छु छ स्थि तहं तू को भाग जाता है प्र  
व प्रपने मुख को फेर कर हमारा सब धन दे दे और प्र  
पने छूष त प्रादी कर्मों को याद कर तेरा नाम दुर्यो  
धन नि सुखे फल र कसा गया है प्रदु से भाग ते वा



॥ १६६ ॥ ॥ १६६ ॥ ॥ १६६ ॥  
 ले को नाम दुर्गो धन कदा विन हो ना  
 में नहीं देखता हू कि प्रा जायो पीछे  
 कर सकें इस से प्रच्छ है कि त्र पुत्र  
 ने प्यारे प्राणों को बचा ले जा ॥ १६६ ॥  
 हा भातें विराट पर्व एी पंच घटित  
 ६५ ॥ घरा सठ को प्रधाय ॥ प्रजुन के  
 यों से पुत्र होना सब कामो हित हो जान  
 न के वस्तु हरण करना और वों का हरक  
 वैराग्या मन जी बोले हेरा जा जन्मे जय  
 बुलाये जाने पर दुर्गो धन का एी ह्य प्र  
 मि भूष प्रौर के धित हो कर मत वाले हाथी प्रो  
 र पोर की नीचे देव देह ये सूर्य की भांति रथ फिर वा कर  
 प्रजुन के समुख लौटा ॥ १६७ ॥ २ ॥ उस धाय लो को इस  
 प्रकार से लौटते देह दे कर नर वीर कर्ण ने प्रागे व  
 ठ कर उसको सेका और उतर की प्रौर से प्राप प्रजु  
 न के समुख लौटा ॥ ३ ॥ उसी समय पात्र परा जय कर  
 ने वाले भीष्म जी भी धनुष बाण लि ये देह लौट पडे  
 प्रौर उन्होने दुर्गो धन के यपि च म प्रौर जा कर उस  
 की रक्षा कि ॥ ४ ॥ इसी प्रकार से द्रोणाचार्य कपाचा  
 र्य विविं वाति प्रौर दुर्गो धन सन भी धनुष बाण लि  
 ये देह लौट पडे प्रौर दुर्गो धन के प्रर्थ प्रजुन के स  
 मुख लौटे प्राये ॥ ५ ॥ प्रजुन ने ह्य उन सब महा  
 वीरों को सेना सहित दूर जल प्रवाह की भांति  
 लौटा ॥ ६ ॥ प्रा देह कर सूर्य की भांति सब को तपा

॥ १६६ ॥  
 ॥ १६६ ॥  
 ॥ १६६ ॥  
 ॥ १६६ ॥

हर धि  
 निका  
 र जाना  
 कार से  
 रा से प्र  
 ॥ १६६ ॥



६॥ उन सब कीर्तन में प्रयत्न र प्रसन्न ले  
इस प्रकार से बाण बर्षा कि जैसे पर्वत  
उत्पन्न है ॥ १॥ तब अर्जुन ने प्रयत्न प्र

बाण बर्षा को रोक कर और हटा कर  
अभी प्रसन्न को प्रसन्न गट किया जो किसी  
ने ही सत्ता था और मेरु मोहित कर

॥ ८॥ और सुन्दर धार और पत्र रखने  
में सब दिशाओं को व्याप्त कर के जो दि  
शा दुःख से सब कौरवों के मन को घीरि

त कर ॥ ९॥ और महा कर्षण नाद ध्वनि को दो  
नों हाथ से बजा कर वाव दिशा पथी और प्राका  
श को प्रादुर्भूत कर दिष्टा ॥ १०॥ उस को सुन कर

सब कौरवीर मोहित हो गये और प्रयत्न रहा  
थों में धनुषों को छोड़ कर जहाँ केत हाँ रुका वे ॥ ११॥

उन सब को प्रचेत देख कर अर्जुन ने उत्तरा के  
बचनों को स्मरण कर के विराट्पुत्र से कहा कि जगत  
क सब से नीचे प्रचेत है तब तक तू सेना के भीतर जा

के दो एण चार्ध और कथा चार्ध के देव तब तक कर्ण के भी  
तो वर और प्रश्न धामा और रघु धो धन के नीला  
ज्वरों को ले आ भीष्म मेरी समझ में सबे त है कि

वे प्रसन्न के प्रतिघात को जान लें इस से तू इन के बीच में प्रे  
म के र से जगह सुन कर विराट्पुत्र बागा और  
छोड़ कर रथ से कूद पड़ा और महा रथियों के व



॥३६३॥ १॥ साटवर्ष

का

सो को लोको लोकर फिर रघु

॥३६॥ १५॥ और सु नहरी ऊर

डों को हां कर कोर को की सेना को

थ को बाहि र ले प्राया ॥३६॥ ७॥

ख कर भी धम जी ने उसके वा ए

न ने बा एों से भी धम के रथ के घो

१॥ बा ए भी धम जी के धम के धम के

और उन को छो ड कर नि विच्छता से र

हर निकल कर इस प्रकार से प्रा ख

सूर्य से वाद ल को फा ड कर निकल प्रा

इस के पीछे दुर्ग धन प्रा दि सब वीर स चेत हो जाये

और दुर्ग धन ने उस देव राज के तुल्य प्रजुन

को प्र के ला ख डार प्रा देख कर भी धम जी से कहा

कि प्राय से यह प्रजुन कि सप्र से मुक्त हु प्रा ऐसा

मम धन की जिसे जिस से वह मुक्त हो कर अपने न

पावे यह सुन कर भी धम जी ने हंस कर कहा कि तेरी

बुद्धि कहा है और उस समय प्रा के मते रा कहा गया था

॥३६॥ २॥ अब धनुष और बा एों को छो ड कर मो हि

लोग या प्रा निपचय प्रजुन का मन पास में नहीं है

दया हीन कर्म करना चाहता है यही तीनों लोक भी

उस को मिल ते हो तब भी प्रजुन प्रपते धर्म को न

छो डेगा यही कारण है कि तुम सब को मोहित हो

ले पर उस ने किसी को नहीं मारा तब तुम कौर वों



॥३८५॥ विराट पर्व ॥

कीर लोको मोह केव समें हो कर प्रप ने प्रपो जन को  
नव हस त करो जो काम करो सो नि विघ्न तासें करो प्र  
वे प्र जन को जो ऐं जीत कर जाने दो वैरा म्याय त जी  
बोले हेरा जा जमे जय को धित प्रौर नव प्रपो जन रा  
जा दुर्योधन प्रम ने पिता मरु के उत्त हित का सीव च नों  
को सुन कर चुप हो रहा प्रौर कौर वों ने भी जो दुर्योधन को  
घेरे खड़े थे प्रर्जन रु पीव डी रुई प्रणि को देख क  
र भीष्म धर्म जी की बात को परम हित माना प्रौर कों  
से सब लौठ दिये उस समय प्रजन ने प्रसन्न हो कर  
एक मुहु र्त तक साम ह वचन कह कर भीष्म जी प्रौर  
द्रोण चार्य प्रौर कृपा चार्य प्रौर प्रमत्ता मा प्रादि  
प्रम कौर वों के दृष्ट म मान लो जो के चरणों में बाण डाल  
कर यथा योग्य साष्टाङ्ग दंडोत् प्रौर नस्कार की प्रौर  
क बाण मार कर दुर्योधन के उत्तम रत्न जयित मुकर को  
काट डाला ॥३८॥ ३९॥ इसके उप रान्त जांड़ी वधनुष के  
पाठ से सब लौकों को पाहुन कर के उसने देव दत्त नामी  
पांख बजाया उस से पात्र वों को मन भय भीत हो जये  
प्रौर फिर प्रम ने दृष्ट की ध्वज जा से सब कानि रादर  
कर के वहां राग भस्मी में स्थित रहा प्रौर प्रसन्नता पूर्वक  
विराट पुत्र से बोला ॥३८॥ ३९॥ कि प्रवत्तु नारे पशु हस  
नें जीत कर लिये चलो रथ लौट ले चलो प्रौर नगा  
र को चलो नगा देख व पात्र प्रव चले जाये सब देवता  
प्रर्जन प्रौर कौर वों के उस व डे समा गम को देख कर  
प्रसन्न हुये प्रौर प्रर्जन के कर्मों को विचारने लगे



॥३८॥ विराट्पुर्व॥

वनैः स्थानको चले जाये ॥३०॥ ३१॥ इति श्री भष्म महा  
भार्ते विराट्पर्वणी षट्सु चित्तमोऽध्यायः ॥६६॥ स  
उसटकाऽध्यायः ॥ अर्जुनको कौरवों को विजय करके  
नजर को लौटना और दूतों को जयका संदेश पाले करन  
में भेजना ॥ वैशम्पायन जी बोले हे राजा जन्मे जय जब  
अर्जुन राजा विराट् के धन को जीत कर जाधा त  
व प्रार्थने उसे कौरवी सेना के वृत्त से मनुष्य मिले  
जो युद्ध के समय भय से जहां तहां वन में जालु के  
धे और अब कौरवों के चले जाये ने पर वन से नि  
लकर भू विद्या से और प्रदेष के कारण से प्रचे  
त से चले जा रहे थे उन्होने अर्जुन को देख कर प्र  
णाम किया श्री कृष्ण कहि हम लोग प्राप  
एक का क्या प्रिय करै अर्जुन यह सुन कर बोला कि  
उमलौ जड़ हो मत और धैर्य धार एक छोर में क  
भी पीड़ित को नहीं मारता हूं जा प्रो तुझा राजा  
राक ल्या ला हो ॥१॥ ५॥ वैशम्पायन जी बोले हे  
राजा जन्मे जय यह सुन कर सब घोड़ा और नैः प्र  
जुन को प्रायु की इति और यथापाने  
कोणी वाद देकर प्रसन्न किया ॥६॥ इतके सिवा  
य प्रत्येक कौरव भी उस मत वाले हाथी के तुल्य  
और लौट कर राजा विराट् के पास जाते वाले वीर  
अर्जुन के सनमुख नज्जस के तदन्तर अर्जु  
न ने उत्तर दे कहा कि हे तात तू प्रव्रजानता ही  
है कि पांडव सब तेरे पिता के पास रहते हैं पर



॥३६६॥ विराट पर्व ॥

ननु मनजर में प्रवे पाप ~~कर~~ करने पर उनकी प्रपं  
सान कर ना हो सान हो किरा जा मतस्य भयभीत हो के  
रजा पा हो जाय ॥१॥६॥ पात्रु प्रों को जय करने और जो  
प्रों के लौटा ने मैं जो कर्ष म ने किया है उसको तुम प्र  
पत्न कि पाहु प्रा कर्म प्र पने पिता के समुत्त कह ना ॥  
६॥ यह सुन कर उत्तर बोला जो कर्म तुमने किया है वह  
प्रपार है मेरी सामर्थ्य वैं सा कर्म करने की नहीं है परन्तु  
जब तक प्राप नक है जो तब तक मैं यह न करूँगा कि पाहु  
कर्म प्राप ने किया है ॥६॥ वैपा प्र्याय नजी बोले हे रात्र  
जा ज जी जय प्रजने रात्र भूमी से चल कर समुत्तान में  
जहां छे कर का बूझा वहा प्रापा और रात्र से उत्तर पडा  
तब प्रजिन की तुल्य महा कर्म विप्राणिमों सहित प्राका  
प को चले ज प्रो रव हमा या से रचित ध्वजा प्रज रात्र  
नहो जइ उस समय वांणों से घोष ल प्रज प्रजने ने  
उत्तर ध में सिंह का चिन्ह रात्र ने वाली ध्वजाल गा  
ली और सब रात्रा धनुष और तरकसों को पूर्व ते  
छो कर के वृक्ष पर रात्र कर वहा से स्तर थी हो कर उत्त  
र को रात्र में बैठा कर और वेणी बांध कर फिर प्रप नच  
रूप वृक्ष नला का स्त वना के रनगर की और चल दि  
या वैपा प्र्याय नजी बोले हे रात्र जा ज जी जय उत्तर लौ को  
रात्रों ने भजन और महा दुःखी हो कर हसिना पुर की  
राह ली और इधर प्रजने ने प्राजे वृक्ष कर मार्ग  
में उत्तर से कहा ॥६॥१॥ कि दे खो यही सब जो क  
ल है जो प्राज जी ता है प्रवहं म इस समय यही ठहर  
कर घोड़ी को स्तान कर रा की कर और पाती पिता  
कर प्रा राम देंगे तुम वीर इन जो पा लों को भेज कर



॥३६॥ विराट्पूर्व ॥  
 नगर में प्रमनौ जय का संदेश भेज दो ॥ १२ ॥ २० ॥  
 यह सुनकर उत्तरने लगी घटा से जो पालों को बुला क  
 र कहा कि तुम लोग नगर में जा कर यह संदेश राजा  
 से कह दो कि सबरात्र हार कर भाग जाये और जो जी  
 तली ॥ २१ ॥ इस के पीछे उन दोनों ने भले प्रकार से  
 मंत्र किया और उस छोकर के वचन को फिर पूर्व व  
 त ही कर के विजय होने के प्रानन्द से प्रसन्न हो  
 कर वहां से वह ननला स्त्री प्रजुन को साथ लेकर के  
 उत्तर रथ में बैठ कर नगर की और चल दिवा ॥  
 २२ ॥ २३ ॥ इति श्री भाषा महा भारते विराट्पूर्वणी  
 सप्तषष्ठितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥ प्रउ सठवां अध्या  
 य ॥ उत्तर का नगर में पहुंचना और राजा विराट का  
 जय का संदेश सुनकर प्रसन्न होना और धूत से  
 लना और मुद्दिष्ट की नांक में पाया मारना  
 और रुधिर का निकलना ॥ वैशम्पायन जी को  
 ले हे राजा जन्म जय धार का तो बताना हो चुका  
 प्रव उधार का प्रव उधार का बताना सुनो जिधर  
 राजा विराट जिगर्त दे फियो से मुद्द कर नें जाया था  
 वह राजा जिगर्त दे फी मराजा को सेना सहित जी  
 ते कर चारों पांडु को सहित ते ~~जिगर्त~~ वडी प्रसन्नता  
 पूर्वक प्रमन नगर में प्राया ॥ २४ ॥ २॥ और पांडु  
 व प्रादि सब द्रवियों सहित राजसभा में सुन्दर  
 आसन पर बैठे उस समय महात्मन और सब प्रह  
 री राजा के पास प्राये राजा ने उन सब को प्रसन्न  
 कर के विदा किया उपरान्त राजमंदिर में जाकर



॥ ३६८ ॥ विराटपर्व ॥

उसने पूछा कि उत्तर कहाँ है तब सन्निधों और कन्य  
ओं ने और दासदासियों ने कहा कि कौरवोंने भी  
आकर्ण दुर्गोचमरुपाचार्यद्वारा और प्र  
भुवत्थाभा प्रादि धैर्य सारथियों के साथ नगर के  
उत्तर और से आकर राज्य की ओर उहरी थी उसको  
सुनकर उत्तर चौधकर के सहस्र से उनसे महा  
रथियों से प्रकैला बहन्तला सारथी सहि  
त युद्ध कर ने जाया है ॥ ३॥ ८॥ वैशम्पायन जी को  
ले हे राजा जन्मे जय राजा विराट ने उत्तर का प्रकैला  
जीना और बहन्तला का सारथी होना सुनकर बड़ा  
घोच कि या उपरान्त उसने प्रपने मुख मंत्रियों को  
बुला कर कहा ॥ ९॥ कि कौरव प्रथम जो ई राजा हो  
गा वह विजय दे दिये को पराजय सुनकर कभीरु  
करने को न ठहरेगा इससे बहुत परीष्ट उन सेना जनों  
को जो घायल नही है उत्तर की रक्षा के लिये भेज दो ॥  
१०॥ ११॥ ये सब जितने रथ छोड़े हाथी हैं  
वह सब सव को परीष्ट तैयार करा के भेज दो इस प्र  
कार से प्राशम ने परजव चतुरंजिनी सेना प्र  
नेक वीर और शास्त्र युक्त तपारुई तब राजा ने प्रा  
दि किष्की धृता कर दे लो कि राजकुमार जीता है वा मा  
रा गया मेरी समझ से जिस रथी का सारथी नष्ट  
हो वह कपसे जीता होगा ॥ १२॥ १३॥ वैशम्पायन जी  
बोले हे राजा जन्मे जय उस समय धिधिरने राजा को  
दुखी देख कर कहा कि जो बहन्तला सारथी है तो पात्रे



॥३६॥ विराटपर्व॥  
 सुनारी जो कौ कोन ले जा सकें जे ॥१५॥ तेरे पुत्र ने व  
 डे हित का ही सा रथी के साथ प्रनुष्ठान किया है व  
 ह प्रम से सारथी के होने से सब को रव प्रौर देवता  
 प्रसुर सिद्ध प्रौर राक्षसों को भी जीत सका तो  
 है ॥१६॥ वैशाम्पायन जी बोले हे राजा जन्मे जय दु  
 सी प्रवसर में उत्तर के भेजे हुये दूत प्रापहुं चे प्रौ  
 र उन्होंने विजय होने का संदेश कह सुनाया ॥  
 १७॥ मंत्रियों ने उस को सुन कर राजा से जाकर क  
 हा कि महा राज कौरव पर जय हुये प्रौर उत्तर जो  
 वों को जीत कर नगर के निकट प्रापहुं चाहें प्रौर  
 प्रयत्न सा रथी सहित कृपा ल है ॥१८॥ १९॥ वह  
 सुन कर मुखे धिधिर बोला भला प्रारब्ध से जो  
 जीत ली गई प्रौर कौरव भाग्य पर नु इस में कोई  
 प्राप्ति श्रम की बात नहीं है तेरा पुत्र क्या जि  
 सुन सका सा रथी दहन्त ला हो वही जय कर सका  
 है वैशाम्पायन जी बोले हे राजा जन्मे जय राजा विरा  
 ट पुत्र की वीजय सुन कर बहुत प्रसन्न हुवा प्रौर दूतों  
 को वस्त्रादिक दे कर मंत्रियों को प्रासादी ॥२०॥ २१॥  
 सब राजमाओं को पता का प्रों से प्रलंकृत करो प्रौ  
 र उत्तर व कर स्वदेवता प्रों की पूजा करो ॥२३॥ प्रौ  
 र समतलें हथी पर बड़ा घंटा ले कर एक मनुष्य को  
 सवार करा दो कि सब चौरा हो पर वह समारी विज



॥ ४०० ॥ विराट पर्व

य घोषित करै ॥ श्री रघु ख्य २ यो हू ऊ मां ॥ और ॥ प्रलं  
कृत जलिका ॥ श्री रस वाजें पुत्र की ॥ आ जो नी को भे  
ज दो ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ और उत्तर अभी सब स्र प्रजार क  
र के कुमारी यों के साथ उत्तर की ॥ आ जो एरी को जाय ॥  
२६ ॥ वैष्णव्या यन जी बोले हे राजा जन्मे जय राजा की  
॥ आ सो से स वनं जर मां जल्य वस्तु ॥ प्रों को सें पुत्र कि  
या ज या ॥ और सुन्दर स्विस्व वान स्त्रिया दधि ॥ और  
पूर्वा ॥ आदि मं जल वस्तु लिये हुये ॥ और मेरी पांव  
तूर्य नां दीर ॥ और टो लें ॥ आदि ॥ प्रने क वा जो साहित  
सुत ॥ और मा जय सब ॥ प्रन्त स्र प्र राजा मी राज  
पुत्र की ॥ आ जो नी को जाये ॥ २७ ॥ २८ ॥ वैष्णव्या यन  
जी बोले हे राजा जन्मे जय उत्त प्रकार से से ना क या ॥ और  
॥ प्रलंकृत वैष्णव्या ॥ प्रों को राज पुत्र की ॥ आ जो नी को भेज  
र राजा विराट ने प्रसन्न ता पूर्व क कहो कि हे सैर न ग्री ॥  
जा पा दो उठा ला ॥ प्रों कं क जु वा होय ॥ मह सुन कर य  
ह सुन कर पुष्पि चिर बो ला ॥ २९ ॥ ३० ॥ किह मनें सु  
नाहें कि प्रसन्न मनुष्य के साथ खिलानी को नृवान ले  
ला वाहि ये सो इस समय ॥ प्रापके ॥ आ तन्द में होने के  
कारण सें मेरी इच्छा जु वा खिलने की ना है ॥ ३१ ॥  
परन्तु मु ऊ को ॥ प्रापका प्रिय करना है ॥ स से जो ॥ आ  
पकी इच्छा होय तो ॥ आ इये खिले राजा वे ॥ ला कि स्त्री  
॥ और सुवर्ण ॥ आ ही जो क छ द्रव्य है ॥ प्रा को विना  
॥ आ खेले का मिल सका है ॥ पहला ॥ ॥ पुष्पि चि



॥ ५०६ ॥ हि राट वर्व ॥  
 राजा कि प्रो वको वहु तदो घर खरव ने बाले न  
 पंक विने ने से काला भई ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ सु आखे  
 ल ने से वडे र दोष है इस से उस को त्याग ही प्र  
 चर है प्राम ने पुछि छिरनां मी पाहुव को दे ख  
 धा सुना हो गा कि उस ने कै से व हि पुक्त देषा  
 ताय प्रो रघन को देव स दूषा भाई को स हित जु  
 ये मे हार दि ये ये इसी से मे सी रुचि जु प्रो खिल  
 ने में नहीं है ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ पर नु जो प्रो प्राय उस  
 को प्रो प्रो प्र चर समजते हैं तो प्रो ई ये  
 दे लें वे पा म्या मन जी बोले हे राजा ज मे जय इस  
 के पीछे जु प्रो प्रार म्भ रु प्रो उसी समय विराट  
 ने पुछि छिर से कहा ॥ ३६ ॥ देखो प्रो ज मे रे वे  
 टे ने कै से कौरवों को जीता है यह सुन कर पुछि  
 छिर बोला ॥ ३७ ॥ कि जि स का सारथी बृह न्ते  
 ला हो उस की विजय क्यों करन हो यह सु न कर  
 राजा विराट ने बो धित हो कर कहा ॥ ३८ ॥ प्र  
 रे नी च प्रो ज ए तु ऊ को य ह सा न न ही है कि  
 कौन वा त कहने की है कौन नहीं कहने की है तू  
 न प्रो सब को मेरे पुत्र की तुल्य कह कर मे रा प्र  
 समान कर ता है ॥ ३९ ॥ भला बता तो वह मेरा  
 पुत्र हो कि मी प्रो दि क कौरवों को क्यों कर वि  
 जय न ही कर सका है अब तो मे तु ऊ को सखा जा  
 न कर दो ॥ ४० ॥ पर नु जो तू प्रय ना जी वि



॥४२॥ विराट्पर्व॥  
 तब वह तो फिर रोसा मत कहियो यह सुनकर पुच्छिर  
 बोला कि दो एकाचार्य कृपाचार्य भी छमा प्रसन्न था मा  
 कर्ण और राजेन्द्र दुर्पोधन प्रादिकों सिवाय वह न  
 लाके मरुत गणों सहित साक्षात् इन्द्रभी नहीं  
 जीत सकता है उसकी भुजा बलको समन नह प्रा  
 है और न हो गा ॥४०॥ ४३॥ वडे पुरुको देखि क  
 र वह प्रसन्न होता है और उसने सुमुख प्रा ने  
 बाले सब देवता और प्रसुर और मनुष्यों को जय  
 किया है ॥४४॥ रोसा ~~है~~ सहायक पाके  
 रकों कर राजपुत्र की विजय न होय यह सुनकर  
 विराट ने कहा कि हम ने वहोत निधेय किया पर न  
 रु प्रपनी जिहा को बस मैं नहीं रखता है ॥४५॥  
 सत्य है जो दण्ड देने वाला को ई न होय तो कोई म  
 नुष्य धर्म न करे वैशम्पायन जी बोले हे राजा  
 जे भोजय यह कह कर राजा विराट ने वडे को धसें  
 पुच्छिर को डपट कर कर कहा जैसा तु कहता  
 है वैसा नहीं है और फिर पासा हाथ में ले कर  
 वडे बल से पुच्छिर की नायिक में मारा उस  
 के लगने से पुच्छिर की नाक से रुधिर  
 बहने लगा ॥४६॥ ४७॥ तब धर्मात्मा पुच्छिर  
 रने उस रुधिर को पृथ्वी पर गिरने न दिया कि  
 उ प्रपने हाथ में रोक कर समाय स्थ द्रोपदी की



॥५०॥ ३॥ विराटपर्व॥

प्रोह देखा ॥५०॥ कह्यतिदिता ॥ न० प्रभिप्रायको  
जाने जाइ, प्रोहणी घृजा करपानी भराहु ॥ प्रासुवेण  
कापात्रले ॥ प्रा॥ ५१॥ ॥ प्रोह (उसमें नासिका से  
गिरते हुये रुचिर को ले लिया इसी प्रवसर में  
प्रतिप्रसन्न (उरनें) प्रनेक प्रकार के पुष्पो मा  
लाधारण कि ये हुये ॥ प्रोह ॥ पुरुभजं न्धलागा  
येहु ये नगर में प्रवेश कि या ॥ प्रोह नगर निष्वा  
सी ॥ प्रोह देखा वा सी मनुष्यों ने सुन्दर स्त्रियों स  
हित राज सभा के द्वार पर ॥ प्राकर राजा के पास  
प्रपन्न ॥ प्रा ने का हा ल कह ला भे जा ॥ प्रोह द्वार  
पालकों ने राजा से जा कर कहा ॥५०॥ ॥५१॥ कि  
महा राज ॥ प्रा का पुत्र वरु नाला सा रथी ॥  
सहित सभा के द्वार पर खड़ा है यह सुनकर रा  
जा ने प्रसन्न हो कर कहा ॥५३॥ कि ॥ प्रहृष्ट दो नों  
को क्षीघ्र भीतर ला ॥ प्रोह ॥ उन दो नों के श्वने की  
इच्छा से वै ठाहु ॥ प्राहुं उस समय पुच्छिघिर में  
उस ला ने वाले से कान में कहा ॥५४॥ कि केव  
ल उत्तर ही को लिवा ला वह न्न लान ॥ प्रा ने पा  
वै क्यूं कि उस का यह वत है ॥५५॥ कि सिवाय  
पृथु में सन्मुख ॥ प्रा ने वाले के जो कोई मनु  
ष्य मेरे मार कर घायल कर दे ॥ प्रथवा रुचिर



॥४५॥ विराटपर्व॥

निकाले वह जीतन ही बच सका ॥५६॥ सो वह मु  
झको रुचि र भरारु प्रादेव कर प्रपने को धको  
सहन सकेगा और राजा को मंत्रियों सहित मारक  
र सेवना को भी मार डालेगा ॥५७॥ इति श्री भाषा  
महाभारते विराटपर्व एव प्रथमः स्थितो  
अध्यायः ॥५८॥ उत्तर का  
राजसभा में जाना उसके कहने से विराटका पुत्र  
हिरसे प्रपराध क्षमा कराना और विराटका उ  
त्तर की प्रणाम करना ॥ वैशम्पायन जी बोले हैं राजा  
जन्मे जय इसके पीछे राजपुत्र भूमी जय जिसको उ  
त्तर भी कहें तब राजसभा के भीतर गया और उसने  
प्रपने पिता के चरणों को नमस्कार कर और कंक  
को भी डंडवत की ॥१॥ और रुचि र से निपुण पिय  
र र कान्त में बैठ गया और जीसके पास से रुचि र  
स्थित थी ॥२॥ उसको देख कर उत्तर ने पीछता  
से पूछा कि इसको किसने मार कर प्रपराध कि  
या है ॥३॥ यह सुन कर विराट बोला कि इस कुटि  
ल को मैंने मारा है यह इतनी प्रतिष्ठा के योग्य न  
ही है क्योंकि तुझ से सूरवीर के प्रतिष्ठा योग्य हो  
ने पर यह नपुंसक की बड़ाई करता है ॥४॥ उत्तर बो  
ला महाराज आपने बड़ा प्रकार्य किया या इस  
को पीछे प्रसन्न कीजिये नहीं तो त्रास एव के को  
धको प्रजि आपको सहलत है तनाकर



॥५०॥ ५॥ विराटपर्व॥  
 देगी ॥ ५॥ वैशम्पायनजी बोले हे राजा जन्मै जय पुत्र  
 के वचन को सुनकर राजा विराट ने राख ठकी हुई प्र  
 ण की तुल्य पुच्छिष्टि से अपने प्रपराध की त  
 मा चाही तब पुच्छिष्टि ने कहा कि हे राजा वहु तदे  
 रुई कि हमने तेरा प्रपराध क्षमा किया हमारे  
 क्रोध का लेपान ही हमें ॥१॥ परन्तु हाँ जो हम  
 देश सीरु का रुधिर पानी पर गिर पड़ता तो तिन  
 सँदेह हम सब देखें और तुम नाश हो जाते और  
 २ प्रपराध से निरः ॥ पराध ताडित होने पर भी  
 में प्राप को दोष न देता हूँ क्योंकि बलवान् म  
 न् व्यक्रुषीष्ट रुद्र कर्म करने लगता है ॥  
 ॥६॥ जब रुद्रिः बन्द हो गया तब वह नन्ना  
 राजा सभा में प्रवेश किया गया उसने भी रा  
 जो और कंक को उँवत की ॥६॥ इसके पीछे रा  
 जा विराट रुद्रिः पुच्छिष्टि को पान्त करके अर्जु  
 न के सन्मुख उत्तर की प्रशंसा करके कहने ल  
 गा ॥११॥ हे माता के प्राण नद बढ़ाने वाले पुत्र  
 मैं तुझ सा पुत्र पाकर पुत्रवान् हूँ प्राण तुझ सा पुत्र  
 मेरे नरु प्राधा और न हो जा ॥१२॥ हे पुत्र जो  
 कर्ण रत्न वीर है कि हजारों चाल चलने पर न  
 एक चाल में भी न चूके उस कर्ण से तेने कप से  
 उद्दिष्ट किया ॥१३॥ जी सभी धर्म की तुल्य वीर है



॥५॥ ६॥ विराट पर्व ॥

स नर लोक में कोई इन्हें है उससे तेरा कि स प्रकार  
सं समा गम रुद्र ॥१५॥ प्रौर जो या दव प्रौर को र  
व प्रौर सब द ची कुलों का प्राचार्य ब्राह्मण प्रौर  
सब स्त्रधारियों में श्रेष्ठ दो एाचार्य नामी है उस  
से तेरा पुत्र कि स प्रकार सं रुद्र प्रौर जो प्राचा  
र्य का प्रचित्ता माना भी पुत्र सब रास्त्रधारि  
यों में बड़ा पूरवी रखा त है उससे तू कय से लडाया  
प्रौर जिस कपा चार्य को दे ख र घोड़ा लो ग रे से  
दुखी हो जाते है जय से धन हरे रुये व्यापार पारी  
लो ग उससे तेने कय से समा गम किया प्रौर जो  
दुर्धन नामी राज पुत्र प्रपने का एों से फल रुद्र को भी  
वैधस तो है उससे तेने कि स प्रकार से पुद्र कि  
या प्राज मेरे सब रात्र परा जित रुये प्रौर मेरे स  
ख सुरवस्थी वायु चल रही है ॥१५॥ १६॥ तेने  
प्राज बड़े बलवान् वीर को रकों को पुद्र मै हय  
कर भगा दिया है प्रौर निश्रय उन से गोधन  
इस प्रकार से जीता है जैय से परा रदूल प्रांस को  
छीन ले ॥२०॥ २१॥ इति श्री भाषा महाभा ते वि  
राट पर्व एा एको न स प्राति तमोऽध्यायः ॥६॥  
स तेर का प्रध्याय ॥ उत्तर का राजा विराट से कह  
ना जो प्रौर प्रात्रु प्रो को कि एा देव पुत्र ने जीता  
है मेरी मेरी सामर्थ्य नहीं है ॥ उत्त प्रपां सा को पुत्र



॥५०१॥ बिराद पर्व ॥  
 सुनकर उत्तर बोला कि न मैंने जी जीती है और न  
 पुत्र मुझ से परा जय हुये यह यह सब काम कि देव पुत्र  
 ने किया है ॥१॥ मैं भी त हो कर भागा जाता था उसी  
 समय उस देव पुत्र ने जि सका पारीर वज्र के समान  
 न दृष्ट था, श्री पुवान था उसने प्राकर मुझे भा  
 जन से रोका, और मेरे रथ पर बैठ गया ॥२॥ उ  
 सी ने जी जीती है और उसी से कोर बहार कर च  
 ले गये हैं उसी वीर ने यह काम किया है मेरी सा  
 मर्थ नहीं है ॥३॥ दो एण चार्थ कृपा चार्थ प्रपूव  
 त्या मा कर्ण कि कर्ण, और भी आना मी धरः महा  
 रथियों को उसने बाणों के मारे विभ्रव कर दिया  
 ॥४॥ दुर्योधन भयभीत हो कर सिंह से गजराज  
 के तुल्य भागा उससे भागने में देव पुत्र ने क  
 हा तुम भाग कर हस्त ना पुर मैं भी नहीं बच स  
 के हो वहां को ई लुत्तारी को ई रक्षा कर नहीं स  
 का है इससे घृह करो जी तो जी तो पृथ्वी भोजो जी  
 और मर जाओ जी तो स्वर्ग पाओ जी ॥५॥ १॥ यह  
 सुनकर इवह राज मंत्रि और सेना सहित सर्प  
 की भांति स्वास लेता हुआ प्रा और वज्र तुल्य बाण  
 से छोड़ता हुआ लौटा ॥६॥ उस देव कर मेरे से  
 सब डे हो गये, श्री रथों टूट कर पड़े मरन्तु उस  
 पुवान, और सिंह तुल्य देव पुत्र ने हंस कर स



॥४८॥ विराटपर्व ॥ ८ विष्टे  
 वकीवालों से तिर वितर कर दिया और उनके वस्त्र  
 हरलिये और उनको बहुत से वचन भी सुनाये ॥४९॥  
 ११॥ यह सुनकर विराट ने कहा कि मैं यथा स्त्री श्री  
 रघु रवीर देवपुत्र कहाँ है जिसने जो र वों से हमारे ह  
 र ह्येधन को जीता है और तैसी र स्त्री की है मैं उस  
 का दरपान कर के उसकी पूजा करना चाह  
 ती हूँ ॥१२॥ तेरा १३॥ उत्तर देकर बोला कि  
 मा हा राज वह देवपुत्र वही प्रन्तर हुआ न हो गया  
 परन्तु कह गया है कि कल प्रथवा परसे श्री  
 उं गा ॥१४॥ वै ह पा म्या मन जी बोले हेरा राज में  
 जय उक्त प्रकार से वर्ण न किसे हुये और ध  
 ल भैष मे रु के हुये पांडवों को विराट की आ  
 सा से प्रजु न ने वे सब वस्त्र उसकी पुत्री उत्तरा  
 को दे दिये ॥१५॥ उत्तरा उन प्रनेक प्रकार के व  
 डे मोल वाले वस्त्रों को लेकर बहुत प्रसन्न हुई ॥  
 १६॥ इस के बाद हे राजा जय प्रजु न  
 ने बड़ी प्रसन्नता से विराट पुत्र से मंत्र कर के  
 राजा पुष्टि विर के निमित्त जो कर्म करना था  
 उसको विधि वत्त किया ॥१७॥ १८॥ इति श्री  
 भाषा महाभारते विराटपर्वणी सप्त तित मो  
 प्रध्यायः ॥१९॥ इक तर का प्रध्याय ॥ पांड  
 वों को स्नान आदि कर्म करके विरा की सभा



॥५०॥ विराट पर्व ॥  
 मैं जा कर राज्यासन पर बैठ कर ना विराट का वै  
 ठनें का कारन पूछे ना और प्रज्जन को पुच्छि  
 र के गुण न करना ॥ वैराग्याय न जीवो लेहे रा  
 जा जब मे जय इस के पीछे तीसरे दिन पाँचों  
 भाई पाँचों ने मुहुर्त पर व्रत रख कर स्नान  
 किये और देव तब स्नान एा किये ॥१॥ और  
 प्रपन्न को सप्राभर्णों से भूषित कर के पुच्छि  
 र को प्राजे किये छत्र दये पाँचों प्रजित  
 स्थितेन स्त्री महा रथी विराट की सभा में प्रा  
 कर राज्यासनों पर इस प्रकार से बैठ गये मा  
 नों वेदियों पर प्रणिस्था पित है इस के पीछे  
 राजा विराट राजकाज करने के लिये मंत्रियों  
 सहित सभा में प्राया ॥२॥ ४॥ और प्रज्वलि  
 त प्रजित की समान धोखे भाष्य मान पाँचों पा  
 ण्डों को राज्यासन पर स्थित देख कर खड़ा हो  
 गया और एक मुहुर्त देखता रहा उपरान्त को  
 पित हो कर मरुट गएँ से पुक्त इन्द्र की स  
 मान बैठे रुधे कंक हपी पुच्छिर से बोला ॥५॥ ६॥  
 कि हमने तुज को पासे कै कने के लिये प्रपन्न  
 सभा सद्वनायाया प्राज पर किया उपहास  
 है जो तुम प्रपन्न को प्रलंकित कर के राज्यास  
 न पर बैठ गये हो ॥७॥ वैराग्याय न जीवो ले



॥ ४९० ॥ विरार पवे ॥  
 हे राजा जे जे उक्त बात को सुन कर प्रज  
 ने मन्द मुसकरा कर कहा ॥ २ ॥ किहे राजा यह  
 पुरुषोत्तम ब्रह्म एव एतत् सत्त्वा जी यक्षी ल प्रो  
 रद्वत है प्रो र इन्द्र को प्राधे प्रासन पर बैठने के  
 प्रो ज्य है ॥ ९ ॥ इन को प्राय के बल देह धारी धर्म स  
 मज्ज ये जहां तक बुद्धि की गति है उस से भी ये प्रधि  
 कहें मरा क म भी इन का वैरा ही श्रेष्ठ है सब त  
 पों का इन को स्था न जानिये ये नाना प्रकार के प्र  
 स्तो को स्था ता है प्रो र जो कुछ ये जानते हैं उस को  
 तीनों लोक के चर प्रो र प्रचर जीवों में न को ईजा  
 नता है प्रो र न जाने जा ॥ १० ॥ ११ ॥ इन को जो विदि  
 त है वह कि सी देवता प्रसुर म नृप रा दास गंध  
 ज व स कि न्तर प्रो र म हा उरग को भी न ही विदि  
 त है ॥ १२ ॥ इन के गुण में कहां तक प्राय से  
 कहें ये दीर्घ दृष्टि महा तेजस्वी पुर प्रो र दे  
 वा का सियों के प्यारे पांडवों के प्रति रथी य स क  
 करता धर्म तत्पर सब को वषा में रखने वाले ॥  
 १३ ॥ मह र्षि से कुछ कम छ राज र्षि सब लो कों  
 को में विख्यात बलवान् धृति मान् चतुर  
 सत्यवादी प्रो र जितेंद्रि है ॥ १४ ॥ धन प्रादि पद  
 यों के संचय करने में ये इन्द्र प्रो र कुवेर समान  
 हैं प्रो र संसार की रक्षा करने में मनुजी के स  
 द्र प है ॥ १५ ॥ ना म इन को को रव श्रेष्ठ धर्म राज



॥४९९॥ विरार पर्व ॥

पुच्छिदिहें ये महा तेजस्वी प्रौर प्रजा पराप्र  
जह करनैवाले हैं ॥१६॥ संसार में इनकी कीर्ति  
सूर्य की प्रभा के समान प्रौर यथा सूर्य की कि  
र्ति के सदृश दोनों सब स्थानों में प्राच्यदि  
त प्रौर धूम ते हैं प्रौर जब तक ये कुस्देष्टों के  
प्रधिकारी रहे तब तक दया हजारा हाथी प्रौर  
रक हजारा रथ जिनमें कंचन मालाधारी  
श्रेष्ठ घोड़े जुते हुये इनके पीछे चलाने  
रते थे प्रौर मणी प्रौर कुराउ लोधारी  
प्राहसौ सत प्रौर मागध इनकी स्तुति इस  
प्रकार से किया करते थे जैसे कवि दुन्दुभी  
स्तुति किया करते हैं ॥१७॥२१॥ प्रौर कौरव  
रसव राजा किं करों के समान इनकी नित्य उपा  
सना किया करते थे ये कुवेर के समान प्रौर  
रसव राजा देवताओं के सदृश थे इन सूर्य  
स्वामी तेजस्वी ने सब राजाओं को कर का देने  
वाला वैष्णवों की सदृश कर डाला था प्रौर हाथी  
हजार महात्मा स्नातक ज्ञान ए जिनोंने  
ब्रह्मचर्य व्रत को भले प्रकार पूजा किया था  
इनके यहां भोजन करते थे प्रौर बूढ़े प्रना  
यत्न गढ़े प्रौर प्रन्धे मनियों को पुत्र तुल्य



॥४६२॥ विराट्पर्व।

न

लेनकर लगे ते थे प्रौर धर्म युक्त इन्द्रियों के दम  
न प्रौर का धर्म जित वत है ॥२२॥ २५॥ प्रौर वेद ज्ञा  
न एके पालक होकर सत्य वादी है इन्हीं के प्रताप  
से राजा दुर्वोधन कए एकु नी प्रौर अपने गण के  
साथ तप रहा है इन के सब गुण वर्णन ही हो सके  
हैं ॥२६॥ २७॥ इन का धर्म में तत्पर होना प्रौर द  
या करना संसार में विख्यात है प्रथम पृथ्वी न  
ति श्रौष्ठ राजा होने पर ये क्यों कर राज्यासन पर  
बैठने के योग्य नहीं हैं ॥२८॥ २९॥ इति श्री भाषा  
महाभारते विराट्पर्व एण एक सप्त तित मोऽध्या  
यः ॥१॥ वह तरवा प्रध्यायः उत्तर प्रौर प्रजुन  
का विराट् राजा से पांडुओं को वताना प्रौर विराट् का  
प्रजुन को प्रपनी उत्तरा पुत्री देना प्रौर प्रजुन  
को उसे प्रपने पुत्र के लिये लेना प्रंजीकार कर  
ना ॥ उक्त वार्ता को सुन कर राजा विराट् बोला  
कि जो यह कंक कुली पुत्र को स्वराजा युधिष्ठि  
र को भीमसेन प्रजुन कुल सदेव प्रौर द्रो  
पदी कौन है जब से वे पांडु कुल के राज्य हार क  
र चले गये तब से उन का कुल वताना सुनने  
में नहीं आया ॥१॥ २॥ यह सुन कर प्रजुन ने  
कहा कि हे राजा जो यह वल्लभ भनामी आपका  
की पाक दालाध्य चंद है पक्षी भयानक पराके



॥ ५९३ ॥ विराट्पर्व ॥

भी भी भीमसेन है ॥ ३ ॥ इसने कौधवका ना  
भी राक्षसों को जन्ध्रा मारन पर्वत पर मारा था  
और सौ जन्धरी कना भी दिव्य पद्म द्रोपदी के  
लिये लाया था ॥ ४ ॥ इसी ने दुष्टात्मा की चक्रे  
को मारा है और यही प्राप के अन्तःपुर में  
रीखवा रहा था और हाथियों को मारता था  
और जो प्राप का अपवबन्ध था वह यही नकु  
ल है और प्राप का जो रक्षक यह सहदेव है ये  
दो नौ मारा रही हैं और मारि जाते हैं उत्पन्न है  
॥ ५ ॥ यह दो नौ स्वल्पवान् और अंगार वे मारा  
भरणा हैं मुक्त हैं और मरा स्त्री श्री मृग और सह  
सौ महारथियों में समर्थ है ॥ ६ ॥ और यह क  
मल की तुल्य विना लने व सुन्दरी जिसकी  
कटी रुद्ध है और हास्य मनोहर है और धिक्  
पद्मदी है जिसके कारण से की चक्र मारे जाये  
गे ॥ ७ ॥ और मैं भीमसेन हूँ छोटा और नकुल  
और सहदेव हैं बड़ा प्रजुन ना भी कुंती का पुत्र  
हूँ ॥ ८ ॥ हम लौओं ने जर्म की भांति बड़े सुख  
पूर्वक प्राप के नगर में उपवास किया ॥ ९ ॥  
वैष्णवापन जी बोले है राजा जन्मे जयजव  
जुन ने कंधों को बत दिया तब उत्तर राजा वि



॥४९५॥ विराट पर्व ॥

राट से पांडवों के वर्णन करने में इस प्रकार से कहने  
लगा ॥११॥ किया जो जांबू तद सुवर्ण का सा जो  
रक्षा सी रक्षा सी मनुष्य जिसकी प्रचण्ड राउ वड़ी ना  
सिको सिंह की सी और बड़े लम्बे और रक्त ने  
वह यह कुल राज पुच्छि घिर है ॥१२॥ और यह  
दूसरा जिसके पारी रक्त का वर्ण तथा ये हये सु  
वर्ण का सा है चाल जिसकी चाल जिसकी मत  
बाले हाथी की सी है कन्धे बड़े विस्तीर्ण हैं और भु  
जालम्बी और मोटी हैं यह भीम से न है ॥१३॥  
और इसके पार्व में जो बड़ा बड़ा धनुष धारी  
एवम वर्ण मनुष्य है जिसका पारी राज राज  
को सा सिंह के से उंचे २ कन्धे चाल राज राज  
की और नेत्र कमल के समान बड़े २ हैं यह वी  
र प्रभु न है ॥१४॥ और वेदों में मनुष्य जो प्रा  
पके समीप बैठे हैं न कुल और सह देव हैं ये दो  
नों विष्णु और इन्द्र से कुछ ही न्यून न हैं इन  
की समान नर लोक में कोई रूपवान् और  
सुसील न ही ॥१५॥ और इन दोनों के पार्व  
में जो यह उत्तम सुवर्ण का सा अंगार खने वा  
ली बड़ी प्रकाशमान मूर्ति मान लक्ष्मी औ  
र पार्वती की तुल्य नीले कमल की सी कांति र  
खने वाली और देवताओं की देवी हैं यह दो



॥४६॥ विराट पर्व ॥

पदी है ॥१६॥ और यह प्रजु न पात्रु प्रों का मार  
ने वाला ऐसा है जैसा कि हम जों का मार जों  
बन्धारे सा है जैसा सिंह म जों का मारने वाला  
है ॥१७॥ कौरवों में श्रेष्ठ रथियों को मारता  
हुवा यही रथ समूह में घुम रहा था तो था इस  
ने वडे मत्त हाथी को एक बाण से मारकर गि  
रा दिया कि वह हाथी दांतों के बल पृथ्वी पर गि  
र पड़ा इसी ने कौरवों को जीता है और इसी ने  
जो जीती है ॥१८॥ १९॥ हे पिता इस की पां  
ख की चबूती नि से हारे का न बहरे हो जा  
ये थे और भी ब्रह्म द्रोण क कर्ण और दुर्योधन  
आदि महारथियों को इसी ने जय किया था वह  
सब काम मैं ने नहीं किया था इसी वीर की किश  
हु प्रा है इसी वीर ने मुझे भय भीत भा जाते हुये  
को लौटा लाया था और इसी की भुजा बल से  
मैं जीता हु प्रा फिर प्राप्ता हु ॥२०॥ २१॥ वैशाम  
पापन जो बोले हे राजा जन्मे जय प्रजु न से प्रा  
तिर ख ने काले उत्तर से राजा ने उक्त बात को सु  
न कर कहा ॥२२॥ किस समय के प्रनु सा भर में  
मैं पांखों का प्रिय करना चाहता हु जो तेरी इ



॥५१६॥ विराटपर्व॥  
 अथ हो लीं मैं उत्तरा को प्रजुन को दे दूं ॥२४॥ उत्त  
 र को लोवी ही ते श्रेष्ठ है मेरा भी यही मत है महाभा  
 गपंडित सब प्रकार से मान्य और पूज्य है ॥२५॥ य  
 ह सुन क विराटराजा ने कहा कि प्रय मुझ को भी  
 पात्रों ने पकड़ लिया था भीमसेन ते मुझे छु  
 दया और जो जीती ॥२६॥ सो मुद्र में जोह मा ही ज  
 य है वह इन्हीं का भुजा बल है इससे हम सब को  
 मंत्रियों सहित कुन्ती पुत्रराजा युधिष्ठिर को  
 उसके भाई यों सहित प्रसन्न करना चाहिये का  
 इवधर्मात्मा है ऐसा करने से जो जो कुछ हम लो  
 जो हैं प्रनजाने में कहा गया है वह दामा करे जो  
 २१ ॥२८॥ वैशाम्या यनजी बोले हे राजा जनों ज  
 य उक्त प्रकार से कह कर राजा विराट युधिष्ठि  
 र के समीप चला गया और उसको अपना रा  
 ज्य पुर और कोया समर्पण किया ॥२९॥ और  
 फिर प्रजुन को प्राणों करके सपादकों से मि  
 लने और उनके मस्तक को सूघने का  
 लगा उन के चित्त के दर पा न से राजा विराट  
 र पुन ही ऊ प्रावरण धरो दी देर धी धै उस  
 ने वडी प्रसन्नता से राजा युधिष्ठिर से कहा कि  
 आप सब प्रारब्ध से कुपाल पूर्वक बनवास को  
 पूरा करके यहां प्राये और प्रारब्ध ही से प्रात्र से



॥५१॥ विराटपर्व॥

पञ्चमेऽंशे प्ररहने के नियम को पूरा किया ॥३०॥  
३३॥ मैं प्रपन्न सब राज्य और जो कुछ धन मेरे  
का सहै यह प्रजुन को देता हूँ प्राप्त कर हि  
त हो कर प्रंजीकार कीजिये और प्रजुन उत्त  
रा को जहण करे इसके समान उसके लिये मैं  
योग्य पत्नी नहीं देता हूँ ॥३४॥ ३५॥ यह सु  
न कर राजा पुष्येष्टि ने प्रजुन की और  
देवा तव प्रजुन ने राजा विराट से कहा कि  
राजा मत्स्य और भरत वंशि यों का स  
म्बन्ध बहूत योग्य है मैं प्राप्त पुत्री को प्र  
पन्न पुत्र को प्रर्थ प्रंजीकार करता हूँ ॥३६॥  
३७॥ इति श्री भाषा भट्टा भार्ते विराटपर्वणी  
द्विषाष्टीतमोऽध्यायः ॥१२॥ तिहत्तर का  
अध्याय ॥ अभि मन्त्र और विराट पुत्री उ  
त्तरा का विवाह होना ॥ उक्त बात को सुन कर  
राजा विराट बोला कि हे पांडव श्रेष्ठ तुम मे  
री दी हुई पुत्री को प्रपन्नी भार्या के प्रर्थ कों  
प्रंजीकार नहीं करते हो ॥१॥ प्रजुन ने कहा  
की मैं सदा उसके साथ प्रतः पुर में रहता था था  
वहार का न स्थान पर भी रहने पर पिता की



॥४६८॥ विराट् पर्व ॥

भांति विरवा सरस्वती थी ॥ ३ ॥ जाने और नाच  
ने के कारण से वह मुझ को बहुत मानती थी  
और प्रिय जानती थी और जाने नाचने के स  
मय मुझे प्राचार्य के समान समझती थी ॥ ३ ॥  
मैं उसके साथ एक वर्ष तक प्रतापपुर में रहा  
ससे विवाह करने में घर और बाहर सब को ब  
ड़ी संका हो गी ॥ ४ ॥ मैं शुद्ध जितेन्द्र और संत  
हूँ इस से मैं प्राय की पुत्री को प्रपन्न लिये ग्रहण  
नहीं कर सकता हूँ ॥ ५ ॥ हाँ मुत्र वधू होने में कि  
सी प्रकार की संका नहीं रह गई थी और लोकप्र  
वाद की शुद्धी भी हो जाय गी ॥ ६ ॥ मुझे निध्याम  
वाद और प्रकीर्ति से बड़ा डर लगता है इस से  
प्राय की पुत्री को प्रपन्न पुत्र की वधू करने के वा  
स्ते प्रगीकार करता हूँ ॥ ७ ॥ मेरा अभिमान्युता  
मी पुत्र साक्षात् देव कुमार के समान है और च  
कंधारी वासुदेवजी का धारा भाजता है औ  
र शास्त्र विद्या की निपुणता में प्राद्वितीय  
है वह प्राय की पुत्री के लिये परम योग्य वर है ॥  
८ ॥ यह सुनकर राजा विराट् बोले की तुम  
सौनी और धर्म मेतत्पर हो तुम में यह बात हो  
ना योग्य है ॥ ९ ॥ बटतसे प्रवजो कुचर तुम के



॥५१॥ विराटपर्व ॥

को जय सम जो उसको पण्डित करे तम सा संवन्धी  
पाकर मै ही सब काम नाद द्विपुर्ण हो जी ॥११॥  
वैष्णव मय नजी को लै हे राजा जन्मे जय विराट के  
उक्त प्रकार के कहने से राजा पुष्पि धिर ने प्रजु  
न और राजा विराट की सम्मति से विवाह हो  
ने की प्राप्ति ॥१२॥ इसके पीछे राजा पुष्पि  
धिर और राजा विराट ने सब मित्र और श्री  
कृष्ण के लज्जा के पास दूत भेजे ॥१३॥ प्र  
भिमन् युष्मिन् कर्षा और प्रा नर्त दे वें के नि  
वासी राणाहों को बुलाया और सब से कह  
ला भेजा कि पांडव ते रह वर्ष वन वास व्यतीत  
कर के राजा विराट के नगर में उपस्थित हैं और  
राजा विराट की पुत्री का प्रजु न के पुत्र से विवाह है  
॥१४॥ ॥१५॥ दूतों के पहुँचने पर काशी राज  
और राजा धौव्य जो पुष्पि धिर से प्रीति रखते थे  
वैर कर प्रहो हणी सेना लेकर वहां प्राये  
और महाबली राजा द्रुपद भी रक प्रहो हणी  
सेना सहित प्राया और उसके साथ द्रोपदी  
के वीर पुत्र और प्रमदा जित पिता वराही और  
सब धारि यों में प्रहो हणी दुर्ध्व ध्वज ध्वज जो व  
ही लेकर तावडे दक्षिण देने वाले वेद



॥४२॥ विराटपर्व॥

और प्रव भरत ख स्नान से सम्पन्न हो कर व  
हे पूर रवीर ये वे प्राये राजा विराटने उन सब  
को सेना और वाहनों सहित प्रादर पूर्वक भोज  
ना दी सब प्रकार से पूजा उपरांत राजा प्रे के ज  
हां वे हैं प्रा ने पर श्री कृष्ण और बल देवजी  
भी प्राये और कृतवर्मा घु घुधान सात्यकि अ  
नो धृष्टी प्रकुर सांव और निपाठ आदि सब  
पूर रवीर प्रमि मन्त्र और उसकी माता को प्रप  
ने साथ ले कर प्राये और श्री कृष्ण जी के साथ  
दण सहज हाथी सत प्रपु तरथ राक प्रबु दण  
प्रजा भी घोड़े एक खर्व घादे और भोज और अं  
धक वंशी बड़े २ हाथी ॥१६॥ २५॥ प्राये ये श्री कृ  
ष्ण जी ने सब पांडु नो को पथक २ दास २ दासी  
और नाना प्रकार के रत्न और वस्त्र दे कर भेंट  
दिया और प्रमि युका विधि वर विवाह लो  
ने लगा और पांडु नो के स्थापित किये रु पे पांडु  
भेरी जो मुख और डंवर ताभी प्रनेक प्रकार  
के राजान खस्य के भवन में वजने लगे ॥२६॥  
२७॥ कि र राजा विराटने प्रनेक प्रकार के मृ  
गों के मांस और प्रज्ज व कान और उत्तम सु  
रा और प्रनेक प्रकार के पान व ना कर त्रिव



॥४॥ २३॥ विराटपर्व॥  
यि कमनीय ॥ श्रीपुत्र तननकि पोर  
को पायने दे पाउदार ॥ कुं जलाल भा. वा. कि  
मो पर्व विराट मज्जाद ॥







55836 (b)



